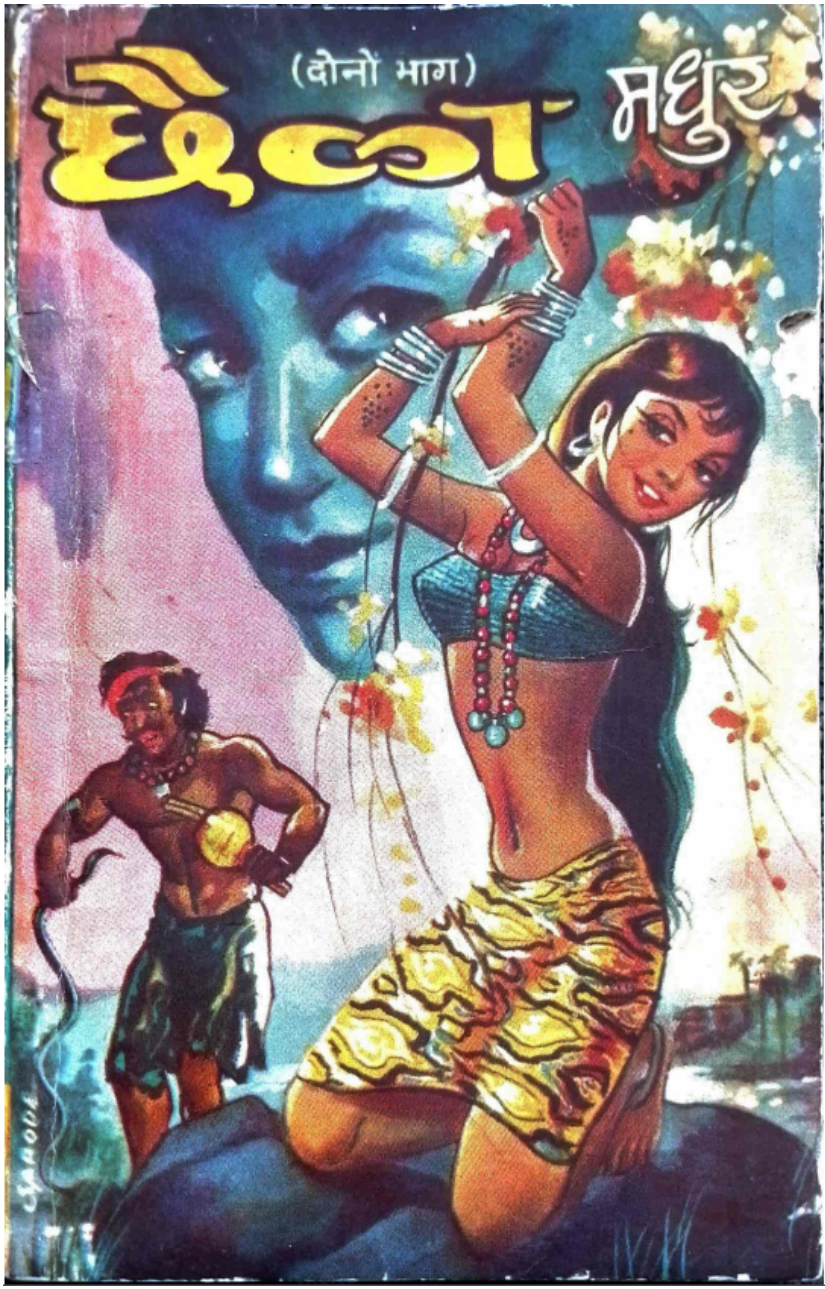
(दोनों भाग)
चैलेंज
मधुर

"मुझे सतायें मत सरकार ! मैना मर जायगी मेरे बिना....सुना आपने ? पुकार रही है वह.... अभी आया मैना.... मुझे जाने दीजिए हजूर !...."

कुंवर मैना को चूमता जा रहा था । थोड़ी देर बाद आश्वस्त हुआ तो बोला- "हजुर ! आपका लाख-लाख शुकिया.... मुझे मैना मिल गई..... आपको बहुत तकलीफ उठानी पड़ी मेरी वजह से.... गरीब परदेसी आपका अहसान भूलेगा नहीं...."

[परदेसी का तीसरा, चौथा भाग]

मूल्य - पाँच रुपया

छैला

मधुर

भारत पॉकेट बुक्स
प्रकाशक-
भारत पाकेट बुक्स
हीरापुरा, जालपादेवी रोड वाराणसी-२२१००१

वितरक -
चिनगारी प्रकाशन
सीके० ६४/७ जालपादेवी रोड पो० बा० ७८, वाराणसी-२२।

फोन नं० ६६१५८

मुद्रक -
विजय प्रकाश प्रेस
गोला दीनानाथ, जालपादेवी
वाराणसी-२२१००१

उपन्यास-- 'छैला
--- मधुर

@ शांती कुशवाहा

जिन्दगी एक सफर है और मौत एक मञ्जिल ! सफर में जिन्दगी है, मंजिल पर मौत ! मैना सफर तय करके अपनी मंजिल पर पहुँच गई थी।

टिकोरा का सफर अभी जारी था. जीवन की आँधी उड़ाये लिए जा रही थी उसे। परदेसी से मैना को छीनकर क्या बचा पाया वह ? मैना का निर्जीव शरीर ही तो। अजगर की तरह फुफकारने वाले सँपेरे का फन झुक गया था। उसके भीतर एक आग पैदा हो रही थी, जिसकी लपटें बाहर निकलने की राह खोज रही थीं। उस भयानक सँपेरे का दिल दग्ध था। उसके चारों ओर निराशा का अन्धकार फैल गया था। अभी मैना जी उठे तो उसे ताकत मिल जाय, फिर उसे जय में कितनी देर लगेगी ? टिकोरा तो टिकोरा है। वह मैना की मौत से लड़ेगा । अपनी मैना को जीवन देकर साबित करेगा कि कितनी ताकत है उसके पास । धीरे-धीरे दुनिया पर रात ने काली चादर डाल दी। किन्तु टिकोरा चलता रहा चुपचाप । अभी उसकी मंजिल दूर है और उसे अभी जीना भी है।

मैना को जिलाने के लिए... परदेसी को जलाने के लिए ।

'छैला ! कोमल कण्ठ से मधुर आवाज निकली मगर बिस्तर पर लेटा युवक चुप ही रहा। जैसे उसने सुना ही नहीं कुछ । 'परदेसी बाबू बोलो न~ !' युवती की पतली-पतली शोख उगलियां युवक के चमकीले, घुघराले बालों से खेलने लगीं ।

युवक उस मादक स्पर्श से चौंक उठा ।

'डर गये बाबू !.... यह तो मेरी उँगलियाँ है। साँप नहीं जो तुम्हें डॅस लेंगी... बोलो नऽ... कुछ बोलो भी ऊपर क्या देख रहे

"ओ जी ! जरा नीचे भी देखो, कब से मैं तुम्हारी एक नजर के लिये बेचैन बैठी हूँ सूनी छत में भला क्या है? तनिक इधर तो देखो।' और उसने युवक का मुख अपनी बोर घुसा लिया ।

और वह युवक, शहरी छैला ?

एकटक देखता रहा उसके रूप-यौवन को ।

'दैया रे !' चेहरे पर आश्चर्य की लकीर खींचकर वह बोली-'टकटकी लगाये क्या देख रहे हो जी ! ऐसे मत देखा करो, मुझे कैसा तो लगने लगता है... ऐसे तो साँप भी नहीं देखते ।'

'तो मैं साँप हूं....' युवक बोला ।

'नहीं जी, तुम तो मेरे दिल के सपने हो।' कहते-कहते शर्म से दोहरी हो गई वह युवती ।

'मैं तुम्हारा सपना हूँ?' युवक ने पुनः पूछा ।

'हो !' संक्षिप्त-सा उत्तर मिला। चेहरा लाल हो उठा। मुलाब का हुस्न उसके कपोलों पर छा गया ।

शहरी छैला ने उसे अपने समीप खींच लिया ।

'हटो जी, तुम तो बड़े वो हो !' उसकी वाणी में जैसे कोयल ने अपनी कूक भर दी हो ऐसा लगा ।

'वो क्या ??

'चोर ।'

'तुम्हारा क्या चुराया है मैंने ?...' युवक ने कहा ।

'मेरा दिल जो चुरा लिया है तुमने मेरा करार, आँखों नींद, सभी कुछ तो चुरा ली है। देखो, मेरा कलेजा कैसा धक्-धक् कर रहा है। सिर्फ यही भर तो छोड़ दिया है तुमने ।'

और उसने युवक के हाथ को अपने धड़कते कलेजे से चिपका लिया, अपने दिल की आवाज सुनाने के लिए ।

यौवन के स्पर्श से युवक सुध-बुध खो बैठा ।

'मेरे रसिया !' युवती ने पुकारा प्यार से और हौले से दबाया युवक के हाथ को जो उसके कलेजे पर पड़ा था- 'तुम्हें देखती हूँ तो देखती ही रह जाती हूँ। तुमने मुझ पर कैसा जादू कर दिया है ? बोलो नऽ... तुम्हारी चुष्पी तो जान ही ले लेती है।'

युवक जंगल की युवती के कलेजे पर पड़े अपने हाथ को हटाने लगा तो-

'इसे यहीं रहने दो छैला ! बड़ा सुख मिल रहा है...'

उसका अस्त-व्यस्त भावों वाला मुखड़ा धीरे-धीरे परदेसी के हसीन चेहरे की ओर झुकने लगा। वह उन्मत्त-सी हो उठी थी । उसके अंग-अंग में नशा सिहरन बनकर पैठ गया था। उसकी गरम-गरम साँस, छैला के मस्तक पर लोटने लगी। युवक अपने को संभाल नहीं सका और उसे अपनी बाहों में भर लिया । सपनों की दुनिया से जब युवक वास्तविक संसार में आया तो उसने देखा-आँखों पर बोझिल पलकों की चादर डाले 'वह' उसके कलेजे पर लेटी थी। उसने उसके सर को आहिस्ते से हटाना चाहा, तभी - युवती के कांपते होठों से लड़खड़ाती आवाज फूट पड़ी- 'मैं नागिन नहीं हैं जो डरते हो मैं तो चम्पक- लता हूँ, तुम्हारे गोरे शरीर से लिपटकर शोभा ही बढ़ा दूँगी !....'

'हटो भी तङ्ग मत करो !'

'जरा-सी राहत दे दोगे तो छोटे नहीं हो जाओगे ।'

'हो गया नऽ ! छोड़ो भी अब... आह । देखो मेरा जख्म -उफ !' कराह उठा वह !

'अरी मोरी माई ! मैं तो भूल ही गई थी. अभी दवा बना-कर लाई... नहीं तो चिकोरा मुझ पर सारा गुस्सा उतारने लगेगा !' बोली युवती और उठ खड़ी हुई। दौड़कर बाहर से हरी-हरी पत्तियाँ और पीले रङ्ग की कोई जड़ी ला पत्थर पर घिसने लगी ।

दवा तैयार हो गई तो दौड़ी-दौड़ी आई परदेसी के पास । पैर और हाथ के

जख्म पर दवा लगाने लगी ।

दबा लगाकर पुनः अपने छैला की बगल में आ बैठी वह ।

X X X X X

'लगता है कि खा ही जायगा। वाह बेटा वाह ! अजगर के भी बाप निकले। चमकी! आओ मेरी रानी ! अरी कहाँ हो छबीली ! जरा आकर तो देख, तेरे लिए गेहुँअन घर लाया हूँ। तेरी चोली

७

फट गई है, अब बना ले नई-नई।---- अबे, ताव मत दिला नहीं तो गर्दन मरोड़ दूंगा तो टें हो जायगा। ------चमकी !'

आवाज सुन हड़बड़ा कर उठ बैठी वह । 'आई मेरे राजा ...' और हवा के झोंके की तरह बाकर वह चिकोरा से लिपट गई- 'किसकी गर्दन तोड़ रहे हो ?'

'अरे, जरा दूर हट! नागिन बनकर घेरा क्या डालती है.... हाँ, अब ठीक है... देख, इस बेईमान की गर्दन दबा रहा था। शैतान ने दौड़ा मारा मुझे...'

'तुम तो मरे नहीं हो। तुम तो यहाँ हो, मेरे पास !'

'तुम्हें देखकर जी गया रानी ?...' बोला चिकोरा हाथ के साँप को संभालते हुए - 'छैला कहाँ है गोरी !'

'यह है !' चिकोरा की ओर इशारा किया चमकी ने और हँस पड़ी ही-ही-ही !

'मैं तो हूँ ही... मगर वह शीतल बाबू कहाँ है ?'

'वह तो दिन भर लेटा ही है मेरे रसिया ! कुछ कहती हूँ, तो कहता है... तुम्ही मनाओ जाकर उसे तुम्हारा कहा मानेगा... पढ़े-पड़े बदन में जंग भी नहीं लगती है उसके ।'

'चल छबीली, देखें जरा छैले को...' बोला चिकोरा ।

चिकोरा चमकी की अदाओं पर मोहित हो उठा था ।

'चलो न ?' कमर पर हजार-हजार बल डालकर बोली वह।
चिकोरा घर में घुसा । चमकी भी उसके पीछे हो ली। सूरज डूबते ही, उजेला पहाड़ी के उस पार विशाल गर्भ में विलीन हो गया ! शाम के धुंधलके ने भयानक जङ्गल के बीच में बसे उस छोटे से गाँव को अपने अङ्क में भर लिया ।

फूस से बने घर में घुसकर चमकी ने साँप के चर्बी की मशाल जलाई और बोली चिकोरा से- 'यह रहा तुम्हारा परदेसी मेहमान !.... दिन भर अजगर की तरह पसरा रहता है !'

'अच्छा, अब चुप रह चमकी।' बोला चिकोरा बैठते हुए-'परदेसी बाबू ! यहाँ कोई तकलीफ हो तो कहना। हम गरीब हैं

खातिरदारी न हो सके तो भूल-चूक क्षमा कर देता। हम सँपेरे हैं नऽ ! साँपों के साथ खेलते-खेलते साँप बन गये हैं।'

चिकारा परदेसी की तरफ देखकर कहता रहा- 'फर्क है | तो डॅसने और बचाने का ! साँप डॅसकर लोगों की जान लेता है और हम जहर उतार कर मौत को जिन्दगी देते हैं चमकी खूब सेवा करेगी तुम्हारा... अभी-अभी महीने ही भर तो हुए हाथ पीला किए... जब से यह मेरी जिन्दगी में आई है, झोपड़ी चमक उठी है।' कहते-कहते चिकोरा ने चमकी की ओर देखा ।

'हटो जी, तुम बड़े वैसे हो !' तीर चलाती हुई बोली वह । थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो गये तो चमकी को यह शान्ति खटक गई । बोली- 'छैला !'

'अरी अलबेली ! कई बार कहा तुमसे - बाबू का नाम शीतल है, शीतल !' चिकोरा ने कहा !

'मैं क्या जानूं शीतल-पीतल !... मैं तो छैला हो कहूंगी... हाँ ! मुँह बिचकाती और हाथ मटकाती बोली वह ।

'देखो न बाबू ! किसी की नहीं सुनती यह !'

'उई !' चौंक पड़ा शीतल। उसकी दृष्टि चिकोरा के हाथ पर पड़ी। उसके हाथ में साँप लिपटा हुआ था ।

'डर गये बाबू ! मैंने कहा न हम सँपेरे हैं... साँपों से खेलना तो हमारा पेशा ही है। इसका खेल देखोगे बाबू !... लो अपने हाथ में, लो नऽ- काटेगा नहीं, मन्तर से बंधा है।'

शीतल में साँप छूने का साहस नहीं था। वह करवट बदल कर लेट रहा। चमकी ने साँप शीतल के ऊपर डाल दिया ।

भय से घबड़ाकर उछल पड़ा शीतल और भागकर चिकोरा के पीछे खड़ा हो गया। उसे डर से पत्ते की तरह काँपता देखकर हँस पड़ी चमकी ! बोली- बड़े डरपोक हो बाबू !'

'इसे मना कर दो चिकोरा भाई ! मुझे भय लगता है- मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा मेरी तबीयत ठीक हो गई है, मैं अपने शहर जाऊंगा' हाँ।' एक ही साँस में कह गया शीतल ।

वह यहाँ के लोगों का भयानक जीवन-क्रम देखकर चकित था। उसके जाने का नाम सुनते ही चमकी की हँसी ने उदासी का जामा पहन लिया। बोली- 'अभी तो तुम्हारा घाव भी ठीक नहीं हुआ है छैला ! जल्दीबाजी में काम बिगड़ जाता है- क्यों रसिया !' चमकी ने होठों पर हँसी चमकाई, अपने चेहरे पर छाई उदासी दूर करने के लिए ।

'हाँ !' चिकोरा ने कहा, स्निग्ध दृष्टि से शीतल की ओर देखा उसने- 'चले जाना बाबू, जरा राहत तो हासिल कर लो... हम तुम्हें खुद ही पहुंचा देंगे रास्ता खतरनाक है, अजगरों और जङ्गली जानवरों से भरा हुआ !'

'इसी जङ्गल में एक शहरी बाबू अजगर की चपेट में आ गया था- अजगर उसे लील गया और....' चमकी बोली ।

'ओर ?...' शीतल चमकी की बात पूरी होने के पहले ही बोल उठा । आगे की घटना सुनने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो उठा वह । जब से वह यहाँ

आया है उसे विचित्र-विचित्र बातें देखने-सुनने को मिल रही हैं।

'और अगर मेरे गाँव के टिकोरा ने अजगर को पकड़ न लिया होता तो... बड़ा हरामी है जी टिकोरा ।' चमक-चमक कर कह रही थी चमकी ।

'और तब क्या हुआ ?'

बीच-बीच में शीतल प्रश्न पर प्रश्न करता जा रहा था। वह समझ रहा था कि चमकी कहानी कहकर उसे चकमा दे रही है, उसे राह की भयानकता. दिखा कर रोकना चाहती है।

'अरे जाने भी दो बाबू! इसके फेर में मत पड़ो, नहीं तो इसकी बातें सुनते-सुनते हार जाओगे लेकिन पार नहीं पाओगे !' बीच ही में बोल पड़ा चिकोरा- 'जरा पानी-वाची पिलाओ रानी !... है कुछ ?'

'अजगर का हलुआ और करैत का अचार... खाओगे ?'

'हां-हाँ, ला जो भो हो....' दिन भर का थका चिकोरा झुझला

१०

कर बोला । बिजली की तेजी से चमकी ने चिकोरा के सामने सब कुछ लाकर रख दिया ।

चिकोरा खाने लगा, खाते-खाते ही बोला 'बाबू को भी दे !'

'मैं यह सब नहीं खाता ।' शीतल बोल उठा ।

'साँप से डरनेवाला इसे खायेगा भला ? क्या अनहोनी बोलते हो । इसे तो जङ्गली बेर और शरीफा ला दो !' बोली चमकी -'मैना का परदेसी कितना भला था जी। जो खाने को दो वह चट कर जाता था । पूरा सँपेरा बन गया था वह तो...'

'चुप भी रह चमकी ! वह तो सब कुछ भूल बैठा था बेचारा ! उसे तो अपना घर-बार, नाम-पता भी नहीं मालूम था ।' कहते हुए हाथ में साँप उठा लिया चिकोरा ने और खड़ा हो गया- 'मैं तो चला रानी ! जरा शीतल बाबू को गाँव की हवा खिला देना !' कहता तेजी से बाहर निकल गया वह ।

शीतल और चमकी अकेले रह गये।

'छैला !' कोयल कूकी किन्तु खामोश रहा शीतल ।

'मेरे भोले परदेसी ! नाराज हो गये तुम ?' चमकी के गले में करुणा आ बैठी- 'दिल दुख गया हो तो बोलो, मैं नहीं बोलूंगी !' कहती हुई वह शीतल के पैरों पर गिर पड़ी ।

एक कोने में साँप की चर्बी का दीवट जल रहा था। उसकी लौ पर कुछ परवाने जान कुर्बान करने को लपक रहे थे ।

'इधर देखो मेरे छैला ! अपनी चमकी को देखो तो सही, कुछ तो खबर लो बाबू !' उसने अपना सर शीतल के पैरों पर पटक दिया । शीतल पिघल पड़ा। आहिस्ते से उसने चमकी के चाँद से मुख को ऊपर उठाया। चाँद

आँसुओं से भींग रहा था ।

नारी के आँसुओं में जमाने को बहाने की ताकत होती है। उसकी आाह में पत्थर को भी मोम बना देने की शक्ति होती है.... और शीतल तो एक इन्सान था!... अपने को रोक नहीं पाया ।

और चमकी के एहसान भी तो कम नहीं हैं उस पर । इसके पति चिकोरा ने ही तो उसकी जान बचाई थी, नहीं तो उस

११

खूंखार शेर ने दुनिया से उसका नामोनिशान ही मिटा दिया होता उस दिन ।

'चमकी !'

'छैला !' शीतल की आवाज सुनकर हर्ष से गद्गद् हो उठी चमकी। उसके गालों पर लेटी आँसुओं की रेखा हँस पड़ी ।

'मुझे माफ कर दो रसिया ! सचमुच तुम बड़े बेदर्द हो । दिल्लगी का बुरा नहीं माना करते अब नहीं सानोगे नऽ ? बोलो न मेरे छलिया !'

'कभी नहीं !' छोटा-सा उत्तर दिया शीतल ने मुस्कुराकर ।

'तुम चले जाओगे छैला ? जाना नहीं, नहीं तो सच भानो, अपना सर पटक कर चूर-चूर कर लूंगी....' उसकी आवाज फिर गीली हो उठी थी, बरसाती हवा की तरह ।

'अभी तो नहीं हो जा रहा हूँ। जाऊँगा तो तुम्हें भी ले चलूगा । चलोगी नऽ ?'

'तुम कहो और मैं ना कर दूँ... भला कभी ऐसा हो सकता है ?' खुशी से उछल-सी पड़ी चमकी ।

मन ही मन वह शहर के सपने देखने लगी ।

बोली- 'शहर में तो बहुत अच्छी-अच्छी चीजें होती होंगी बाबू ? मैना का परदेसी भी तो वहीं रहता है। शैतान टिकोरा भी वहीं गया है उसके पीछे साँप लेकर भूत जैसा है जो टिकोरा ! अगर रात को देख लो तो नींद न आये, सुबह देख लो तो खाना भी न नसीब हो...' एक ही साँस में कह गई चमकी ।

'टिकोरा, मैना , परदेसी ये सब कौन हैं? क्या मतलब है। तुम्हारा चमकी ?' प्रश्नभरी दृष्टि शीतल ने चमकी पर डाली ।

'देखो जी ! मेरा नाम न लिया करो। नहीं तो मैं कुछ नहीं बताऊँगी - हाँ !' शोखी से बोली वह उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें विचित्र तरीके से नाच कर रस उड़ेलने लगीं।

'तो क्या कहूँ तुम्हें ?

'मैं क्या जानूँ ?...'

'रानी !' शीतल ने कहा ।

चमकी ने दोनों हाथों से अपना मुँह बैंक लिया।

'अब बताओ, है ना?' शीतल उत्सुक थी।

'चुप भी रहो छैला ! कई रात सो नहीं पाई तुम्हारे कारण । पीछे बता दूँगो, अभी सो लेने दो...' और वह आँखों पर पलकों की चादर ढाँपे पड़ी रही ।

दोनों चुप हुए तो वातावरण भी शान्त हो गया । चमकी के सौन्दर्य को अस्त-व्यस्त देखकर अवाक् रह गया शीतल ।

साँप के चमड़े की चोली, कसर में अजगर की खाल का एक लहँगा और उस पर मोर-पङ्ख की छटा। इसके सिवा शरीर का सारा भाग खुला । अर्ध नग्न -सौन्दर्य अपनी सादकता बिखेर रहा था । दीवार के काँपते प्रकाश में काली काली लटों के बीच उसका मुखड़ा चाँद जैसा चमक रहा था। पतले-पतले मासूम होठों पर मुस्कान की एक रेखा खिंच गई थी। आँखों के इशारे... जो वक्त बेवक्त तीर बन कर शीतल के कलेजे को चाक कर दिया करते थे। पलकों को ओट में कैद थे।

शीतल की गोद में सोलह साल की अलस जवानी, नींद की चादर ताने खामोश पड़ी थी। तभी ढोलक, नगाड़े और सहुवर का सम्मिलित स्वर वातावरण में उठने लगा। सङ्गीत की मधुर ध्वनि जब शीतल के कानों के पर्दे से टकराई तो. विभोर हो उठा वह । दीन-दुनिया की सुध बिसार कर

उस संगीत के स्वरों का रसपान करने लगा ।

उसकी उँगलियाँ चमकी के चमकीले बालों से खेलने लगीं । शीतल के स्पर्श से सजग हो उठी चमकी और विह्वल भी । पल भर के लिए पलकों के पट खुले फिर बंद हो गये। उसने सोये-सोये ही एक घातक अंगड़ाई ली। उसका वक्ष, जिसमें लाखों अरमान और हजारों धड़कने कैद थीं, शीतल के कलेजे से भिड़ गया । शीतल अवश-सा हो उठा ।

उसने चमकी के शरीर को बाहों में भर लिया ।

१३

'दैया रे ! सोने भी तो दो छैला। ऐसा दबाते हो कि हड्डी-पसली. हाय राम !.... एक हो गई। ऐसे तो अजगर भी नहीं दबाता होगा ।' निद्रालु स्वर था चमकी का।

'चमकी ?....' शीतल का लड़खड़ाया स्वर था ।

दो जवान दिलों की आग धधक रही थी और उठ रही भी प्रणय की लपटें ।

खौफनाक जङ्गल के एक गाँव में सौन्दर्य की एक प्रतिमा को देखकर शीतल का मन चलायमान हो उठा था। आज सात दिन ही तो हुए हैं उसे यहाँ आये, मगर उसे लगता है जैसे वह युगों से यहाँ बस रहा है। सात ही दिनों में काफी घुल-मिल गये थे दोनों । शीतल बैठा-बैठा जङ्गल के बीते दिनों की याद ताजी 'करने लगा। उसके जङ्गल के इतिहास का प्रथम

नायक चिकोरा ही था। चिकोरा का चेहरा जब शीतल की आँखों में आया तो वह भयभीत हो उठा। बड़ी-बड़ी मूछें, साँवला चेहरा, बड़े-बड़े घुघराले बाल, डरा देनेवाली खौफनाक लाल-लाल आँखे और उसका भयानक अट्टहास ।

अगर उसे 'यह' सब मालूम हो गया तो वह शीतल को जिन्दा नहीं छोड़ेगा। वैसे तो उसके पास दिल है और वह उससे सहानुभूति भी रखता है। उसकी जान बचायी है उसने और उसी के साथ विश्वासघात कर रहा है शीतल साँपों से खेलने वाला चिकोरा साँप बन कर डॅस लेगा उसे और फिर वह साँस भी नहीं ले सकेगा !

परिणाम आँखों के आगे आया तो काँप उठा वह ।

'चुप क्यों हो गये !' चमकी की आवाज काँप रही थी-'तुम तो ढीले होते जा रहे हों... जैसे मन्तर से बँधा साँप !'

चुप रहा शीतल, वह दूसरी दुनिया में विचरण कर रहा था। वह बोला नहीं तो झकझोर डाला चमकी ने ।

'ऐं !' सपने से जागकर वह बोल उठा ।

'ऐं-बैं क्या ?... तुम्हीं ने तो मुझे जगाया और तुम्हीं सो गए।

मेरी आँखों की नींद चुराकर । तुम्हें हो क्या जाता है बाबू ?'

'घर की याद आ गई थी चमकी ! जी नहीं लग रहा है।'

'मेरा घर तुम्हें पसन्द नहीं ?'

'है तो !'

'तो फिर ?' चमकी उठकर बैल गई और बिहारने लगी शीतल के उदासी से धूमिल चेहरे को। बहुवर और ढोलक की ध्वनि अभी भी दूर-दूर तक फैल रही थी ।

'चलो छैला; नाच-गाना देख आयें, तुम्हारा जी भी बहल जायगा ।' प्यार से ओत-प्रोत स्वर था चमकी का ।

'सोने दो मुझे, नींद आ रही है। तुम भी सो जाओ नऽ ई'

'मुझे नींद नहीं आती, सिर्फ सपने आते हैं और सपनों में आते हो तुम... उठो चलो !' उसने शीतल की बाँह पकड़कर उसे खड़ा किया और खींचती हुई बाहर ले आई ।

महुवर की तान और भी सुरीली हो गई थी। नगाड़ों की धमक भी तीव्र हो उठी थी। हँसिया जैसा चाँद पश्चिमाकाश की ढाल पर लुढ़क गया था। चाँदनी ढल रही थी। मस्त सँपेरे नाचने-गाने में मशगूल थे। इमली का वही पुरावा दरख्त पड़ा था । सँपेरिनें पिला रही थीं और संपेरे झूम-झूम कर पी रहे थे । मर्द गा रहे थे, औरतें नाच रही थीं ।

चिकोरा भी एक पेड़ की जड़ से उठेंग कर बैठा था। बैठा बैठा नाच देख रहा और पी रहा था। उसके गले में साँप लिपटा था और वह नाचनेवालियों

की दिल फरेब अदाओं को देख रहा था । उसकी नस-नस शराब के नशे से भींग कर काँप रही थी। उस पर मदहोशी छाने लगी थी ।

'आ न !' चिकोरा ने एक ओर देखकर किसी को कहा ।

लो आ गई राजा !'

'अरे, तू चमकी !... आ गई?.... तू भी पिला दे... पिला न । अरे, परदेसी बाबू ! आओ बैठो' शीतल पर उसकी नजर पड़ी तो उसने उसको भी बैठने के लिए कहा ।

१९

पास बैठी सॅपेरिनें हट गई, जो कुछ देर पहले से चिकोरा को पिला-पिलाकर रिझा रही थीं। थोड़ी देर बाद-

अच्छा अलबेले, अब तो चली मैं....'

'अरें बैठ भी !'

'जरा तुम्हारे शीतल बाबू को हवा खिला लाऊँ...'

चिकोरा के कुछ बोलने के पूर्व शीतल का हाथ पकड़ चमकी भाग गई, जैसे सुगन्ध का हाथ पकड़ पवन भाग जाता है। अँधेरी पगडण्डी पर चल रहे थे दोनों। पतली पगडण्डी पर चलते-चलते कभी-कभी दोनों के शरीर आपस में टकरा जाते तो सिहरन की एक लहर उनके अवयवों में लहरा उठती ।

'ठीक से चलो चमकी ! गिर जाओगी तो चोट लग जायगी तुम्हें !' शीतल ने कहा ।

'लगने दो !' कहा चमकी ने ।

तभी शीतल चीखकर एक तरफ कूद पड़ा ।

'क्या हुआ जी परदेसी ?'

'साँप... साँप पर मेरा पाँव पड़ गया...' डरे कर बोला शीतल- 'कहाँ ले चल रही हो चमकी ?'

'साँप से भरे जंगल को देखकर शीतल काँप उठा ।

'डर रहे हो ? तो आओ इस चट्टान पर बैठें ।'

दोनों एक चट्टान की छाती पर जम गये ।

'वह क्या है चमकी !' नीरवता भंग करते हुए पूछा शीतल ने, एक ओर इङ्गित करते हुए ।

'वह ! वह तो खण्डहर है, पहले महल था जी, सुन्दर-सा !!

अच्छा !' आश्चर्य फूट पड़ा शीतल के स्वर में ।

' 'हाँ, इसी में से तो मैना अपने परदेसी के साथ शहर भाग गई। भीतर-भीतर रास्ता है, जो शहर के पास जाकर खत्म होता है-एक नदी के किनारे

।' कह रही थी चमकी- 'मरदूद टिकोरा भी साँप लेकर पीछे-पीछे गया है बाबू, किसी की जान लेने में तो पहलवान है.... दैया रे!' चमकी की आँखों में जब टिकोरा की

१६

खूंखार आकृति आ गई तो स्वर बौर काँप उठा । उसका बदन रोमां चित त हो उठा ।

'क्या हुआ ?' घबराई चमकी से शीतल ने पूछा ।

'प्यार !' संयत होकर बोली चमकी और हँसने लगी ।

'चमकी, चलो अब चलें... देखो, चाँद भी सोने जा रहा है!' शीतल सुनसान देखकर घबड़ा रहा था ।

मगर तारे तो जाग रहे हैं। इन्हें भी छुप जाने दो छैला !' और चमकी शीतल की बोव में सर रखकर लेट गई !

कुछ पल ठहर कर फिर बोली- 'एक बात बताओ लैला ! यह चाँद डूब क्यों जाता है और तारे क्यों छुप जाते हैं ?'

'फिर कभी बताऊँगा चमकी, अभी मालूम नहीं ?' चमकी के ऊटपटांग प्रश्नों से झुंझला उठा था शीतल ।

वह गगन की ओर देख रहा था। एक सघन वृक्ष के पीछे चाँद ऊँध रहा था । चमकी ने पूछा- ऊपर क्या देख रहे हो छैला ! जरा नीचे भी तो देखो !'

शीतल की आँखें चाँद तारों की दुनियाँ से लौटकर पुनः जङ्गल में लौट आई। बोला- 'चलो घर चलें। रात काफी गुजर चुकी है...'

'नहीं छैला, यह रात कभी नहीं गुजरेगी। देखो, अभी तक लोग नाच-गा रहे हैं।' बोली वह ।

किन्तु शीतल अत्यधिक विकल हो उठा था। वह उठ कर खड़ा हो गया और चमकी को चट्टान पर से खींचा, लोट चलने के लिए । वह कटी पतंग की नाईं झटके के साथ शीतळ के कलेजे पर आ गिरी ।

भला ऐसे भी. खींचता है कोई कि...'

कहते-कहते चमकी रुक गई, जैसे बीच ही में उसकी जबाव को लकवा मार गया हो। उसकी दृष्टि खण्डहर की ओर चली गई थी और वहाँ जो कुछ उसने देखा उसे देखकर देखती ही रह गई थी। उसका मुँह अँधेरे में भी पीला पड़ गया था ।

१७

शीतल ने भी देखा, पूछा- 'यह हरी-सी रोशनी कैसी है चमकी ।... अरे वह तो कोई - देखो वह तो...'

'चुप !' कहा चमकी ने और शीतल को खींचती हुई जल्दी-जल्दी डग भरने लगी । वह पहले शीतल के साथ, इमली के पेड़ के नीचे गई, जहाँ सँपेरे मस्त होकर गा-बजा रहे थे ।

'कहाँ उड़ गई थी हवा बनकर !' चिकोरा था ।

'बताती हूँ रसिया !' और चमकी चिकोरा के कान में मुँह लगाकर कुछ कहने लगी ।

'अच्छा !' विस्मित होकर बोला चिकोरा- 'अभी तो उसी की बातें हो रही थीं।'

'मैं शीतल बाबू को लेकर घर जा रही हूं... देखो जी, उसके पास मत जाना... मेरी कसम है तुम्हें !'

'क्या हुया चमकी ! तुम घबरा क्यों उठी हो... कौन था वह ?' शीतल ने पूछा ।

'चुप भी रहो जो घर पर बताऊँगी ।'

शीतल ने फिर नहीं पूछा। रात्रि की नीरवता में दोनों चुप-चाप चले जा रहे थे। चिकोरा ने सभी को एकत्र किया। चमकी ने जो जानकारी दी थी उसे उसने सबको बता दी। सँपेरों में एक अजीब हलचल मच गई ।

'चलो देखा जाय तब !' सँपेरों ने निर्णय किया ।

'अभी चलो।' चिकोरा बोला ।

संपेरों का उत्सुक गिरोह खण्डहर की ओर बढ़ा ।

'वह देखो।' एक धीरे से बोळ उठा ।

'हाँ-हाँ, वही है !' दूसरे ने साथ दिया ।

सभी जल्दी जल्दी हरी रोशनी की ओर बढ़े। तभी-

'कौन है? खबरदार, आगे बढ़ने की कोशिश मत करना नहीं तो साँप खींच मारूँगा... परदेसी से हार गया, मगर तुम लोग नहीं हरा सकते... मैं तुम लोगों का उस्ताद हूँ - समझे ?" चिल्ला उठा रोशनी बाळा व्यक्ति !

उसके हाथ पर साँप की मणि चमक रही थी। गले में विक-राल साँप माला बना था । दूसरे हाथ से वह किती युवती को अपने कन्धे पर लादकर सहारा दें रहा था। वह चिल्लाया-'हट जाओ सामने से... छोड़ दो रास्ता नहीं तो टिकोरा से बढ़-कर कोई खतरनाक न होगा ---कहता वह आगे बढ़ा ।

सँपेरे रास्ता छोड़कर हट गये। उसी में से एक साहस करके टिकोरा की बगल में आ गया। बोला- 'कहाँ गये थे टिकोरा !'

'टिकोरा, हुँ...!' दुहराया टिकोरा ने और उसके बढ़ते पाँव स्थिर हो गये। उसने उसकी ओर आग्नेय नेत्रों से देखा ।

'उस्ताद कहना नहीं आता तुम्हें ! मुझे सिखाना पड़ेगा ?'

'माफ करो उस्ताद... मैं केवल मैना और परदेसी के बारे में पूछना चाहता था-'

'क्यों ?' चीख पड़ा टिकोरा । परदेसी का नाम सुनकर उसकी बुझती-सी आग पुनः भड़क उठी 'जी रहा है परदेसी और मर गई है मैना ! टिकोरा हारा और परदेसी जीता, समझे, मगर तुम अब नहीं बच सकते, नहीं जीत सकते... तुमको मैने अपना भेद बता दिया। जा तू भी...हा-हा-हा।'

पैशाचिक अट्टहास करके टिकोरा ने गले के साँप को हाथ में ले लिया। मणि की रोशनी साँप के पेट में समा गई और तब... और तब हाथ का साँप उस पर फेंका टिकोरा ने और...

और अन्धकार में सपेरे के गले से एक चीख निकली ।

'हा हा हा!' अट्टहास कर टिकोरा और आगे बढ़ा । सभी भय से तितर-बितर हो गये ।

पागल-सा टिकोरा मैना की लाश लिए चला जा रहा था अपने घर की ओर । आशा पर ही इन्सान जीता है। टिकोरा भी अपने हाहाकार करते अन्तर में एक आशा दबाये मैना को लेकर गांव आया था। फिर से उसे जिला देना चाहता था।

उसकी चाल की तेजी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी । 'देख मैना ! यह तेरा घर है। मेरे उस्ताद का घर...'

यहां रुक गया वह । घर की ओर देखते हुए बोला-उस्ताद ! आज मैं जीत गया हूँ। टिकोरा उस्ताद बन गया है तुम्हारी दया से नहीं... हा हा

हा!'

वहां से वह अपने घर आया। भीतर बँधेरा था। मन्तर पढ़ते ही साँप ने मणि उगल दी। मणि की रोशनी से घर का अँधेरा भाग गया । मैना की लाश चारपाई पर धीरे से लिटादी उसने । बोला-'अब सो जा मैना रानी ! बहुत तड़पाया है तुमने टिकोरा को । आज यह सँपेरा तुम्हारे परदेसी से हार गया। खबरदार फिर भागने की कोशिश न करना ।

और विक्षिप्त-सा बह भी मैना की बगल में गिर पड़ा । कलेजे से लगा लिया मैना की लाश को । क्रोध से जलती रहने वाली टिकोरा की आँखों में उस क्षण जाने कहाँ से बादल आ घिरे । भयानक पुरुष के आँसू कितने धयानक होते हैं, कोई देखता तो कहता । साँप ने मणि अपने मुँह में रख की ।

अन्धकार फिर छा गया ।

****

'कविता !' कुँवर अचलनारायण ने धीमी आवाज में पुकारा ।
'हूँ !' कु'वरानी का जवाब था एक अक्षर का । सर झुकाये खड़ी थी वह कुँवर की बगल में ।

'हूँ क्या ! जरा इधर तो देखो मैंने तुम्हारा इतना बड़ा-सा नाम लेकर पुकारा और तुमने सिर्फ 'हूँ" भर किया ।

'तो क्या कहूँ ? आपका नाम तो ले नहीं सकती !' कविता का सर ऊपर

उठ गया। मदभरे नयन कुंवर को देखने लगे। होठों पर मंन्द-मन्द मुस्कान खेलने लगी ।

'मेरा नाम लेने से तुम्हारा कुछ बिगड़ जायगा !' कुँवर कुंवरानी को अपलक देख रहा था ।

'नहीं तो... मगर हिन्दू स्त्रीयाँ कभी पत्ति का नाम लेती हैं क्या ?' प्रश्न किया कविता ने ।

वह खामोशी से कुँवरानी को देख रहा था।

२०

'बोलिए नः ? चुप क्यों हो गये ? अरे, आप तो इस तरह देख रहे हैं जैसे कभी देखा ही न हो...' कुवरानी बोली ।

'तुमने मुझे देखने का मौका ही कहाँ दिया कुवरानी !... तुम्हें जिन्दगी भर भी देखूंगा तो शायद ही समझ पाऊँगा, तुम कविता जो हो।'

"आप तो सचमुच कविता करने लगे ।'

'तुम ऐसी हो ही कुबरानी... कुँवर बोला- 'मेरी कविता मेरे मरने के बाद समझ सकोगी ।'

'मरने की बात मत कीजिये।' कविता का स्वर भींग गया । उसकी आँखों से अनायास ही आँसू निकल पड़े।

'पगली, यह क्या ?'

मगर कुवरानी क्यों सुनने लगी ? बोली- 'ऐसा मत कहिए। सालों बाद तो आप मिले हैं। आपके वियोग में किस प्रकार कलेजा पत्थर करके जी रही थी... उफ् !... मासूम ललित को छाती से लगाकर रात-दिन की दूरी एक कर रही थी। ललित के भोले-पत्त में आपकी सूरत की छाया देखती थी तो दिल में दर्द एठ खड़ा होता था। ललित को देखकर सन्तोष तो होता मगर शांति नहीं मिल पाती। खिले फूल की याद को भला कोमल फली कैसे मिटा सकती है। पत्ति और पुत्र में यही तो अन्तर होता है। पति जवानी का सम्बल है और पुत्र बुढ़ापे का सहारा....' कविता की आँखों में बीते दिन मचल उठे थे। हृदय की पीर नयन का तीर बन पलकों पर छा गयी थी ।

'कविता ! पागल मत बनो, मैंने तो मजाक किया था सिर्फ !' कुवर ने कुवरानी को खींचकर अपने वक्ष से दबा लिया ।

'पागल ही तो हूँ। नारी पागल ही तो होती है। पागलपन में नारी मिट जाती है कुवर साहब ! अपने पुरुष को बचाने के लिए मैना भी नारी थी.... देखा नहीं आपने ?'

उपदेश पर उतर आई थी कुवरानी 'निरीह मैना ! आपको जीवन देकर स्वयं अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठी। नारी की पीड़ा दुनिया का कोई पुरुष नहीं समझ सकता ।'

'अगर यों हीँ रोज अपनी मधुर वाणी से मधु लुटाया करोगी तो एक न एक दिन नारी को समझ ही लूंगा।' हँसते-हँसते बोला अचल - 'अब तक तो नारी को आँसू से भींगा-भींगा ही पाया। मैंने ! जरा अपने हसीन चेहरे को आईने के सामने रखकर ते देखो। आँसू बन गई हो एकदम ।'

'नारी और आँसू एक ही चीज होती है और जमाने की गर्दिश में पड़कर वह भी ज्वालामुखी बन जाती है...'

'लो ! अब तो तुम भी कविता करने लगी।'

'बात तो मजाक में उड़ाने की कोशिश न करें कुँवर साहब।

'मैं दिल्लगी नहीं करता, दिल-लगी करता हूँ...' बोल कुँवर । उसने कुवरानी को अपने अङ्क में भर लिया-'अब बस भी करो। नारी के विषय में काफी वकालत हो गई। और कहोगी तो बयान भूल आऊँगा.... अभी नादान हूँ नऽ, क्यों ?'

'आपसे अधिक तो मेरा ललित ही समझदार है।'

'ललित तुम्हारा ही नहीं.... उसके निर्माण में अपना हाथ भी कम नहीं था !' शरारत से हँसकर कहा कुवर ने ।

- 'वही सही... मगर आप तो... बड़े वैसे हैं आप, शर्म भी नही आती बोलते हुए' कविता कुँवर की बात सुनकर लाल हो उठी थी, सबेरे की ऊषा की भाँति ।

ऐसे ही रात बीत गई , सबेरा आया, बिलकुल नया सबेरा। आज

राजमहल में चारों ओर खुशी खिलखिला रही थी। कोई जश्न मनाया जाने वाला था ।

'बहूरानी !' किसी ने बाहर से पुकारा ।

कविता अचल के आलिङ्गन से बिछुड़ कर अलग बैठ गई। अपनी अस्त-व्यस्त भावभंगिमा संयत करने लगी ।

'तुम लोग चुप बैठे हो ?' कहती हुई रानी साहिबा ने वह प्रवेश किया । कविता उठकर खड़ी हो गई 'कैसी तबीयत है। अचल ! ठीक तो है नऽ ।' रानी साहिबा कुँवर के पास आ गई

२२

बोलीं- 'बहू ! जरा देख तो बाहर लोग क्या कर रहे हैं ?'

कुँवरानी चली गई तो रानी साहिबा अचल के पास आकर इधर-उधर की बातें करने लगीं। बात की बात में बीते दिन जाग उठे । रानी साहिबा ने अचल को कोसा भी-

'मुझे क्षमा कर दीजिये माताजी ! जो कुछ हुआ मेरी असाव धानी से । चन्चल का इसमें क्या कसूर, वह तो नादान है...'

'जो कुछ होता था वह तो हो चुका। अब तो सावधानी बरत !' रानी साहिबा बोलीं- 'तुमसे तो कहीं अच्छी बहू है।'

'तभी तो मेरे लिए ला दिया है आपने उसको...'

उसी समय कुँवरानी बाहर से आ गयी और अचल ने उसकी ओर देखकर कहा- 'क्यों कविता !'

सुनकर झेंप गई वह । बोली- 'माताजी ! वारिस शहर जा रहा है... उसे रुपये दे दीजिये

'सकुची-सिमटी खड़ी थी बेचारी कुबरानी। कुवर की आंखों से उसकी आंखें टकराई तो झिझक सी गई।

'ललित आपके कमरे में है माताजी !' झिझक मिटाने के लिए बोली कुबरानी ।

'हाँ ! जा उसे नये-नये कपड़े पहना दे। आज उसके बाप का जन्म-दिन है नऽ, जरा वह भी देखे। कितना भाग्यवान है ललित मेरा कि अपने बाप को भी जन्म लेते देख लिया उसने !' बोलीं रानी साहिबा ।

कुवरानी जाने लगी तो रोक लिया उन्होंने । बोलीं- 'ले यह ताली और रुपया निकाल कर वारिस को दे दे !'

ताली लेकर कविता नौ-दो ग्यारह हो गई।

'बैठिये न माताजी ! आप खड़ी क्यों हैं ?'

'उस दिन लाख मना किया, लेकिन शिकार को चले ही गये तुस !' बैठती

हुई बोलीं रानी साहिबा 'तुम्हारा भी क्या कसूर था। यह भगवान की मरजी थी और चञ्चल की चाल.... होनी थी सो हो के रही... बड़ा शैतान निकला यह चञ्चल !'

२३

कहते-कहते रानी साहिबा के अन्तर की ऊसक गले तथ आकर काँप उठी, जिसे कुवर ने अच्छी तरह लक्ष्य किया पर बोला नहीं कुछ । रानी साहिबा कुछ देर बाद चली गयीं ।

शाम को राजमहल लाल-पीले और नीले-हरे कागजों से शोभायमान हो उठा था... हर तरफ से फूलों की भींती-भींनी मदहोश करने वाली खुशबू बड़-उड़कर बिखर रही थी। बिजली के छोटे-छोटे रंग-बिरंगे बल्ब ऐसे लग रहे थे जैसे तारे छींट दिये सये हों ! पूरा महल मुस्करा रहा था ।

कुँवरानी ललित को गोद में लिए देख रही थी वह हसीन मंजर ! आज उसके शरीर पर रेशम के कीमती वस्त्र थे। हाथों में सोने की चूड़ियाँ चमक रही थीं। आज सुहागिन जो हो गई थी तो क्यों नहीं दुल्हन बनती। कुवरानी कुवर के समीप आई तो उसने देखा कुवर दुल्हा बनकर बैठा था। कविता की गोद में ललित को देखकर वह बोला- 'आ बेता, मेला ललित... लकली का घोला लेगा ?' दोनों हाथ फैलाकर कहा कुवर ने तुतलाने का अभिनय करते हुए ।

ललित ने उत्तर में मां की ओर देखा ।

'जाओ....जाओ न .' कविता ने ललित से कहा.

मां की ममता छोड़कर ललित पिता के प्यार में चला आया। कुँवर ने जोरों से उसे कलेजे से लगा लिया। बाहर खुशी के बाजे बज उठे । मधुर आवाज से वातावरण गूंजरित हो उठा ।

'मां बाजा ।' ललित बाजा सुनने के लिए मचल उठा ।

'चलो, मैं तुम्हें दिखाऊँ बाजा।' कुवर कहते हुए उठ खड़ा हुआ। कुंवरानी भी खड़ी हो गईं।

बाहर भीड़ उमड़ पड़ी थी अपने राजा को देखने के लिए, और उस भीड़ के सागर को रोकने के लिए वफादार नौकर वारिस अपनी लम्बी-चौड़ी काया लिए बाँध बनकर खड़ा था, सदर गेट पर। वह लोगों को समझा रहा था और मेहमानखाने का रास्ता बता रहा था ।

२४

'क्यों भाई । तुम्हारा मालिक अजगर के पेट से निकल आया... अनहोनी हो गई।'

'वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है। यह तो खुदा की मिहरबानी है, मौत का शिकार होकर भी हमारे आका सही-सलामत वापिस आ गये। जरा-सी खरोंच तक नहीं आई।' हँसता हुआ बोला वारिस ।

'मारने वाले से बचानेवाला बड़ा होता है भैया !'

'खुदा की कसम, तुमने सवा लाख की बात कह दी।' वारिस ने अपनी

निगाहें आससान की ओर उठाई। अल्लाह का शुक्रिया अदा करने के लिए ।

सभी अपने राजा के दर्शन कर वापस लौट गये। रानी साहिबा ने कंगालों को मुक्त हस्त से दान दिया। फिर कुवर और कुवरानी को आशीर्वाद देकर तीनों महलों का निरीक्षण करने चल पड़ीं। फाटक पर आईं। वारिस को हाथ में बन्दूक लिए खड़ा पाया उन्होंने- 'अरे, तू अभी तक यहीं है, खाना खाया ? जा आराम कर ले, गुलशन इन्तजार करती होगी ।'

'आपकी मेहरबानी ही वारिस का पेट भरने के लिए बाकी है रानी जी ! खुदा कसम ! आज तो कुवर साहब ने वो मिठाइयाँ खिला दीं हुजूर कि वाह... फिकर न करें, गुलशन अपने चुनमुन के साथ हँसती खेलती होगी...'

रानी साहिबा पलट कर चन्चल के महल की ओर मुड़ीं। वारिस भी साथ चल पड़ा। चन्चल अभी तक जाग रहा था। वह कुवर की तस्वीर देख रहा था। फूलों की माला थी उस पर ।

'अब आई है अकल ।' रानी जी ने देखकर कहा ।

'अकलमम्द भैया जो आ गये माँ !... अब तुम्हारा चन्चल समझदारी की दुस बन गया है।' हँसते हुए बोला चन्चल ।

'समझदारी की दुम ! खानदान के रीति-रिवाज का भी ख्याल है कुछ ? जा पहले बड़े कुवर का पैर छू के आ ।'

वह तो पहले ही कर चुका माँ!'

२५

'क्या कह रहा था अपने भैया की तस्वीर से ?'

'कह रहा था..... अब मैं सुधर गया हूँ भैया !' अभिनय करता हुआ। कहने लगा चंचल - 'माँ से कह देना। मेरे शरीर पर इतने कोड़े लगवा चुकी हैं कि अब कोई जगह ऐसी बाकी नहीं रह गई जहाँ अपना गुस्सा उतार सकें... बस !'

'शैतान !' बोळी हँसकर रानी साहिबा और उन्होंने चंचल की पीठ पर एक चपत जमाई रानी साहिबा उसकी चंचलता देखकर आज ही खुलकर हँसी थीं। उन्हें प्रसन्नता थी कि उनका आवारा बेटा सुधर गया है। भला पीतल को सोना होता देख, किसे खुशी नहीं होगी। बाहर जाती हुई माँ के चरण चंचल ने छुए और अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया ।

माँ-बेटे उलझ कर अलग हो गये और इधर-पति पत्नि का संवाद आरम्भ हुआ । 'क्या सोच रही हो कविता ?' अचल ने पूछा ।

'टिकोरा और मैना के बारे में' एक ठण्ढी साँस खींचकर बोली वह 'वह त्यागमयी प्रेम की प्रतिमा। कितना प्यार करती थी आपको....' कहते-कहते रुक गई कुबरानी। थोड़ा रुककर फिर कहने लगी- 'अपना जीवन खोकर उसने आपको जिन्दगी दी और आप सब कुछ पाकर भूल ही बैठे उसे ।'

'मेरी समझ में कुछ नहीं आता है कविता... तुम्हारी बात कहानी जैसी लगती है। अजगर की चपेट में आते ही मैं होशो-हवास खो बैठा था और जब बेहोशी दूर हुई तो टिकोरा और मैना को देखकर जान भी न सका कि वे किस देश के हैं, और मैं किस देश का । इसमें भला मेरा क्या कसूर ?'

थोड़ी देर बाद वह पुनः बोला- 'कविता ।'

मगर कविता मौन रही। कुवरानी की आँखों में मैना की मनोहर छाया नाच रही थी। उसके अमर त्याग के विषय में सोचकर विचलित हो उठती थी वह ।

'कविता तुम रो रही हो ? तुम्हारे साथ इतने दिन गुजर गये

किन्तु तुम्हें रोते नहीं देखा था कभी - आज यह क्यों ?'

'आपसे कुछ भी तो नहीं छिपाया है अब तक ?' कविता ने साड़ी के छोर से बहते आँसुओं को पोंछा, फिर बोली- 'पत्नी-पति का अधिकार और अपना कत्र्तव्य जानती हूँ ओर...'

'और कुछ नहीं... पहले इन आँसुओं की कहानी तो कहो... क्यों टूट पड़े थे ये तारे आँखों के आकाश से ?'

'आंसू तो बेवफा होते हैं, इनकी कहानी क्या ?'

चेहरे पर हँसी छा गई। मुस्कान की एक रेखा होंठों पर लोट गई कुँवरानी

के ।

'हँसी की एक रेखा गम की हजारों रेखाओं को नहीं काट सकती। कुछ छिपाने की कोशिश मत करो, साफ-साफ कहो, क्यों रो पड़ी थी तुम ?'

'तो सुन ही लीजिये !' कहने लगी कविता 'मैना ने मेरे सुहाग को अमर किया, मेरे जीवन-दीप को जलाया, मेरे सुनसान हृदय को आबाद किया। मगर उसे क्या मिला, मौत ही तो...' कहते-कहते उसके गले में करुणा आ बैठी। टिकोरा की याद से कांप उठो वह । जैसे उसे सांप सूंघ गया हो ।

'जाने दो कविता, बीते दिनों की स्मृति शूल होती है...' कुंवर ने कविता का हाथ अपने हाथों में ले लिया ।

लेकिन वह कहती ही गई 'मैं उस देवी का चरण भी नहीं छू सकी और टिकोरा मौत बनकर ले भागा उसे पता नहीं कहां ? कितना जालिम था वह शैतान !'

'टिकोरा कौन था ?' कुंवर ने पूछा ।

'मैना का प्रेमी ! किन्तु मैना तुम्हें चाहती थी। इसीलिए टिकोरा तुम्हारी जान का भूखा हो गया था। उसी ने तुम्हें अज-गर के पेट से निकाला था और तुम्हें मारने के किए साँप भी उसी ने छोड़ा था ।' *

'अजीब किस्सा है ?'

'हां... मैना को हासिल करना चाहता था टिकोरा, चाहे जैसे भी... और वह उसे मिली भी, मगर एक लाश के रूप में। वह तुम्हारे पास खाली पिंजड़ा

भी नहीं देखना चाहता था। ओह । उसकी वह आवाज- 'परदेसी बाबू! आज तुम्हारे दरवाजे से हार कर जा रहा हूँ। मैना मेरी है। तुम इसे नहीं पा सकते....' कितनी दृड़ता थी उसके स्वर में। सचमुच आप मैना को नहीं पा सके, पा नहीं सकते आप....'

सोच कर विचलित हो उठी कविता। वह लेट गई बिस्तर पर और लेटे-लेटे वरदान देने वाली देवी की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने लगी भगवान से ।

'कविता ।'

'हूँ ।' सो नहीं सकी थी वह। आँखें मूंदे पड़ी थी केवळ ।

'अब सो जाओ। जो हो गया सो हो गया।' कहकर कुबर ने 'वेडस्वीच' आफ कर दिया ।

कुबर करवट बदल कर सो गया किन्तु कुवरानी अंधेरे में करवट बदलती रही। जरा भी आँख लगती तो पलकों की छाया में सपने जाग पड़ते और मैना की मुस्कुरानी मोहिनी सूरत साथने आ कहने लगती- 'परदेसी को जान दी है मैंने सरकार ! इसे संभाल कर रखमा, मेरा परदेसी बड़ा मासूम है, फूल की चोट भी बरदास्त नहीं कर सकता....' आज कुवर उसके समक्ष उसका पति हो नहीं, मैना की सौंपी अमानत भी है।

आकाश की सफेदी पर ऊषा की गुलाबी छाने लगी। संसार के सुनहले सपने टूट गये। लोगों की आँखों की नींद आकाश का तारा बन गई ।

'वारिस ?'

'हजूर ।' कविता का स्वर कानों में पहुँचा और वारिस हाथ जोड़े उपस्थित हो गया ।

'जाकर डाक्टर साहब को बुला लायो...'

थोड़ी ही देर में आँधी की तरह डाक्टर साहब को लेकर

* देखिये पराया का अन्तिम परिच्छेद ।

२८

हाजिर हो गया वह। कुबर के पैरों की पट्टी बदली गई, जहां से मुंह लगाकर मैना ने जहर चूसा था ।

***

सुबह की मदहोश हवा सोये गाँव को गुदगुदाने लगी । गाँव के आगोश में सोये लोग रात के सपनों को संवारने लगे ।

टिकोरा अब भी सो रहा था बेखबर, मैना को कलेजे से लगाये.... हफ्तों से मैना के पीछे जगा टिकोरा आज चैन की नींद सो रहा था । दरवाजे न जाने कब का जमाने की गर्दिश से टूट चुका था । विच्छित दरवाजे के रास्ते गरम सूरज की तीखी किरणें टिकोरा के बदन को आहिस्ता-आहिस्ता

सहला रही थीं। थोड़ी ही देर में गर्मी पाकर वह जाग पड़ा। उठने पर सबसे पहले उसकी नजर मैना पर पड़ी। अँगड़ाई ली उस ने, शान्ति की एक लम्बी साँस खींचकर वह खड़ा हो गया ।

"मैना !... मेरी रानी !' कहते-कहते फिर बैठ नया टिकोरा मैदा की बगल में। मैना चुप रही ।

'मैना ! आज हार गया हूँ मैं! तुमसे हार गया है टिकोरा ! आज टिकोरा की ताकत तुम्हें नहीं बाँध सकती..." बोला टिकोरा असंयत स्वर में मगर... मगर अभी लड़ूंगा मैं... अभी लड़ूंगा तुम्हारी मौत से !' एक-ब-एक कठोर हो गया टिकोरा । चट्टान -सा दृढ़ हो उठा। आँखों में चमक सी आ गई।

'कब तक तुम मौत से मुहब्बत करोगी ! देखेगा टिकोरा । तुम्हें अपनी बना कर ही छोड़ूंगा !' !' और अपनी भुजाओं में उठा लिया उसको - 'जय उस्ताद !' अनजाने में वह बोल गया ।

और तब उस्ताद फेरई की आकृति उसकी आँखों में जाग पड़ी । चेहरे पर व्यङ्गपूर्ण हँसी फैल गई ।

'उस्ताद !.....आज रहते तुम तो देखते, टिकोरा किसकी कृपा से उस्ताद बना है। मैना भी मेरे पास है तुमसे भी ऊपर उठ गया है ढिकोरा ।' वह बुदबुदा उठा ।

टिकोरा को किसी ने उस्ताद नहीं माना है, लेकिन वह अपने से ही सारे गाँव का उस्ताद बना है! किसी की हिम्मत नहीं कि जरा भी टिकोरा से

आँखें मिला सके। सभी उसके डर से थर-थर काँप रहे हैं। सांप का जहर उतार सकते हैं गांव वाले मगर टिकोरा की बातों का असर जो उनके दिलों में भय बनकर उतर गया है, उसे वे दूर नहीं कर सकते। रात में ही आया टिकोरा और एक को सुरधाम भेज दिया। समूचे गांव में सनसनी फैल गई है, जैसे एक बार अजगर के पेट से परदेसी के निकलने पर फैली थी।

टिकोरा मैना को उठाये जंगल की तरफ चला। इस समय टिकोरा के चेहरे पर क्रूरता के बजाय विषाद की रेखाएँ उभरी थीं। आंखें भीगी थीं पर नीची नहीं। अङ्ग अङ्ग से वही पुरानी अकड़ झांक रहा थी। थोड़ी ही देर में हांफता हुआ एक ऊंची चट्टान को चोटी पर जा पहुँचा वह। दूसरी तरफ पहाड़ का। उतार लेटा था। नीचे पहाड़ी नदी कल-कल कर बह रही थी। ढाल पर धीरे-धीरे उतरने लगा टिकोरा। नदी के पास पहुंचकर उसने मैना को एक साफ-सुथरी शिला पर लिटा दिया, तभी... एक झाड़ी में खड़-खड़ की आवाज हुई। उसने पीछे पलटकर देखा । किसी को देखकर बोल उठा --"कौन है?'
मगर तब तक 'कोई' छिप गया। टिकोरा ने अधिक ध्यान नहीं दिया उधर ।

'कैसा हसीन मञ्जर है।' अपने आप बोला टिकोरा और फिर- 'मैना, जरा अपनी आंखें खोलकर तो देखो...'

मैना ने आंखें नहीं खोळी, उसकी आंखें नहीं खुलीं तो टिकोरा रो पड़ा। थोड़ी देर बाद उसने मैना को गोद में उठाया। उसके शरीर से लिपटे सांप के चमड़े को उतारा। बेजान जिस्म की खूबसूरती कुछ देर निहारता रहा। फिर नदी में मैना की लाश को नहलाया... खुद भी नहाया ।

शीतल जल ने उसके थके शरीर में प्राण भर दिए । मैना को फिर उन्हीं

वस्त्रों में लपेट लिया उसने ।

फिर जमीन पर पालथी मारकर बैठ गया, आंखें बन्द कर

लीं। उसके भयानक होठों में कम्पन होने लगा। हाथों में हरकत हुई। चुटकी में धूल लेकर दक्षिण दिशा में फेंका उसने । यह क्रिया कुछ देर तक चलती रही। दूसरी, तीसरी, चौथी बार भी धूल लेकर दक्षिण की तरफ फेंका उसने। उसके होठों का कम्पन रह-रह कर तेज हो रहा था। उसने धूल की पांचवीं चुटकी भी दक्षिण दिशा की ओर फेंकी ।

और पांचवीं चुटकी का फेंकना था कि कोई चीज उड़ती, हनहनाती उसके आगे आकर गिर पड़ी। उसे टिकोरा ने अपने हाथों में उठा लिया और सहलाने लगा ।

'फों !' हाथ की चीज फुत्कार उठी। सांप था वह, विक-राल ! सांथ की आंखों में देखते हुए मन्तर पढ़ रहा था टिकोरा । उस झाड़ी से, जिधर से खड़खड़ाहट की आवाज आई थी। चार आंखें टिकोरा की गतिविधि देख रही थीं। टिकोरा इस बात से पूर्णतया अनभिज्ञ था । एकाएक बह उठ खड़ा हुआ और मैना को कन्धे पर लादकर गांव की ओर चल पड़ा ।

टिकोरा के चले जाने के बाद झाड़ी की आंखें आदमी के रूप में बाहर निकल आई। दोनों व्यक्तियों में जाने क्या-क्या बातें हुईं और वे उधर ही चल पड़े, जिधर अभी-अभी टिकोरा गया था। एक मर्द था और एक थी औरत ।

जब से टिकोरा गांव में आया है तब से उसकी खबर लेने कोई नहीं आया। गांव भर टिकोरा के खिलाफ था। बच्चे-बूढ़े और गांव के पंच भी नाराज थे उससे। उस्ताद की मौत से टिकोरा कैसे पूज्य हो सकता था. उसने एक उस्ताद को ही नहीं, कितनों को हो मारा था। चमकू और लजारों * का हत्यारा भी वही था। रात उसने एक सपेरे को भी मारा था। इतना ही नहीं, मैना का अपहरण भी उसने किया था। गांव के सँपेरे धिमानी के घर जुटे थे। धिमानी! पंचों में से एक बुजुर्ग सँपेरा ।

'अब क्या होगा बाबा ?' एक सँपेरा था ।

* चमकू और लजारी कौन थे ? 'परदेसी' देखिये ।

'होगा क्या । वही होगा जो अजगर के चपेट में आ जाने से होता है।' सफेद भौहों को ऊपर उठाकर बोला धिमानी ।

"टिकोरा से बदला लेना होगा। उसने उस्ताद की जान ली और अपने मन से उस्ताद बन बैठा है। बाबा ! उसकी परीक्षा लो, हम भी तैयार हैं, जो जीतेगा वही सरदार बनेगा।' दूसरा सँपेरा था वह ।

चुपचाप सर नीचा किए सोचता रहा धिमानी । बूढ़े चेहरे की झुरियों पर चिन्ता के चिह्न थे ।

'मैना का क्या होगा बाबा!' यह चिकोरा था। टिकोर के खिलाफ वह भी आया था- 'अगर ऐसे ही वह गांव की बहू बेटियों को जबरदस्ती लूटने लगेगा तो इज्जत रास्ते की धूल बन कर रह जायगी। बाहर निकलना

मुश्किल हो जायगा ।'

गांव के सभी सॅपेरे मौजूद थे वहां । धिमानी ने सुना और इस बार भी उसकी चुप्पी भंग न हो पाई।

**

'तारा तोड़ने के लिए आकाश पर चढ़ना ही होगा। जिसे उस्ताद बनने की हसरत है मैदान में उतरे ?' चिकोरा कहता जा रहा था- 'सांप छोड़ा जाय जो जीते, बाजी उसकी...' फिर उसने चारो तरफ देखा और अपनी जगह बैठ गया ।

चिकोरा के बैठते ही संपेरों में काना-फूसी होने लगी। सन्नाटा फुसफुसाहट में परिवर्तित हो गया। धिमानी भी अब तक चुप था। सभी के चले जाने बाद धिमानी गम्भीर होकर ठण्डे दिल से विचारने लगा। टिकोरा में गुण और करतब दोनों हैं मगर है बदमाश ! जरा-सा अपने को सुधार ले तो उस्ताद फेरई से कम नहीं। सारी विद्या तो सिखा दी है उस्ताद ने उसे ।

इधर सभी टिकोरा से युद्ध करना चाहते थे और टिकोरा ! वह जानता था कि सांप के विष से इन्सान इतनी जल्दी मर नहीं सकता... मरता नहीं। और उसे यह भी मालूम है कि मैना के ऊपर उस्ताद वाले सांप का जहर चढ़ा है जिसे दूर करने की क्षमता स्वयं उस्ताद में नहीं थी। मणि वाले सांप का जहर था।

आग जल रही थी; धुआँ उठ रहा था। कमरा बेसौसम ही सावन की काली घटाओं से आच्छादित हो उठा था। चारपाई पर मैना लेटी थी। पास ही भूला-भूला टिकोरा आखें मूंदे बैठा था। उसके होंठ बुदबुदा रहे थे। वह हाथों से आग में किसी प्रकार का भस्म छोड़े जा रहा था। उससे एक तीव्र गन्ध निकल रही थी। विषैला धुआँ जब-जब टिकोरा की नाक में घुसता वह अपनी नाक बन्द कर लेता। थोड़ी-थोड़ी देर पर वह रुक जाता और अपनी क्रिया का प्रभाव मैना के ऊपर देखने लगता ।

'नहीं बोलेगी मैना ?' टिकोरा के अन्तर की करुणा गले पर दर्द का रूप धारण कर फूट पड़ी- 'मेरी रानी ! तुम्हें बोलना ही होगा आज तो...'

अपनी सारी ताकत लगाकर मन्त्र पढ़ने लगा टिकोरा । उसने उस्ताद के बताये सभी मन्त्रों को दुहरा डाला मगर मैना हिली तक नहीं। किसी जड़ी का पीला बुरादा लेकर उसने जलती आग में डाला। रंग-बिरंगी लपटें उठकर विलुप्त हो गयीं ।

थोड़ी देर बाद उसी बुरादे को लेकर साँप के तेल में मिलाया और मैना के शरीर पर मालिश करने लगा। लाख दवा करके हार गया टिकोरा असर नहीं हुआ । उसके मन्त्र का, उसकी दवाओं का, कुछ भी असर नहीं हुआ , तो पागल बन गया। पास पड़े पत्थर को उठाकर अपने सर पर दे मारा। उसके चेहरे पर अजीब बेबसी व्याप्त थी ।

बदहवास बैठे, टिकोरा के चेहरे पर आशा की एक किरण जल उठी। वह उठ खड़ा हुआ और और दरवाजे की ओर दौड़ पड़ा । चरवाजे पर किसी व्यक्ति से टकराकर ठहर गया ।

'तुम !' संभल कर संयत स्वर में टिकोरा ने पूछा ।

'पहिचान नहीं सके ?'

'खुद को भूलने वाला, तुम्हें क्या पहचानेगा चिकोरा !'

'जरा अपने को याद करो नहीं तो बरबाद हो जाओगे।' चेहरे पर घुणा थी चिकोरा के ।

३३

`उसके भावों को पढ़कर जल उठा टिकोरा।
क्रोधित हो बोला- 'चिकोरा !' आगे नहीं बोल सका टिकोरा । उसके आगे मैना की आकृति नाच उठी और तब उसका ख्याल आया ।

'जरा कायदे से बोल टिकोरा ।'

'टिकोरा नहीं... उस्ताद कहो... देखते हो यह साँप !' विक-राल मणिधर को गले से उतारते हुए बोला टिकोरा-'यह उस्ताद का साँप है। इसे भूलै तो नहीं ही होगे ?'

'तुम्हें किसने उस्ताद बनाया ?...' प्रश्न था चिकोरा का ।

'किसी की किरपा से नहीं बना, इतना ही जान लो, बखत नहीं है, नहीं तो बता कर ही जाता...' कहता हुआ टिकोरा जंगल की तरफ दौड़ पड़ा ।

चिकोरा मुड़कर घर के अन्दर गया। देखा - मैना सोयी थी पलकें बन्द किये ।

'मैना !' धीरे से पुकारा उसने ।

मैना कहाँ से बोलती। वह तो उड़ चुकी थी, पिजड़ा खाली पड़ा था। चीख पड़ा चिकोरा। अब वह समझ गया, टिकोरा क्यों गम्भीर था ? क्यों रह-रहकर विचलित हो रहा था..।

दौड़ा-दौड़ा वह चारपाई पर बिस्तरे की तरह फैल गया। उसके मस्तिष्क की नसें तन रही थीं। तन्तुओं की सजीवता लुप्त होती जा रही थी। उसका अन्तर, चीख पड़ा- 'मैना मर गई, कैसे मर गयी मैना ?' और उसको बाँखों के आगे टिकोरा की - खूंख्वार छाया आकर खड़ी हो गई अट्टहास करती हुई ।

'टिकोरा !' तेज मगर धीमी आवाज में चीख पड़ा बह। उठकर बैठ गया । आँखों में क्रोध तैर आया ।
****

'क्या है मेरे राजा ! बहुत खोये खोये नजर आ रहे हो ?' घर के अन्दर पैर रखती हुई चमकी ने पूछा- 'टिकोरा के पास गए थे वह ? क्या कहा मरदूद ने ? हाथा-पाई तो नहीं हो गई ? क्या सोच रहे हो जी ? कहो न साफ-साफ ।'

बह चिकोरा के बिलकुल समीप बैठ गई आकर ।

'मैना कैसी है रसिया !' चमकी ने पुना पूछा ।

'उसे टिकोरा ने साँप कटा दिया, वह मर गई। गोरी देह काजल बन गई है। टिकोरा मैना को नहीं, उसकी लाश लेकर आया है-शैतान !' दाँत पीसता हुआ बोला चिकोश ।

'तब तो परदेसी को भी मार डाला होगा उसने ... क्या कर रहा था करैत ।'

'जङ्गल गया है।'

'सबेरे ही तो मैने और शीतल बाबू ने देखा था... मैना को नहला रहा था नदी में, तभी तो कुछ बोली नहीं मैना... वरंना टिकोरा की ऐसी की तैसी, बह क्या छू सकता था उसे ।

अब क्या होगा ?' अपनी सहेली की मौत से घबड़ा उठी थी वह। उसकी आँखें भर आई थी। उसका मगज काम नहीं कर रहा था कुछ ।

'पूछती हो उसका क्या होगा अजगर का मांस बनाकर बंटवा दूँगा गाँव में...' चिकोरा के स्वर में प्रतिकार की भावना टपक रही थी ।

कुछ क्षण पश्चात उसने कहा- 'शीतल बाबू कहाँ हैं ?'

'बाहर साँप और नेवले की लड़ाई देख रहे हैं, बुला दूँ ?'

'नहीं; जखम तो ठीक हो गया है न ?'

'ठीक ही समझो अब तो

अच्छा, जा अब... आंखें लग रही हैं मेरी ।'

चमकी उठकर शीतल के पास चल पड़ी। दरवाजे के बाहर पैर रखा ही था उसने कि किसी को वहां खड़ा पाया ।

'तुम ! छिपकर हम लोगों की बातें सुन रहे थे ?'
'नहीं....' सर हिलाकर उत्तर दिया उस व्यक्ति ने- 'मै तो यहाँ तक तुम्हें बुलाने आया था, मगर ,

'हटो जी, बातें खूब बना लेते हो, शहरी छैला हो नऽ !' बोली चमकी और उसका हाथ पकड़ दूसरे कमरे में खींच ले गई। वह शीतल ही था । खड़ा होकर बातें सुन रहा था ।

आकर चारपाई पर बैठ गये दोनों ।

३५

टिकोरा की बातें हो रही थीं? वही नः जिसे नदी पर दिखाया था तुमने ।' शीतल ने पूछा ।

'हाँ, जी । मैना को डंस लिया उस गेहुँअन ने। परदेसी भी नहीं बच सका । बेचारा परदेसी ! बड़ा भोला था वह... बिलकुल तुम्हारी तरह...' बोली चमकी- 'जरा बगल हो जाओ अलबेले ! तनिक लेट लूं !'

'परदेसी के विषय में बता सकती हो चमकी।' शीतल ने प्या र भरे लहजे में पूछा ।

'शहर का ही तो था वह ! जहाँ तुम रहते हो। अजगर के पेट से निकला था बेचारा। मैना के बापू ने बचाया था इसे । मैना के बापू उस्ताद थे नऽ उनके हाथ में जस था... मन्तर पढ़कर मुर्दे को छूते तो जी उठता था।' उन्मीलित नेत्रों से देख रही थी चमकी शीतल को ।

अजगर के पेट में जाकर कोई बाहर निकल सकता है ?

शीतल को यकीन नहीं हो रहा था। यहां की हर चीज में उसे विचित्रता दिखाई देती थी ।

'तुम्हें विश्वास नहीं होता?' फिर प्रश्न किया चमकी ने ।

शीतल चुप रहा। उसे विश्वास कैसे हो ? शहर का बासिन्दा, सभ्य संसार का प्राणी, कैसे यकीन करता वह। नानी के मुँह से सुनी कहानियों की तरह उसे सब झूठा लग रहा था। साँप काटे इन्सान को जीते नहीं देखा तो अजगर के पेट से निकले जीवित इन्सान के बारे में कैसे धारणा बना ले ।

शहर में सुना था उसने कि सँपेरे सांप खाते हैं। इसे भी वह उनकी दुनिया में आने के पूर्व मनगढ़न्त कहानी ही समझता था। मगर अब तो वह देख रहा है कि सँपेरे सांप खाते हैं। चमकी ने बहुत-बहुत से जादू-मन्तर के खेल भी दिखलाये थे। इस अन होनी पर भी उसे यकीन करना ही पड़ा ।

'अजगर देखा है तुमने बाबू ?'

'नहीं...'

'यहाँ हो तो देख ही लोगे कभी न कभी ।'

'अब कुछ देखने की अभिलाषा नहीं रही चमकी, सिर्फ घर जाने की तमन्ना है... मुझे जाने क्यों नहीं देती तुम ?' चमकी की ओर देखता हुआ बोला शीतल ।

'बाबू ! जाना चाहोगे तो चमकी रोक नहीं सकेगी तुम्हें ।' बोली आर्द्र स्वर में चमकी- 'बिल में घुसे सांप को बाहर निका-लने की ताकत है मुझमें, उ ड़ते परिन्दे को मन्तर से बांध तो नहीं सकती। यह तो दिल को मजबूरी है परदेसी बाबू ! पूछते हो जाने क्यों नहीं देती ? यह मुझे खुद पता नहीं।'

'यह बात नहीं चमकी। यहां का वातावरण मुझे पसन्द नहीं । सोता हूँ तो सपने सांप बन जाते हैं, जागता हूँ तो जिन्दगी हँसने लग जाती है। मुझे डर है, किसी दिन से भी सांप न बन जाऊँ उफ् !' बेचैन होकर बोला शीतल- 'मुझे घर जाने दो चमकी ! मुझे शहर तक पहुंचा दो या रास्ता ही दिखा दो... बड़ी मेहरबानी होगी ।'

'मेहरबानी तो तुम्हारी चाहिए बाबू 1' चमकी के गले पर करुणा आ बैठी ।

और शीतल की भूत की स्मृति वर्तमान में पीड़ा बनकर उसके हृदय को दबोच रही थी। वह अपने घर जाना चाहता था ।

'तुम्हें मेरा घर नहीं सुहाता छैला ! मेरा साथ तुम्हें पसन्द वहीं... मैं अच्छी नहीं ?'

'नहीं..' सभी का जवाब दो अक्षरों में दिया उसने ।

'तो तुम जा सकते हो...' चमकी ने आँखों के सागर को पी डाला । उसकी आवाज अब भींगी थी चमकी रोयेगी नहीं तुम्हारे लिए। यहां पत्थरों का ढेर है बाबू। कलेजे पर रखकर सबर कर लूंगी। पहाड़ बनकर अब नहीं रोकूंगी तुम्हें, पगडण्डी बनकर तुम्हें जाने दूँगी। जाओ, चले जाओ ।'

आखिरी शब्द कहते-कहते रो पड़ी चमकी। उसकी आंखों में पत्थर को पिघलाने की ताकत थी। शीतल तो इन्सान ही था, बह चला ।

३७

'तू रोने लगी चमकी !'

'हां बाबू ! रोने लगी हैं।' हिचकी लेती हुई बोली वह-'मेरी आंखों का पानी तुम्हें रोक नहीं लेगा परदेसी ! आंसू की एक-एक बूँद फूल बनकर राह में बिछ जायगी। शौक से इसे हँसते-कुचलते चले जाना !'

'चमकी !' शीतल बातों की चोट से तिलमिला उठा । चमकी का हाथ पकड़ लिया उसने ।

'हाथ मत पकड़ो बाबू ! सहारा देने की ताकत तुममें नहीं !' चमकी कहे जा रही थी और शीतल प्रस्तर-प्रतिमा -सा मूक गाँव को गोरी को आँसू से नहाते देख रहा था ।

'हँस-हँसकर दिल लगाया था तो रो-रोकर दिल को समझा भी लूंगी। अपनी खुशी के लिए तुम्हारे अरमानों का खून नहीं करेगी चमकी ।'

'रानी !...'

'रानी कहकर जळाओ मत परदेसी 1.... मेरा नाम चमकी है; चमकी। मेरी नजरों से दूर हो जाओ... जाओ...' ऐसा कह चमकी ने शीतल को पकड़कर घर से बाहर ढकेल दिया ।

चला गया शीतल और चमकी चारपाई पर कटे पेड़-सी गिर पड़ी। आँखों से नदियाँ बह चलीं और दिल जळता ही रह गया। उसका । आँखें बन्द किए वह जाने क्या सोच रही थी ।

'चमकी !' प्यार भरे स्वर से किसी ने पुकारा उसे ।

उसने देखा- तुम.... तुम्हीं तो हो। वापस लौट आये बाबू !' चमकी बोली-'एक बेबस जान का तड़पना देखने आये हो, आग लगाकर लपटें देखने आये हो ? देखो... देख लो जी भर कर... निहाल कर लो अपनी आँखें ।'

'जाने के लिए नहीं आया हूँ। अब नहीं जाऊँगा चमकी !'

'सच ! मेरे छैला ! सच कह रहे हो तुम ?'

चमकी को जैसे सब कुछ मिल गया, हंस पड़ी। उसके गालों

पर लेटी आँसू की लकीरें मुस्कुरा उठीं ।

"मेरा तो दिल ही बैठ गया था बाबू ? जाने का नाम व लिया करो कभी । भला क्यों लौट आये तुम ?'

'तुम्हारी आँखों के आकाश-से आंसुओं के कितने ही तारे टूट पड़े थे तो कैसे जा सकता था। तुमने आंसुओं की नदी की बेग-वती धारा में मुझे बहा दिया और मझधार में मैं साहिल खो बैठा; भूल गया रास्ता ।' हँसता हुआ बोळा शीतल ।

'जाने वाले अपमी मञ्जिल ढूढ़ ही लेते हैं बाबू ! तुम जाओ, तुम्हारा शहर तुम्हें खोज रहा होगा।'

'फिर सोच लो, क्या कह रही हो ।'

'गांव वाले किसी का अरमान नहीं कुचलते । तुम जाओ ।'

अच्छा तो चला मैं... रोना मत ।' और शीतल ने दरवाजे के बाहर पैर रखा ।

'जरा रुको' रोती आवाज निकली चमकी के गले से । उड़ता परिन्दा रुक गया क्षण भर के लिए ।

'क्या है ?'

'अगर चमकी से भूल-चूक हुई हो तो क्षमा कर देना...' कहते-कहते चश्वकी

के गले में आंसू अटक गये- 'दरसन की साध लिए तुम्हारा इन्तजार करूंगी ... कभी आ सको तो आ ही जाना ....इस घर का दरवाजा हमेशा खुला ही मिलेगा तुमको...' कह-कर चमकी शीतल के पैरों पर गिर पड़ी। मगर शीतल पत्थर ही बना रहा। चमकी उसके पैरों की धूल उठाकर मस्तक में लगा ली और तब पैर खींचकर निर्मोही परदेसी, बेदर्द छैला, बेदिल शीतल चला गया । शीतल चला जा रहा था और चमकी देख रही थी कि किस शान से उसके दिल का प्यार, उसकी दुनिया उजाड़ कर चला जा रहा है। थोड़ी देर में ही जङ्गल की छाया के अन्दर शीतळ की काया लुप्त हो गई ।

*****

चिकोरा गांव की पगडण्डी पर चला जा रहा था। उसके चेहरे पर शान्ति थी

३९

और आंखें रक्तरंजित... आग के धधकने के पूर्व घुयाँ उठ रहा था। अपने उस्ताद की बेटी की बौत से बौखला उठा था वह। रह रहकर उसका दिल प्रतिहिंसा की आग में जलने लगता, हाथों की मुट्ठियां बंध जातीं, होंठ फड़कने लगते । गले में लटके विकराल सांप को हाथों में ले लिया उसने । फुफ कार उठा भयानक सांप ।

'टिकोरा !' उसके हों बुदबुदाये- 'समझ त्ता है दुनिया का हर इन्सान उससे हार मान गया है- गेहुँअब !'

टिकोरा की स्मृति से उसका अन्तर घृणा से भर उठा ।

टिकोरा कितना विषैला सर्प है। करैत से भी ज्यादा जहर भरा है उसमें ।

चिकोरा का अस्तिष्क विचारों का तूफान लिए उड़ा जा रहा था। उसके पग बढ़ते जा रहे थे। हाथ सांप के मुलायम चमड़े पर अविराम गति से दौड़ रहा था। चन्द मिनटों के बाद वह धिमानी की झोपड़ी के सामने था। अन्दर सभी सँपेरे बैठे थे। वह भी अन्दर जाकर, उदास-उदास क्रोधित हो बैठ गया । सभी के चेहरों पर घृणा थी। वहां का प्रत्येक व्यक्ति टिकोरा का विरोधी था। सभी उसकी मृत्यु के बारे में विचार कर रहे थे ।
'हम बदला लेंगे बाबा !' एक संपेरा उठकर खड़ा हो गया-'गांव के कानून के खिलाफ कदम उठाने वाले की गर्दन तोड़ देंगे। हमारी इज्जत जमीन का जारी नहीं, जिसे कोई कुचल कर गुजर जाये । ऐसे लोगों की टांग काट लेंगे हम ।'

'अपने मन से कोई राजा नहीं बन जाता। हम उसे उस्ताद वहीं मानते ?... शाम को टिकोरा आये और जबाब दे ।' दूसरा भी बोलकर बैठ गया। इसी प्रकार सांपों से खेलने वाले सभी सॅपेरे दिल का जहर उगलते रहे। धिमानी और सहयोगी पंच चुपचाप नये खून का जोश देख रहे थे। आखिर तय हुमा कि टिकोरा को उनकी बातों का जवाब देना होगा। सभा बरखास्त हो गई। बैठा रहा सिर्फ चिकोरा ! वह नहीं गया। धिमानी की बुढ़ी आंखों ने शाम के बुंधळके में टटोळ कर पहिचाना । बोला-

'तू क्यों बैठा है बेटे 1 कोई काम है ? कुछ कहना चाहता है ?'

'हां !' छोटा-सा गम्भीर उत्तर दिया चिकोरा ने ।

'बोल, क्या कहना है ?'

'मैना मर गई बाबा ! !' तेज आवाज थी चिकोरा की ।

सुनकर धिमानी काँप उठा। पैरों के नीचे की धरती खिसक गई, बूढ़े तन में सांप लिफ्ट गया जैसे। खड़ा नहीं रह सका तो बैठ गया। चिन्ता से चेहरे की झुरियां उभर आई ।

'चुप क्यों हो गये बाबा ?....' चिकोरा ने सवाल किथा ।

'धीरज से काम ले बेटे ! हो सकता है टिकोरा बेगुनाह हो ?'

'सांप बेगुनाह नहीं होता बाबा! आंखों से देखा है सब कुछ थो झूठ कैसे मान लूं ।'

'मगर किसी काम में जल्दबाजी नहीं की जाती ।' घिमानी की आवाज पहले ही जैसी गंभीर थी ।

'आग को बुझाने में जल्दीबाजी ही बेहतर है, नहीं तो घर जलने का डर रहता हैं। टिकोरा से डर गये हो बाबा ! तुस बूढ़े भी तो हो चले हो ?' व्यङ्ग करता हुआ बोला चिकोरा ।

सुनकर धिमानी जल उठा। कल के छोकरे को अपने ऊपर कीचड़ उछालते देख सांप बन गया बुजुर्ग ।

नादान छोकरे ! तू मेरी ताकत देखना चाहता है ! बूढ़ा हो गया हूँ तो क्या ? तेरे जैसे साँपों के दाँत तोड़ने की ताकत चली नहीं गई है ? देखेगा मेरी ताकत ?' गरजा धिमानी ।

'देखने का बखत नहीं है मेरे पास, नहीं तो देख लेता...' उठकर जाने लगा क्रोधित चिकोरा ।

'चुपचाप बैठ !' धिमानी बादलों-सा गरजा 'पहले तहजीब सीख, फिर 'नसीहत बाँट...'

चिकोरा के उठे पांव बैठ गये। बूढ़े का चेहरा क्रोध से तथ-तया उठा था । देखकर सहम गया चिकोरा ।

'मुझे क्षमा कर दो बाबा। वड़ो भारी गलती हो गई' धीमें से बोला चिकोरा ।

४१

'अब अकल आई...'

'अकल तो अब आई बाबा! अगर दुख दूर नहीं हुआ है। - तुम टिकोरा को बेगुनाह कहते हो। वह पूरा नाग है बाबा ! ऐसा साँप है वह कि मंतर से भी बाँधा नहीं जा सकता। साँप के दाँत तोड़े जा सकते हैं, पर टिकोरा के दाँत तो उसके कलेजे में हैं।'

'चुप रह छोरे ! दुनिया में कोई बात मुश्किल नहीं । दिल के दाँत तोड़ने का भी औजार है, प्यार से यह दाँत आसानी से टूट सकता है। टिकोरा को कम मत समझ, बड़ा अकलमन्द है वह। उस्ताद का एक-एक मन्तर उसके साथ है। जरा सुधर जाय तो ऊपर चढ़ जाय । उस्ताद भी तो यही कहते थे। इसीलिए तो हमेशा छमा किया करते थे। विकराल सांप को वश में करने से ही मणि मिलती है...' कहकार धिमानी थोड़ी देर के लिए साँस

लेने लगा ।

चिकोरा करुण स्वर में बोला- 'मैना का क्या होगा ?'

'भूत की बात भूल जा , जो हो गया सो हो गया। मैना अव नहीं आ सकती ।' कहा धिमानी ने। बूढ़े गले में करुणा भर आई-'माना टिकोरा ने मार डाला मैना को, मगर टिकोरा को मारने से वह वापस नहीं आ सकती। टिकोरा की गरदन तराशने से उस्ताद भी लौट नहीं सकते। जा मेरी बात मान ।'

चिकोरा चला गया। धिमानी सर पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा। जङ्गल के एकान्त में एक चट्टान की छाती पर बैठा चिकोरा कुछ सोच रहा था, शायद मैना के बारे में ही। वह टिकोरा से बदला लेने की बात सोच रहा था। गले में लिपटे विकराल साँप को हाथ में ले लिया उसने और मन्तर से बाँधकर पृथ्वी पर छोड़ दिया । सिद्धहस्त मदारी का सिखाया साँप फों कर उठा। उसके होंठ मन्तर पढ़ रहे थे, आँखें साँप की आँखों पर ही थीं मगर दिल तूफानों से भरा था। थोड़ी देर पूर्व उसके ऊपर धिमानी की बातों का जो प्रभाव पड़ा था वह अब धीरे-धीरे गायब होता जा रहा था ।

उसके दिल की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। बीते दिन की घटनायें मन में साँप बनकर रेंग रही थीं। मस्तिष्क के चित्रपट पर उस्ताद फेरई आये और

चले गये। चसकू, लजारो, परदेसी सभी आये और रुके नहीं। थोड़ी ही देर में मैना भी आई और रह गई वह, जा नहीं सकी ।

'मैना !' चिकोरा का अन्तर चोख पड़ा- 'मेरी बहन मैता ! तुझे टिकोरा ने सार डाला। मैं बदला लूंगा तेरे खून का...'

एक क्रूर भाव से उसने अपने चेहरे को चमकाया । खौफनाक मुस्कान उसके भयङ्कर होठों पर खेळ उठी और कमर में लटके महुवर को हाथों में लेकर होठों से लगाया उसने ।

सुरीली आवाज से जंगल का कोना-कोवा सदहोश हो उठा । पत्ता-पत्ता कान खोलकर पीने लगा उस स्वर लहरी को ।

एक साँप चिकोरा के शरीर पर आकर गिर पड़ा, काले काले बदन पर सफेद घारियाँ थी उसके। मगर चिकोरा चौंका नहीं ! उसकी उँगलियाँ अविराम गति से चलती रहीं ? गाल फूलते-पचकत्ते रहे। जमीन पर वह जहरीला सांप झूमता रहा फन उठाये । महुवर बजाते-बजाते चिकोरा का चेहरा तमतमा उठा । कनपटी की नसें फूल आई ।

महुवर की ध्वनि से हवा शांत हो बठी पगर चिकोरा का अन्तर अशान्त ही बना रहा। चिकोरा बौखला उठा था। जमीन पर पड़े हुए सांप को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया ।

तभी किसी ने रस्सी से उसके बदन को कस किया। हिल 'मी नहीं सका वह... क्रोधित चिकोरा के गुस्से में घी का काम किया उसने । तेजी से जोर लगाकर खड़ा हो गया वह । बदन की तरफ निगाह डाली तो उस

रस्सी को देखकर मुँह से चीख निकलते-निकलते भी निकल नहीं पाई। करीब पाँच हाथ का काला-काला सफेद धारियों वाला विकराल साँप उसके बदन को कसे जा रहा था धीरे-धीरे ।

गनीमत थी कि उसके दोनों हाथ खुले थे। संयत हो उठा

चिकोरा। उसके होंठ काँपे। मन्तर निकलने लगा । मन्तर पढ़ कर चिकोरा जमीन से धूल उठाने के लिए झुकने लगा तो---

'फों !' फुफकार उठा सांप, झुक नहीं सका वह !

और झुक नहीं सका तो कमर से एक कौड़ी निकाली उसने। कौड़ी को सांप के बदन में छुआ दिया। मन्तर से बँधी कौड़ी चिपक गई सांप के मुलायम बदन पर। बेबस हो गया वह। चिकोरा ने उसकी गर्दन पकड़ की ।

'अब कहो ?' कहकर गांव की तरफ चल पड़ा चिकोरा ।

रास्ते में सम्पू मिला- कहां जा रहे हो चिकोरा !'
"तुम्हारे बाप का खून पीने ! है न मजे में?' तेज स्वर था चिकोरा का।

टेढ़ा जवाब पाकर चुए हो गया सम्पू । वह समझ गया कि 'बाप' से चिकोरा का मतलब टिकोरा से है। तभी नजर नये साँप पर पड़ी, जिसकी गर्दन चिकोरा के हाथ में थी।

यह साँप तो बड़ा विषैला लगता है। कहाँ पा गये ?' पूछा सम्पू ने ।

'भगवान ने भेजा है, तुम्हारे बाप को डसने के लिए...' कहता हुआ आगे बढ़ गया चिकोरा ।

सम्पू गाँव का ही एक संपेरा था। टिकोरा का दाहिना हाथ बना था आजकल । क्रोधित चिकोरा आज टिकोरा से लड़ने का इरादा लिए चला जा रहा था ।

'चिकोरा ।' पोछे से किसी ने आवाज दी ।

उसने मुड़कर देखा, धिमानी था। उसकी तरफ खोज भरी आँखों से देख रहा था ।

क्या है बाबा ?'

'चला आ मेरे पीछे-पीछे... काम है एक... 'बूढ़ी आँखों ने जवान दिल के भावों को पढ़ लिया था ।

बिना कुछ कहा-सुनी के चिकोरा पीछे-पीछे चल पड़ा । उधर चिकोरा के घर में कोई चोर की तरह चौकना संभल-

संभल कर डग रखते हुए, शाम के घुंधलके का आवरण बदन पर डाले घुस रहा था। अन्दर चमकी थी किन्तु बेखबर, छैला की याद में बेहोश ।

***

सड़क की छाती पर कार भागी जा रही थी। आलीशान बंगले पीछे छूटते जा रहे थे। अमीरों की बस्ती, अंग्रेजों और दौलतमन्द सेठों के बंगले से कार भागी जा रही थी। उसी कालोनी के एक बँगले के आगे कार रुक गई। एक नौजवान उत्तरा । होठों पर मुस्कान की रेखा और चेहरे पर उत्सुकता के चिह्न थे । नौजवान निःसंकोच बँगले में प्रविष्ट हुआ।

बरामदे में आकर उसने कालबेल पर हाथ रखा। तब बेचैनी से भरा स्वर उसके मुँह से फुट पड़ा- एनी ! मिस एनी !'

अन्दर से कोई आवाज नहीं आई। लेकिन बन्द दरवाजा खुल गया । काली काली आँखों में शराब की मदहोशी लिए एक हसीन ऐंग्लो-इण्डियन युवती बाहर आई !

'गुड इनिंग एनी ।' युवक ने अपना हाथ आगे बढ़ाया ।

मगर एनी मुड़ चुकी थी, अन्दर जाने के लिए। उसने एनी के कन्धे पर हाथ रख दिया लेकिन एनी ने झटक दिया ।

'तुम बहुत नाराज हो डियर !' बोला वह दुखी होकर - मैं तुमसे कुछ बातें करने आया हूँ।',

'ई आम वेरी सारी चञ्चल कुँवर , ममी इस टाइम में बाहर गया है...' कहा एनी ने ।

'मुझे तुमसे मतलब है एनी!' चञ्चल आगे बढ़कर एनी के पास आ गया-

'मैं तुम्हारा साथ चाहता हूँ...'

'हम आपका साथ नहीं दे सकता छोटी कुँवर । आप जा सकती है !' एनी को आवाज तेज थी।

चञ्चल अपमान से जल उठा। अगर माँ उसे बुलाने के लिए नहीं भेजती तो वह हरगिज नहीं आता ।

बोला- 'अपना आपा संभालो ऐनी, मेरे पास कुछ है

आपको बताने के लिए एक बात....'

"नो, नो हम नहीं सुनेगा... हम तुमको जानता है छोटी कुँवर ! तुम दगाबाज है! यू वांट टूम रूइन योर फैमिली.... हम हरगिज साथ नहीं देगा!' एनी बोली और मुड़ कर दूसरे कमरे में जाने लगी ।

'गुजरी बातों को भूल जाओ एनी ।' बोला चञ्चल , एनी के पीछे चलता हुआ --अब तो भैया भी आ गये हैं.'

व्हाट डू यू से मैन ?' बढ़ी कुँवर आ गई फ्रॉम हेवन ?...यू वांट तो बीफूल में...' एनी के चेहरे पर अविश्वास खिलखिला रहा था। उसे यकीन नहीं हो रहा था चञ्चल की बातों पर ।

'बिलीव मी , मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ...' कहा चंचल ने- 'तुम्हें माँ और भाभी ने बुलाया है....

'तुम सच भी बोलती है छोटी कुँवर !... स्ट्रेंज! व्यंग का तीर चलाती हुई बोली एनी ।

चंचल मुड़कर बाहर की तरफ चल पड़ा। वह वहाँ अब अधिक रुकना नहीं चाहता था। आकर वह अपनी कार में बैठ गया। कार उसे लेकर भाग चली शहर की ओर ।

समय की गति भी विचित्र है। एनी को एक दिन उसने ठुकरा दिया था और आज एनी ने उसे ठुकराया ।

'कितना बुरा हूँ मैं।' मन ही मन सोचकर चंचल ग्लानि से भर उठा। वह भाई की जान लेना चाहता था। भाभी को लूटना चाहता था। जिस भाभी ने उसे माँ-सा प्यार दिया, बेटे की तरह दुलार किया। रियासत की भूख से परेशान चंचळ मासूम ललित का भी दुश्मन बन गया था ।

'उफ् !' चंचल ने एक हाथ से अपना माथा पकड़ लिया और दूसरे हाथ से स्टेर्यारिंग । कार टकराते टकराते बची ।

'तू साँप है रे चन्चल ! भाई की जान लेना चाहता था। दूर हो मेरी नजरों से ।' रानी साहिबा की आवाज उसके कानों

में गूंज छठी । उसे दूर बहुत दूर भाग जाना चाहिए। वह सीधे होटल पहुँचा ! खूब पी उसने । नशे से उसे थोड़ी राहत मिली । रात काफी गुजर चुकी थी मगर चञ्चल अभी तक होटल में ही था।

वारिस ने रात के नौ बजे आकर राजी साहिबा को इत्तला दी- 'छोटे कुवर हवाखोरी करके अभी तक वापस नहीं लौटे हैं, फाटक बन्द होने का समय हो गया।'

उधर चन्चल शराब के नशे में धुत पड़ा था और इधर घर के लोगों का तथा हिरन हो गया था ।

अचल ने सुना तो उसे खोज लाने के लिए तैयार हो गया ।

'तू फिकर न कर, सिनेमा देखने चला गया होगा शैतान !' रानी साहिबा बोलों ।

नौ दस और ग्यारह-बारह बज गये....

रानी सांहिबा के बूढ़े चेहरे पर चिन्ता के चिन्ह नजर आने लगे । वह टहलती हुई अचल के कमरे की ओर बढ़ गई ।

'अभी तक नहीं आया चञ्चल !' चिन्तित स्वर था रानी साहिबा का ।

वे इस समय अचल के शयनकक्ष में थीं। सुन कर अचल भी सोच में पड़ गया । कविता भी विचारने लगी कुछ ।

अचल ने वारिस को आज्ञा दी। रात के सन्नाटे में वफादार नौकर अपने मालिक की खोज में निकल पड़ा, ड्राइवर शंकर के साथ । परिचित होटल के आगे कार रोकी शंकर ने। वह जानता था कि इसके सिवा वह कहीं नहीं होगा। वारिस उतर कर होटल के भीतर गया। उसने देखा बेहोश पड़ा था

चञ्चल ! उठाकर कार में डाल लिया। रात के एक-डेढ़ बजे के करीब महल पहुँच गया वारिस चन्चल को लेकर । रामी माँ को शान्ति मिली। अचल और कविता सोने चले गए ।

रात धीरे-धीरे खिसक रही थी। सबेरा होने में घड़ी भर बाकी रह गया था। दम्पत्ति आराम की नींद में बेहोश थे। करवन बदलते जोरों से चीख पड़ा कुवर ।

कविता घबरा कर उठ पड़ी। ललित भी उठ बैठा। वह अचल के पलंग पर दौड़कर आई। हाँफ रहा था कुँवर... कविता ने अपना कोमल हाथ उसके मस्तक पर रख दिया। पूछा-'क्या हुआ आपको ?'

'कुछ नहीं कविता, यों ही... सपना देखकर डर गया।' संयत होकर बोला कुंवर --बड़ा भयानक स्वप्न था --में भाग रहा था और उसका साँप मेरे पीछे दौड़ा आ रहा था। साँप मेरे पैरों में आकर लिपट गया, मैं गिर पड़ा और चिल्ला उठा'

तभी घड़ी का अलार्म घनघना उठा। सुबह के चार बज गये थे। कुवरानी ललित को लेकर बाहर चली गयी। अचल सपने की बात सोचने लगा। थोड़ी देर बाद वह भी उठा और शौचादि से छुट्टी पाकर बैठक में जा बैठा ।

डाक्टर दास आये और घाव की पट्टी बदल कर चले गये ।

'वारिस !' कुवर ने बुलाया ।

'हजुर ! 'सुनते ही वारिस आ खड़ा हुआ ?

'चन्चल को बुला लाओ ?'

वारिस ने हुक्म की तामील की। थोड़ी देर बाद चञ्चल बड़े कुवर के आगे सर झुकाये उदास-उदास मौन खड़ा था ।

'रात को कहाँ रुक गये थे चन्चल ! बड़ी देर बाद लौटे ?' अचल ने पूछा, स्वर गम्भीर था ।

चंचल चुप

'कुछ बोले नहीं चञ्चल ।' इस बार हँसकर कुवर ने कहा-'अरे, तुम खड़े हो, बैठो नऽ !'

चञ्चल गम्भीर बना रहा। सोच रहा था- क्या कारण बताये और वह बताये भी क्यों, सभी तो जान ही चुके हैं।

चञ्चल के मौन से व्यथित-सा हो उठा अचल का हृदय ।

'आओ चञ्चल ! तुम पर बिगड़ने के लिए मैने नहीं बुलाया है। ऊब गया था, सोचा तुम्हीं को बुलाकर कुछ बातें कर हूं। कभी कभी आकर बातें कर जाया करो।' कुवर ने धीरे से गम्धीर

स्वर में कहा ।

चञ्चल उड़कर चला गया। उसने सोचा, मजाक उड़ाने का भैया ने नया

तरीका निकाला है। अचल के विकल हृदय को परख नहीं सका वह । उसका मन सभी से दूर, जाने के लिए उतावला हो उठा ।

चन्चल के व्यवहार से चोट तो लगी अचल को मगर रहा चुप ही... वह नादान नहीं था। चञ्चल को अच्छी तरह समझ सकता था। अचल कमरे में धीरे-धीरे टहल रहा था, टहलते-टहलते ही बोला- 'वारिस ! माँ को बुला तो...

हुक्म पाते ही दौड़ पड़ां वारिस रानी साहिबा को बुलाने । दरवाजे पर पहुँचा ही था कि किसी से टकरा गया। टकराने वाले को देखा वारिस ने तो बोल उठा- 'सरकार आप !'

यू घोस्ट ! देखकर नहीं चलती'- जमीन पर गिरे वैविटी केस को उठाती हुई बोली एनी - रास्कल !'

'बाईसिकिल कहाँ है हजूर! यह तो मैं हूँ, मैं वारिस !' हँसता हुआ बोला वारिस ।

एनी की अस्त-व्यस्त भावभंगी के ऊपर छाये क्रोध और अंग्रेजी जुबान पर फिसलती हिन्दी सुनकर अपने आपको हँसने से रोक नहीं सका वारिस ।

'तुम हँसती है, हमारा चोट देखकर.... ब्लाइंड मैन !.... थोड़ी एटीकेट भी नहीं जानती...'

'हम नहीं जानती । कुवर साहिबा जानती... वो अन्दर हैं।'

वारिस एनी की भाषा में बोल गया और जल्दी उड़न-छू हो गया । जाते

वारिस को एनी ने लाल आँखों से पूरा और दरवाजे का परदा हटाकर अन्दर चली गई। वहाँ अचल को सचमुच देखकर काँप उठी। उसका दोषी मन काँप उठा। चेहरे पर विचित्र भाव नाच उठा। अचल का मुँह दूसरी ओर था । वह एनी को नहीं देख सका था ।

खड़ी-खड़ी एनी पशोपेश में थी। कैसे बोले, क्या करे ? आखिर हिम्मत बटोर कर धीरे से बोल उठी - गुड मॉर्निंग बड़ी कुबर ।'
49

एनी का स्वर सुनकर अचल सजग हो गया। उसकी नजते ने देखा - खतरनाक सौन्दर्य को गुड़िया उसके समक्ष उपस्थित थी। अपने कातिल को अचल कैसे भूल सकता था ।

"बैठिये। कुर्सी की तरफ इशारा करके कहा अचल ने ।

छिपी-छिपी नजरों से कुबर एनी को परखने लगा। पहले सा असावधान नहीं रहता था कुवर अब ।

इसी ने तो उसके प्याले में जहर डाला था ।

'कहिए कैसे आना हुआ ?... कोई नौकरी तो नहीं...'
'नो, नथिंग ऑफ दिस किंड हम आपको देखने आया...' बीच ही में सहह्मकर बोल पड़ी एनी ।

तभी रानी साहिबा आ गई और पीछे-पीछे कविता भी ।

कुँवर और एनी उठकर खड़े हो गये।

'अरे यह कब आई.... कल क्यों नहीं आई बेटी ?'

'कल के लिए साँफी मांगता है हम मदर !'

कविता एनी को लेकर भीतर चली गई। अचल और रानी साहिबा अकेले ही रह गये। कमरे में घुसते ही एनी कविता से लिपट सई । आश्चर्य के साथ बोली- 'सिस्टर ! बड़ी कुवर कहाँ से आई, हम से तो आप बोला था....'

'हाँ ! मैंने ठीक कहा था, अजगर के पेट में चले गये थे और निकल भी आये, यही तो ईश्वर की लीला है एनी !'

' माई गोड ! हम तो हैरान है !'

कविता ने सारी कहानी एनी को सुनाई ।

'तुम इधर क्यों नहीं आती थी ?.... अरे तुम रो रही हो एनी ! क्यों ?' कविता ने देखा, एनी की काली काली आँखें मोती उगल रही थीं ।

'हम बड़ा दुखी हो रहा है। बड़ी कुवर को पॉयजन दिया था ना । हम छोटी कुबर के बात में आ गया था...' दुखी एनी बोली- 'हमको माफी बोलो सिस्टर ! बोलो नः ।'

'अच्छा-अच्छा, कर दिया माफ।' कहा कविता ने।

सुनकर एनी आश्वस्त हुई। ग्लानि से भरे हृदय को शांति मिली । थोड़ी देर इधर-उधर की बातों से एनी को हँसा कर कविता बोली- 'एक बात कहू, बुरा तो नहीं मानोगी ?'

एनी ने सिर हिलाकर कहा- 'नो !'

'तुम चन्चल में प्रेस करती हो ?'

'परेम. यू मीन लव, परहैप्स करता था बट नॉट दीज़ डेज... छोटी कुंवर दगाबाज है !' एनी के स्वर से घृणा टपक रही थी ।

'दगाबाजों से मुहम्बत करना बुरा है?' कविता एनी की ओर देखकर वह बोली ।

एस ! वेरी बैड-बहोत खराब ।' एनी का जवाब था यह- 'डैगर को अपनी हार्ट में हम रखने नहीं मांगता

“ 'दिल में खञ्जर रखा भी नहीं जाता एनी ! हाथ में रखा जाता है वह तो । और हाथ का खञ्जर घातक नहीं, मुसीबत मैं सहायक होता है। चंचल बुरा था मगर अब तो नहीं है ।'

एनी मौन हो गौर से सुन रही थी ।

'मुहब्बत सब कुछ कर सकती है एनी! पुरुष की बुराइयों को नारी अपने आँसू से धोकर पावन बना सकती है।'

कुँवरानी के उपदेशों से एनी प्रभावित होती जा रही थी। उसके चाँदनुमा चेहरे पर पश्चात्ताप के निशान उभर पड़े थे ।

'तुमसे मैंने वादा किया था कि तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय होगा... किया था ना ?'

'हूँ !' एनी ने स्वीकारात्मक ढङ्ग से सर हिलाया !

'अब भी सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ, सिर्फ तुम्हारे 'हो' और 'ना' पर निर्भर है। यह चन्चल तुम्हें अब भी प्यार करता है, मैंने माता जी से सब कुछ कह दिया है। चंचल अपने महल में है। जाकर मिल को...' कहकर खड़ी हो गई कुंवरानी ।

51

पशोपेश में पड़ी एनी भी उठ खड़ी हुई और चंचल के महल की ओर चल पड़ी। रानी साहिबा के बिगड़ने की वजह से पलंगग पर बदहवास-सा गिरा पड़ा था चंचल। वह सोच रहा था, दुनिया में उसका कोई नहीं। अपनी माँ ही ठोकर लगा दे तो दूसरों का क्या कहना ? उद्भ्रान्त मन को समझाना चाहा चंचल ने मगर समझा नहीं पाया और समझा नहीं सका तो दुनिया से दूर जाकर समझाने की सोचा उसने । चेहरे पर चमक आई-खोकनाक, भयानाक चमक । उठकर खड़ा हो गया। बम्द आलमारी की ओर उसके पाँव बढ़ गये । उसने आलमारी खोली और दराज में से रिवाल्वर निकाल लिया। आज वह चंचल का खात्मा कर देगा, फिर उसे कोई डाँट नहीं सकता, बुरा-भला सुना नहीं सकता ।

पागल मस्तिष्क की उलझी विचारधारा तूफान बन गई थी। हृदय में अजीब द्वन्द्व-सा उठ खड़ा हुआ था। जिन्दगी कह रही थी- 'जियो !' और मौत थी कि आवाज पर आवाज दे रहे थी- 'सरकार प्रायश्चित करो, गुनाहों का खूब करो ।'

'उफ !' बायें हाथ से दुखते दिमाग को पकड़ लिया उसने दाहिने हाथ के पंजे में पड़ी काली मौत को जोरों से दबाया उसका रिवाल्वर वाला हाथ मस्तक की ओर बढ़ने लगा ।

चारों तरफ की खिड़कियाँ बन्द थीं मगर पीछे का दरवाज था खुला। खुले दरवाजे से हवा का तेज झोंका आया और...

***

घर के अँधेर में चमकी अपनी चमक खोकर पड़ी थी। दिल के मीठे-मीठे खेल ने तबाह कर दिया चमकी को। अगर वह जानती होती कि मुहब्बत की जुदाई दर्द की कहानी और अश्कों का समन्दर होती है तो वह कभी भी उल्फत की ठण्ढक कलेजे में रखकर आग पैदा नहीं करती। जुदाई के सबमें से उसका दिल चूर चूर हो गया था।.

अपने बहुते आँसुओं में परदेसी की याद को बहा देना चाहती थी किन्तु बहा नहीं सकी और बहा नहीं सकी तो बेकल निगाहों से रात के अँधेरे में खोजने लगी शीतल की सूरत। अभी-अभी

चिकोरा आयेगा, पूछेगा शीतल के बारे में तो वह क्या जवाब देगी। उसी समय किसी का प्यार भरा हाथ उसकी पीठ पर गड़ा। स्पर्श से चौंक पड़ी वह। घबराकर उठ खड़ी हुई और अपने भींगे नयनों को पोंछ डाला उसने। अँधेरे में खड़ा व्यक्ति उसके उदास चेहरे को नहीं परख सका ।

'चिकोरा | मेरे राजा 1... छैला चला गया... चला गया वह परदेसी ।' दौड़कर लिपट गई चमकी चिकोरा से ।

'जाने दो रानी ? उसे तो जाना ही था एक न एक दिन, आज ही चला गया खैर ।' चिकोरा का स्वर सुनकर चमकी चौंक पड़ी, छिटक कर दूर हो गई। दौड़कर चकमक रगड़ा उसने और सशाल जलायी। रोशनी से कमरा जगमगा उठा। मशाल की रोशनी में चमकी ने देखा - अपने चाँद को; अपनी खुशी को । दौड़ कर उसके कलेजे से लग गई वह ।

'तुम क्यों लौट आये बाबू ?"

'तुम याद जो कर रही थी... कहो तो चला जाऊँ !'

'चमकी ने तुम्हें कब कहा जाने के लिए बेदर्दी!' चमकी के गले में आँसू आकर अटक गये 'मेरे छैला ! तुम चले गये तो रात का अँधेरा दिल में समा गया था। मेरी ओर देखो, कुछ ही देर में तुमने मुझे मार डाला।' कहते-कहते चमकी अपनी बड़ी-बड़ी पुरनम आँखें शीतल के आगे फैला दी ।

उसने देखा- जुदाई के कुछ ही घण्टों ने गुलाब के फूल को मसल दिया था। कुछ बोला नहीं शीतल । देखता ही रहा एक-टक चमकी के चेहरे की

तरफ ।

'ऐसे मत देखो मेरी ओर, तुम्हारी इन्हीं नजरों ने पागल कर दिया है मुझे ! जादू मत करो बाबू ! फेर लो अपना मन्तर !'

शीतल ने नजरें झुकाई नहीं। देखता रहा और चलता ही रहा जादू। चमकी बेहोश होती गई। उसकी भोंगी पलकों के बीच की दूरी धीरे धीरे कम होने लगी। पलकें बन्द हो गई । शीतल के अधर चमकी के अधरों की तरफ बढ़े ।

53

'बस करो बाबू ! मुझे सब कुछ मिल गया जब तो...' लड़्खड़ाता स्वर था चमकी का ।

दोनों स्वस्थ होकर चारपाई पर का बैठे। साँप की चर्बी का मशाल जल रहा था। थोड़ी ही देर में उबास-उदास आया चिकोरा । गले में पड़ी सांप की माला को उतार कर हाथ में ले लिया और चारपाई पर लेट रहा। मन्तर से बँधा साँप जमीन पर कुण्डली पार कर बैठा रहा ।

चिकोरा, टिकोरा को मारने का षडयन्त्र रच रहा था। शीतल और चमकी सपनों की दुनिया की सैर में लीन थे ।

***

और टिकोरा ? आंखों में वेदना के आँसू लिए जाग रहा था अपनी झोपड़ी

में। मैना को गोद में लिए नम आंखों से देख रहा था उसके भोले चेहरे पर छायी मौत की छाया ।

'तुम नहीं बोलोगो मैना ! टिकोरा को हरा दिया तुमने... मेरे मन की न करो रानी पर बोलो तो सही ! पीठ में छुरे का घाव किया है तुमने ! लो यह छुरा, एक-दो घाव कलेजे में भी कर दो ताकि देख सकूं उसे... मैना !'

आधी रात हो गई है- भूखा प्यासा टिकोरा हाथ में विकराळ मणिधर लिए मन्तर पढ़ रहा है। कई दिनों के जागरण ने उसे विक्षिप्त बना दिया है। कांपते होंठ क्षण भर के लिए रुक गये। हाथ के सांप को जमीन पर छोड़ दिया उसने । अब टिकोरा जीवन का आखिरी खतरनाक प्रयोग करने जा रहा था। हाथ में सात कौड़िया लीं उसने और बोला - मैना। आज उस्ताद का सिखाया आखिरी मन्तर पढ़ रहा हूँ... अपनी जान देकर तुझे जरूर जिन्दा करूंगा रानी।' कहते-कहते उसके चेहरे पर भयानक क्रूरता छा गई ।

मन्तर पढ़ा उसने । सातौं कौड़ियां जमीन पर पड़े सांप की पीठ से चिपक गई । निश्चल सांप बौखला उठा। कौड़ी के स्पर्श से सांप के मुलायम चमड़े में आग सी लग गई। फन उठाकर वह चपटा टिकोरा की ओर । टिकोरा मांखें खोले सांप की आंखों में

देखता रहा और मन ही मन मन्तर पढ़ता रहा ।

काली रात, नीरवता पीकर साथ-साथ कर रही थी। बाहर बिषैले सांपों की फुत्कार हवा के कलेजे में जहर पैदा कर रही थी। टिकोरा ने चुटकी भर

धूल उठाकर सांप पर फेंका।

खुले दरवाजे की राह उड़ चला सांप, जंगल को ओर ।

टिकोरा खतरनाक प्रयोग में जीत तो गया मगर मैना की मौत से नहीं ही जीत सका ।

तभी बाहर से किसी ने पुकारा ---उस्ताद ! घर में हो।'

मौन रहा टिकोरा । सुना नहीं उसने ।

'उस्ताद ! अरे भो उस्ताद !' हाँक लगाता कोई अन्दर घुस जाया। मगर बेखबर रहा टिकोरा मैना जमीन पर एक तरफ पड़ी थी आगन्तुक पास आकर खड़ा हो गया था ।

'उस्ताद ! यह जो...'

'कौन ? तुम !' पास ही किसी का स्वर सुनकर बोल पड़ा टिकोरा । विचारों की शृङ्खला टूट गई- 'कब आये सम्पू ?'

'अभी ही तो...' कहा सम्पू ने- 'यह जो मैना है नः उस्ताद ! खराब होने लगी है। अब माथापच्ची करना बेकार है... फेंक दो इसे गाँव वाले भी डर रहे हैं...'

'क्यों ?'

'कहते हैं मैना भूत बन गई है मर कर ।'

'हा-हा-हा।' एक-ब-एक अट्टहास कर उठा टिकोरा । भय-भीत हो उठा सम्पू 'हा हा हा... गाँव वाले शैतान हैं सम्पू !'

टिकोरा की विकृत भाव-भंगिमा देख काँप उठा सम्पू । मैना मरी नहीं, सो गई है.... इसे जगाना ही होगा।'

'हाँ उस्ताद, पर....' कहते-कहते रुक गया सम्पू ।

'पर क्या ? बोल नऽ !'

'मैला का शरीर नष्ट हो रहा है उस्ताद !... कोई दवा बना-कर लगा दो। बदन सही सलामत हो जाय

55

'बना दे दवा !... लगा दूँगा, पर इसे मरी मत समझ सम्पू ! मैना जीवित है, मर गया है टिकोरा ! शहर के परदेसी ने टिकोरा की जान ले ली' कहते-कहते उसके चेहरे पर पैशाचिकता नाच उठी- 'परदेसी की जान लेकर ही छोड़ेंगा।'

'मुझे डर लगने लगा है उस्ताद !'

किससे.... किससे डरता है तू ? क्या परदेसी से?'

'नहीं, गाँव वालों से.... सभी खिलाफ हैं उस्ताद !'

'किसके ?'

'तुम्हारे !' कहा सम्पू ने ।

'हा-हा-हा... टिक्ोरा की ताकत इतनी कम नहीं सम्पू ! मुठ्ठी भर गाँव वाले मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते । अभी मन्तर से गाँव भर के साँपों को बाँध दूँ तो पिटारी में छिपे साँप निकल कर एक-एक को डंस लें और कोई उल्टी साँस भी न ले सके। किसी की मिहरबानी से उस्ताद नहीं बना हूँ...'

'पर तुम्हें उस्ताद तो कोई नहीं मानता ।'

'लोग मेरी ताकत भूल गये हैं। उस्ताद भी मुझसे हार कर मर गया तो गाँव के इन छोकरों की क्या विसात ।'

'आज ही शाम को पंचायत बैठेगी, अगर हार गये तो ?'

'कौन हरायेगा मुझे !' थोड़ी देर रुक कर बोला टिकोरा। इस बार उसका स्वर भारी एवं अतिशय गम्भीर था- 'यह सब क्या हो रहा है.... जानते हो सम्पू ? इसकी वजह है, मैना और परदेसी 1 दोनों ने मिलकर मुझे बरबाद कर दिया है। गाँव वाले किसके मन्तर पर उछल रहे हैं, जानते हो ?... तुम नहीं जानते होगे; मगर...'

'जानता हूँ उस्ताद ! चिकोरा के बल पर... चिकोरा सांप बन गया है, उसी के इशारे पर गाँव के साँपों ने फन उठाया है।'

'एक-एक की गर्दन तोड़ दूंगा सम्पू ! जरा मैना को ठीक तो हो जाने दे। सारी बुद्धि तो यही खा गई है मेरी । ला तेल, इसके बदन पर लगा दूँ।' टिकोरा विवश आँखों से मैता को देखने

लगा, जो काली रात की नीरवता पीकर चुप थी ।

'इससे कुछ नहीं होगा उस्ताद !'

'मुझसे अधिक जानता है क्या ?' तड़प उठा टिकोरा ।

सम्पू सहम गया टिकोरा की बात सुनकर। तेल लाकर मैना के मुर्दा शरीर पर मालिश करने लगा ।

साँप का जहरीला तेल, साँप के विष से मरी मैना के शरीर पर चमक लाने लगा। सूखी चमड़ी मुलायम हो चली ।

'कल चिकोरा मिला था। मालिश के बीच में बोला सम्पू।

'तो ?'

'हाथ में जङ्गली विषधर लिए था। पूछा तो कहने लगा-तुम्हारे बाप का खून पीने जा रहा हूँ। तुम्हीं को कह रहा था।'

सुनकर तमतमा उठा टिकोरा ।

'कहाँ है वह गेहुँवन ? कहाँ होगा वह लुच्चा ! चल तो...' चीख पड़ा टिकोरा । क्रोध से काँपता खड़ा हो गया ।

'रोक दूँ मालिश !'

टिकोरा की जलती आँखें मैना पर पड़ीं। नशा उखड़ गया मगर खुमारी नहीं उतरी। क्रोध पानी बनकर बह चला । थर-थरा उठा टिकोरा , उसकी उत्तेजना ठण्डी हो गई तो घम्स से जमीन पर आ गया और मैना के शरीर पर अपना सर पटक कर आर्तनाद कर उठा- 'तू.. चुड़ैल बन गई मैना ! टिकोरा को मार ही डालेगी। मगर मरेगा नहीं यह टिकोरा। जी-जीकर तड़पेगा और तड़प-तड़पकर तड़पायेगा तुझे ।'

उसके दिमाग पर पागलपन सवार हो गया था। कभी चीख-चीख कर हँसता वह और कभी हँस-हँस कर रोता। अजीब अवस्था होती जा रही थी उसकी।

****

शाम हुई। सभी तैयार होकर आये। बड़े से इमली के पेड़ के नीचे सँपेरों का गिरोह एकत्रित हुआ। प्रत्येक के गले और हाथों में विषैले गेहुँअन, करैत फुकार रहे थे। पंच अपने आसन

पर आसीन थे। मशालें जल रही थीं। लोगों की आँखें किसी के आने का इन्तजार कर रही थीं। टिकोरा अभी तक नहीं आया था । अन्त तक वह

नहीं ही आया। संपेरों में काना-फूसी होने लगी। किसी ने कहा कि डर गया है वह ।

मगर टिकोरा ! पागल, विक्षिप्त भूला-भूला-सा किवाड़ बन्द किये, मैना के पास बैठा... पत्थरों से अपना सर फोड़ रहा था

खून बह रहा था उसके सर से, पर जैसे उसे फिकर ही नहीं। बगल ही में सम्पू आग जलाकर दवा तैयार कर रहा था।

'हा-हा-हा !' टिकोरा अट्टहास कर उठा- 'कोई है यहाँ ? है तो बोलता क्यों नहीं ?"

'उस्ताद !' सहमा-सहमा-सः स्वर था सम्पू का ।

'उस्ताद के बच्चे, लुच्चा, बदजात! इतनी देर से चीख कर गला फाड़ रहा हूँ और सुनता नहीं है तू?... कमीना !' फुफकार उठा टिकोरा कुचले साँप की तरह ।

चीख उठा सम्पू, टिकोरा के वज्र सदृश हाथों के थप्पड़ ने जब उसके गालों का आलिङ्गन किया, मगर रहा खामोश ।

सम्पू को मारकर अपने सर के बाल नोचने लगा वह । गले के साँप को खींच कर जमीन पर फेंक दिया। उपेक्षा की चोट खाकर मणिधर उदण्ड हो उठा। फुत्कार कर दौड़ा वह टिकोरा की ओर मगर होशियार सम्पू ने दौड़ते साँप को मन्तर से बाँध दिया। बेजान होकर गिर पड़ा वह , टिकोरा उठकर खड़ा हो गया । बढ़कर दरवाजा खोला उसने , बाहर अँधेरा था ।

आकाश में तारे छिटक चुके थे ।

'सम्पू, शाम हो गई... आज परीक्षा है न मेरी चलो चलें.... लोग जुट गये होंगे

टिकोरा सम्पू के साथ गले में सांप लटकाकर चला गया।

XXXXXXX

और इधर संपेरों का क्रोधित समूह टिकोरा का इन्तजार करते-करते थक गया था। धिमानी सर झुकाये, गम्भीर होकर

कुछ सोच रहा था- 'अभी तक आया नहीं टिकोरा !... बुला लाओ कोई ।' धिमानी ने सर उठाकर कहा ।

'डर गया है... वह नहीं आ सकता ! गुनहगार अपनी सफाई दे भी क्या सकता है ?... बुजदिल !'

'चुप रहो चिकोरा ! हस्ती के बाहर मत बोलो। बुजदिल होने का फैसला तो अभी हो जायगा...' किसी का क्रोधित स्वर सुनकर चौंका चिकोरा । आँखें खोलकर देखा उसने - सामने लाल-शाल लपटों-सा जलता टिकोरा खड़ा था।

आगे बढ़ते हुए कहा टिकोरा ने-'लाये हो अपना साँप !... आ जाओ मैदान

में ।'

धिमानी कुछ बोले उसके पहले ही सिद्धहस्त संपेरे मैदान में उतर पड़े बाजी जीतने के लिए। दो काले काले साँप जमीन की छाती पर रेंग उठे । फुत्कारे तो धरती का कलेजा कपकपा कर रह गया । एक था टिकोरा का मणिघर । किसी को काट ले तो उल्टी साँस भी न ले सके... और दूसरा था चिकोरा का सफेद धारियों वाला साँप । जो संयोग से मिल गया था उसे । पाँच हाथ लम्बा, आँखों में क्रोध और बदन में फुर्ती, टिकोरा के विष-घर. से कम नहीं। टिकोरा हटकर दूसरी तरफ बैठ गया, भीड़ से दूर । उसका चेहरा तमतमा उठा था। भयानक काँपते होठों पर मन्तर चल रहे थे ।

दोनों साँप तूफान बन गये थे। उलझ गये थे एक-दूसरे से । चिकोरा के साँप ने टिकोरा के साँप को कई जगह काट खाया ।

टिकोरा का मन्तर कमजोर पड़ने लगा। भीड़ में खड़ा सम्पू धीरे-धीरे अन्धकार में छिपते हुए टिकोरा की बगल में जा पहुँचा।

धीरे से बोला- 'यह क्या उस्ताद । हार हो रही है यह। तो... मणिधर कभी हारा तो नहीं किसी से, आज क्यों ?'

'चुप रह ! आँखें मूंदकर देखता चल जो कुछ हो रहा है।'

'उस्ताद ! मणिधर भाग गया.... देखो, देखो तो. आँखें खोलो उस्ताद !' घबड़ाया स्वर था सम्पू का ।

टिकोरा आँखें मूदे पढ़ रहा था मन्तर। उसका सांप मैदान

छोड़कर भाग गया, पीछे-पीछे चिकोरा का साँप भी दौड़ा ।

'हा-हा-हा !' भयानक अट्टहास कर उठा चिकोरा-'टिकोरा आज हार गये तुम । आँखें खोलकर देखो तमाशा....'

'तमाशा देखो तुम ...' टिकोरा की आंखें खुल गई , लाल-लाल आंखों में लपटें उठ रही थीं- 'जरा-सी जीत कोई जीत नहीं चिकोरा !.... अब देखो...'

'देखा है, मगर जरा-सी हार बहुत बड़ी हार...' कहते-कहते रुक गया चिकोरा; जैसे उसकी जुबान को उकवा मार गया हो। उसने देखा -टिकोरा का सांप उड़ता-उड़ता टिकोरा के सामने आ गिरा था और उसके सांप को एक नेवला टुकड़े-टुकड़े कर खून चाट रहा था मजे से। इतनी जल्दी यह घटना घट गई कि किसी की आंखों ने देखा भी नहीं।

'जी भर कर तमाशा देख लो। अब जा रहा हूँ मैं। कल के छोकरे हो तुम चिकोरा । बहुत छोटे !'

कहकर जाने के लिए तैयार हुआ टिकोरा तो-

'रुको अभी... लौटकर जाने के लिए नहीं आये हो तुम !' कहते-कहते चिकोरा ने अपनी कमर के छूरे को हाथ में ले लिया और टिकोरा के आगे आ खड़ा हुआ- 'तुम्हारा मन्तर मेरे सांप को बाँध सकता है, इस कटार को

नहीं !'

चिकोरा के हाथ में चमकते हुए छुरे को देखकर धीमानी चकित रह गया और आस-पास खड़े टिकोरा के विरोधी खुश ।

पास की झाड़ी में शीतल के साथ छिपी चमकी का कलेजा धड़कने लगा। वह शीतल के पास खिसक आई। चिकोरा दो कदम आगे बढ़ा। टिकोरा खामोश रहा हाथ के साँप को सहलाता हुआ। चिकोरा के हाथ में कटार काँप रही थी। वह बिलकुल पास आ गया टिकौरा के। दोनों के बीच सिर्फ पाँच हाथ की दूरी थी ।

लोगों की आँखें, होनेवाली घटना का इन्तजार कर रही थीं।

'दुनिया के ऊपर भेज दूँगा तुम्हें.... दुनिया में रहने लायक वहीं हो तुम...नीच !'

६०

'चुप रहो चिकोरा !! गरज उठा टिकोरा । भवें तन गई उसकी । आँखों में एक खूनी भाव जल उठा ।

'तुम चुप रहो !..' चीख पड़ा चिकोरा। उसके हाथ का छुरा सजग हुआ। वह झपटा टिकोरा पर और...

***

चमकी घर में नहीं थी। एक चट्टान पर बैठकर शीतल धूप खा रहा था और सामने देख रहा था। एक साँप मेढक को निगलने में व्यस्त था। देखने में

तल्लीन था शीतल । उसे आस-पास की सुध तक नहीं थी। कोई आया और पीछे खड़ा हो गया मगर शीतल को कुछ पता नहीं चला। थोड़ी ही देर में मेढक की सारी काया पतले जहरीले साँप के बदन में घुस गई। उसका रोम-रोस भय से काँप उठा ।

'बाप रे!' अपने-आप उसके होठों पर से ये शब्द निकल पड़े ।

हा-हा-हा !' कोई भयावनी हँसी हँस पड़ा ।

चौंककर शीतल उठ खड़ा हुआ। डर गया था वह अट्टहास सुनजर । मुड़कर देखा - एक अनजान सँपेरा खड़ा था ।

'डर गये बाबू ! यह तो एक सामूली खेळ था... अजगर को जो आदमी लीलते देख लो तो जान ही निकल जाय.... हा हा हा!' एक बार पुनः हँस पड़ा सँपेरा ।

'कौन हो तुम ?' धीषे से पूछा शीतल ने ।

- मैं सम्पू हूँ... इसी गाँव का... आज अकेले बैठो हो परदेसी ? चमकी कहाँ गई ?'

"मैं नहीं जानता...' छोटा सा उत्तर दिया शीतल ने ।

'अच्छी बात है फिर मिलेंगे... भूळ मत जाता... मेरा नाम सम्पू है 1.... उस्ताद टिकोरा का शागिर्द हूँ मैं !'

कहता हुआ चला गया सम्पू मन्थर गति से । सम्पू चला जा रहा था। तभी

उसकी आँखों ने दूर पगडण्डी पर, जङ्गल की ओर चमकी को देखा । लम्बे डम भरता हुआ वह उधर को चला और पहुँच ही गया वहाँ। बगल से निकलती हुई चमकी को उसने धक्का दिया । जवानी के डगमगाते पाँव लड़खड़ा उठे ।

गिर पड़ी चमकी। धूल झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई। मुँह से निकला -'कमीना लुच्चा, कुत्ता ।'

सुनकर हँस पड़ा सम्पू । बोला- 'क्या हो गया रानी जो आशीर्वाद की झड़ी लगा रही हो ? बहुत खुश हो क्या ?'

'देखकर नहीं चलते... अन्धे!' तड़प उठी चमकी ।

'जियो जीः जियो...' शरारत से हँसकर बोला सम्पू-'आँखें तो उस्ताद कसम दो हैं मगर तुम्हें देखते ही अन्धी क्यों हो जाती हैं। इसमें मेरा दोष नहीं। तुम्हारी जवानी का कसूर है।'

"चुप रहो' चमकी चीख उठी ।

'नागिन बनकर भय मत दिखा चमकी !' सम्पू भी गरम हो गया- 'उस्ताद कसम । मुझे किसी का डर नहीं सीधे-सीधे एक दिन मेरी बन जा... नहीं तो...'

'तेरी बने मेरी जूती... जा, जो करना हो कर लेता...' कह-कर चमकी गाँव की ओर चली गई ।

सम्पू देखता ही रह गया। हाथ से नागिन निकल गई ।

'हूँ 1... देखूंगा।' सम्पू के होंठ बुदबुदाये और वह जंगल की तरफ चल पड़ा।

क्रोध से जलती चमकी तेजी में अपने घर की ओर चल पड़ी । तूफानी पैरों में शीघ्र ही झोपड़े के आगे ला खड़ा किया उसे । हाथ की गठरी फेंक दी उसने नीचे ।

'छैला ! कहाँ हो जी?' तेज स्वर में पुकारा उसने ।

'यहीं तो हूँ, दिखाई नहीं देता?' पास ही लेटा शीतल बोला।

'देता तो है... आँखों में घाम समा गई है नऽ सो चौंधिया रही हैं, कहो कैसे हो ?'

बहुत खराब !... देख लो नऽ !'

' 'सच!' बोली चमकी और पास आकर शीतल की बगल आबाद की उसने ।

'कोई आया था, पूछ रहा था तुम्हें...'

'कौन?'

'मैं नहीं जानता.... कह रहा था- मेरा नाथ सम्पू है ।' धीरे से कहा शीतल ने ।

सुनकर चौंक पड़ी चमकी ।

बोली- अच्छा, तो यहाँ भी आया था बेईमान । देखो जी; उससे मत बोला करो... बड़ा खराब आदमी है।'

चिकोरा नहीं दिखाई पड़ा 'अच्छा !' कहा शीतल ने ... कहाँ गया है... जानती हो तुम ?'

'सदमा पहुँचा है उसे, हार गया नऽ टिकोरा को कौल पा सकता है। मैंने लाख मना किया कि टिकोरा को मत छेड़ो ।' कहते-कहते दुखी हो उठी चमकी- 'जङ्गल में जाकर मन्तर जगा रहा है। वहीं तो गई थी, समझाया। आज रात को आयेगा ।'

'मन्तर कैसे जगाया जाता है। तुम तो जानती होगी ?' शीतल ने आंखों उत्सुकता लाकर पूछा ।

तुम भी तो जानते हो बाबू ! तुमने तो अपने मन्तर से मुझे बेबस कर दिया है... चमकी ने वासना भरी दृष्टि से देखा ।

शीतल ने बात बदल दी ।

'चमकी ! अगर चिकोरा छुरे से टिकोरा को मार देता तो।'

'तब तो अमन मिल जाता सारे गाँव को.... मगर वह साँप उस्ताद का है, वैसा सौप गाँव में किसी के पास नहीं। हरामी बीच में दीवार बन कर खड़ा हो गया था , टिकोरा तो नहीं ही बचता...'

'अजीब है यह देश चमकी! मुझे शहर पहुँचा दो...लगता है, कुछ बिन यहाँ रहा तो बच नहीं सकूंगा। मौत की बात सोच कर मैं डर जाता हूँ। यहाँ के लोगों की सूरत देखता हूँ तो जैसे काटने दौड़ते हैं और यह सम्पू जो आया था, थोड़ी देर पहले धमकी ही देकर गया है

'क्या कहा था हरामी ने ।'

कहता था, भूल मत जाना मुझे परदेसी ! उस्ताद का शागिर्द हूँ मैं !'

'टिकोरा के कारण सम्पू का सर आसमान पर चढ़ गया है... सोचता है, उसका कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता... उसके दांत तुड़वा दूंगी और देखो बाबू ! जाने का नाम न लिया करो ! मैं जिन्दा नहीं रह सकूगी छबीले ! तुम्हें देख-देख कर ही तो जी रही है यह चमकी !"

चमकी और शीतल लेटे पढ़ें थे। दोनों की उनींदी आँखें चिकोरा का इन्तजार कर रही थीं ! आधी रात के घड़ी भर बाद आया चिकोरा । आकर जमीन पर लेट गया बदहवास-सा । मगर आँखों में नींद की एक झपकी भी नहीं आई ।

दूसरे दिन चिकोरा मन ही सन टिकोरा की हत्या का षड.यन्त्र रच रहा था। चमकी और शीतल घर में नहीं थे, शायद जङ्गल गये थे। तभी कोई आया। चिकोरा ने देखा , होठों पर पैशाचिक हँसी लिए सम्पू था। चिकोरा देखकर जल उठा । मगर अपने अन्तर के भावों को छिपाकर पूछा उसने -

'कहो, कैसे आये सम्पू । सबेरे-सवेरे कौन-सी जरूरत यहाँ तक खींच लाई ?'

'छैला नजर नहीं आ रहा है और चमकी भी... कह गये हैं दोनों ?' बैठता हुआ बोळा सम्पू ।

अपने आने का कारण एकदम उड़ा गया वह ।

थोड़ी देर ठहर कर बोला- 'यह सब ठीक नहीं चिकोरा !' क्या ?... ठीक नहीं है ?'

'यही सब, छैला को उसके घर भेज दो। गाँव वाले इसे अच्छा वहीं समझते। ऐसी-वैसी बातें सुनने को मिली हैं मुझे ।'

चिकोरा के कान में सम्पू विष घोल रहा था। शङ्का पैदा कर रहा था उसके हृदय में। गाँव में चारों तरक परदेसी छैला और चमकी के विषय में बातें फैल गई थीं। मगर चिकोरा से तो अभी ही सम्पू ने कहा था। वह तो दुनिया की चहल-पहल से दूर रहकर आज-कल सिर्फ अपने दुश्मन टिकोरा को दफनाने का

उपाय खोज रहा था। सम्पू की बात सुनकर शङ्का की एक तीक्ष्ण लौ चिकोरा के अन्तर में जल उठी किन्तु शीघ्र ही उसका दिमाग कुछ और सोचने लगा। सोचने लगा कि शायद टिकोरा की सीख लेकर आया है यह करैत !

'तुम जा सकते हो सम्पू ? फजूल की बातों के लिए मेरे पास बखत नहीं....'

'फजूल की बात कहते हो इसे। उसूल के खिलाफ है यह सब । मेरा क्या, पंचों के आगे जवाब देता होगा तुम्हें !' कहता हुआ जाने के लिए उठ खड़ा हुआ सम्पू ।

'दे लूंगा...'

'उससे पहले उस्ताद को जवाब देना होगा...' कहकर हँस पड़ा सम्पू ।

'चुप रहो..' इस बार चिकोरा का स्वर घृणा से भरा था-'उस्ताद कौन है इस गाँव में... बता सकते हो तुम... कह देना टिकोरा से, चिकोरा से भिड़ने के लिए तैयार रहे। आमने-सामने की लड़ाई में भले ही जीत ले, धोखे की लड़ाई में तो नहीं ही पार पा सकता- पागल भी तो हो गया है...'

टका-सा जवाब पाकर सम्पू झुझला उठा और दाँत पीसता पाँव पटकता चला गया। वह सीधे टिकोरा के पास पहुँचा । टिकोरा अपने काम में व्यस्त रहा। बेजान शरीर की पूजा करने वाला पुजारी सजीव इन्सान की खबर नहीं पा सका ।

'तुम तो जीत गये उस्ताद ।' खामोशी तोड़ी सम्पू ने ।

'हाँ तो...'

'मुझे तो आकाश का तारा मिल गया है उस्ताद ! तुम्हारी कसम, कमाल

का मन्तर है तुम्हारे पास... चिकोरा बड़ा शैतान है....' मतलब की बात पर उतर आया सम्पू

वह टिकोरा और चिकोरा को लड़ाकर चिकोरा को मारना चाहता था और उसके बाद तो रास्ता साफ था उसका.... चमकी उसकी हो ही जायगी। चमकी की निखरती अदा पर कुछ ही

दिनों से फिदा हुआ था वह । और अब तो बीमारी काफी बढ़ गई थी

'चिकोरा तुम्हें धोखे से मारने को कह रहा था उस्ताद !!

'किसे !' मालिश छोड़कर टिकोरा ने सम्पू की ओर देखा।

'तुम्हें उस्ताद .... तुम्हीं को तो...'

थोड़ी देर गुमसुम रहते के बाद टिकोरा खिलखिलाकर हंस पड़ा । फिर गम्भीर होकर उसने सम्पू से पूछा- गांव में तुमने कुछ देखा है सम्पू !'

'मेरे बाप.... देखा है.. बहुत कुछ देखा है। तुम्हें जीतते देखा, लोगों को हारते देखा। तुम्हें उस्ताद बनते देखा और...'

'चुप रह ! खाक देखा तुमने...' बीच ही में रोका टिकोरा ने- 'गांव में कोई शहरी आया है ?'

'ओ, हाँ ! चिकोरा एक परदेसी को लाया है। बड़ा हसीव खूबसूरत-सा ।'

'बस कर। इस बला को हटाना होगा गाँव से । शहरी नाग। होते हैं। अगर किसी को डस लें तो सारे मन्तर छूमन्तर हो जायें । मैना को देख, बरबाद कर दिया एक नाग ने...'

टिकोरा के भयंकर चेहरे पर क्रूर भाव आया । आँखों में परदेसी की आकृति नाच गई ।

हर एक शहरी टिकोरा की नजरों में साँप बन गया था।
" चिकोरा को बुला सम्पू ! गाँव के कानून तोड़ने वालों के लिए मेरे पास छमा की कोई गुआइश नहीं...'

सम्पू चिकोरा के पास पुनः गया और फिर वापस लौट आया। बोला- उस्ताद ! नहीं आया वह... बोला फुरसत मिलने पर मिलूंगा !'

'ठीक है- समझेंगा उससे किसी दिन.. तू जा !' थोड़ी देर खामोश होकर सम्पू ने एक चाल सोची और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ ।

६६

शीतल और चमकी के सम्बन्धों की चर्चा पूरे गाँव में फैल बुको थी । बूढ़े धिमानी के कानों तक भी बात पहुँची। सभी का भला चाहने वाला बुजुर्ग चिन्तित हो उठा, उसका दिल बेचैन हो उठा । धिमानी ने चिकोरा को बुलाया और पूछा-

'यह कैसा बवाल उठ खड़ा हुआ रे चिकोरा !'

'यह सब टिकोरा की चाल है बाबा ! उसी के मुँहलगे सम्पू ने आग लगाई है !' बोला चिकोरा ।

" हो सकता है। सम्पू तो किसी और का नाम बता रहा था ।'

उसकी बातों पर यकीन न करो बाबा । वह तो लुच्चा है।'

'लुच्चे तो तुम हो चिकोरा ! कोई झूठ तो कहता नहीं ।

बाबा, मेरी बात गलत निकले तो जान ले लेना...

हाँ !' कोई पीछे से आकर गरज उठा । ---सम्पू ही था वह ।

सम्पू को देखकर चिकोरा का खून खौल उठा ।

मगर सम्पू बोलता हो गया- 'चिकोरा, तुमने अपने घर में भयानक साँप पाल रखा है और उसे दूध भी पिला रहे हो।'

'चिल्ला मत छोरे ।' धिमानी गरज उठा- धीरे से बोल संपेरा साँप नहीं पालेगा घर में तो क्या छुछुन्दर पालेगा ?'

'मगर ऐसा साँप तो बहुत खतरनाक होता है बाबा ! जिसके दांत आदमियों जैसे होते हैं। किसी को डस लेगा तो...'

'किसी को हँसा तो नहीं नऽ...' धिमानी का स्वर तेज था ।

'डंस लिया है उसने बाबा ! मेरे मुँह से सच बात मत निकलवाओ.... सच

सुनने में कड़वा लग जायगा किसी को...' कहते-कहते सम्पू ने चिकोरा की ओर देखा सहमी नजरों से ।

गम्भीर मगर तेज आवाज में पूछा चिकोरा ने 'तुम कहो... किसको डसा है उसने ?'

'तो सुन ही लो चमको को डसा है उसने !...'

'चुप रहो सम्पू और ज्वालामुखी बनकर फट पड़ा चिकोरा...
चट चट ।

तमाचा खाकर भी गम्भीर बना रहा सम्पू, बोला- लग गया न बुरा

६७

.... अब जाकर डूव मरो चुल्लू भर पानी में कहीं...

इस बार खामोश रह गया चिकोरा। उसका चेहरा लाल हो उठा था। दिल धू-धू जल रहा था।

'तेरे पास सबूत है छोकरे !'

'हाँ बाबा !.... अपनी आँखों से देख सकते हो जाकर... नदी किनारे बैठे हैं दोनों...'

चिकोरा और कुछ नहीं सुन सका, उठकर दौड़ा नदी की ओर । धिमानी रोकता रहा मगर जवानी के तूफान को बूढ़ा पर्वत नहीं ही रोक सका।

सम्पू का तीर ठीक निशाने पर बैठा था । चिकोरा सोचता जा रहा था। शीतल को जिन्दगी दी उसने और वह उसकी इज्जत पर कीचड़ उछाल रहा है। यह लोग क्या ऐसे ही होते हैं ?

चिकोरा आग बनकर शीतल को जलाने जा रहा था और... शीतल चमकी के प्रेमपाश में दीन-दुनियाँ की सुध बिसारे सपनों की गोद में सो रहा था। चमकी और शीतल पहाड़ी नदी कछार पर बिहार कर रहे थे ।

'बाबू, अगर तुम चले गये तो....' चमकी ने उन्भीलित नेत्र से शीतल की ओर देखते हुए कहा ।

'तो समझ लेना, रात का सपना था टूट गया।' स्वर उन्मत था शीतल का भी ।

'नहीं मेरे रसिया ! सपना बनने की कोशिश न करना चमकी बेमौत मर जायगी।' विह्वल तो उठी चमकी ।

'हमेशा मरने का नाम जबान पर न लाया करो रानी !.. जाऊँगा तो तुम्हें भी साथ ले-चलूंगा चलोगी नऽ ?'

'मेरे राजा ! मुझे कोई एतराज नहीं, मगर चिकोरा? उसे भी ले चलोगे न अलबेले !'

'फूल का भार कितना थी क्यों न हो मगर मादक और हलका होता है.... पहाड़ उठाने की ताकत मुझमें नहीं चमकी --शीतल ने चमकी के लहराते बालों को हाथों से सहलाया ।

मेरे छैला ! तुम्हारी बात मेरे दिमाग में नहीं समायी तनिक सीधी बोली बोला करो नऽ !'

शीतल के स्पर्श ने चमकी पर जादू कर दिया था ।

'बोलूंगा, पर अभी नहीं.... चलो देर हो गई है रानी !... चिकोरा घर लौट आया होगा ।'

'हा-हा-हा !' तभी भयानक रूप से कोई हँस पड़ा ।

शीतल और चमकी ने चौंककर देखा, चिकोरा खड़ा था ।दोनों आसमान में उड़ते-उड़ते जमीन पर आ गिरे ।

'तुम्हारे पास ही आ गया हूँ बाबू !' बोला वह ।

'मेरे रसिया । कब आये तुम ?' कहती हुई चमकी चिकोरा हो ओर बढ़ी ।"

'रसिया !... हा हा हा रसिया तो तेरा छैला है, कमीनी नहीं की...हट!' कहकर चिकोरा ने एक जोरदार धक्का मारा चमकी को , बेचारी जमीन पर मुंह के बल गिर पड़ी ।

चमकी को उपेक्षा से देखता हुआ बोला चिकोरा- 'दगाबाज बौरत ! मेरा जिस्म छूकर गन्दा करने की ताकत तुझमें नहीं... सफेद नागिन !'

चपकी की फिकर छोड़कर खंख्वार संपेरा हाथों में विकराल काला-सा

सांप लिए शीतल की ओर बढ़ा ।

भयभीत हो उठा शीतल, बोला- 'चिकोरा भाई !'.

'भाई ! परदेसी बाबू ! यह रिश्ता इतना आसान नहीं कि निभा सको तुम ! रिश्ता निभाने की खातिर हो तो रोका था तुम्हें.. मगर तुम...'

चिकोरा शीतल की ओर बढ़ा जा रहा था। दोनों के बीच की दूरी कम होती जा रही थी।

चिकोरा ने हाथ के सांप को सजग किया।

" मेरे राजा। गजब मत ढाओ... बेकसूर है छैला !' चीख पड़ी चमकी और चिकोरा को रोकने के लिए लपकी ।

'खबरदार ! पास न आना। छैला नहीं छलिया है यह तो ।

यह साँप देखो शीतल बाबू !' कहता हुआ चिकोरा शीतल के बगल में पड़ी चट्टान पर बैठ गया- 'बड़ा खतरनाक है ! इसका खेल नहीं देखा है तुमने, देख लो आज...'

शीतल संपेरे के भावों को पढ़ रहा था। चिकोरा ने सांप को जमीन पर छोड़ा। उसका चेहरा उत्तरोतर भयानक होत जा रहा था । उसने नीचे झुककर चुटकी में धूल छउठाई तो-

'ऐसा मत करो, छैला चला जायगा आज ही, इसी बखत दौड़कर चिकोरा को पकड़ लिया चमकी ने। चिकोरा ने चमकी की छाती पर एक लात मारी तो गिर पड़ी वह ।

चुटकी की धूल पर एक फूंक मारी चिकोरा ने और... किसी की चीख से जङ्गल का कलेजा काँप उठा। जमीन पर पड़ी चमकी ने देखा - शोतल के पैरों में विकराल सांप लिपटा था और उसके पैरों को धीरे-धीरे कसता जा रहा था ।

'चिकोरा !' किसी ने पुकारा ।

चिकोरा ने चारों ओर देखा, कोई नहीं था। चारों ओ देखकर उसने शीतल पर निगाह डाळी तो हक्का-बक्का रह गया । शीतल के पैरों में लिपटा साँप भाग गया था कहीं ।

किसी ने साँप पर मन्तर डालकर भगा दिया था। चिकोरा हैरान आँखों से चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा कि एक झाड़ी में से कोई हाथ के इशारे से उसे बुला रहा है। दौड़ गया उसकी और, बेतहाशा ! और जब झाड़ी वाले आदमी के साथ वापस आया तो जगह खाली थी। चमकी और शीतल का नामो विशान तक बाकी नहीं रह गया था वहाँ।

'भाग गये दोनों !' दाँत पीसता हुआ बोला चिकोरा ।

'मगर दुनिया से बाहर नहीं !' साथ वाले आदमी ने कहा चिकोरा हैरान-परेशान था, चमकी और शीतल की खोज में ।

****

सम्पू के पास बैठा है चिकोरा। दोनों में दोस्ती हो गयी आज-कल । सम्पू की बात सच निचली तो चिकोरा का विश्वास

दृढ़ हो गया है उसके प्रति । सम्पू चिकानी-चुपड़ी बातों का जहर' निकोरा के हृदय में भर रहा था; अपना रास्ता साफ करने के लिए। चिकोरा को क्या पता कि सम्पू कोई मामूली खिलाड़ी नहीं। वह तो अपना मैदान साफ कर रहा था धीरे-धीरे । सम्पू के मन की ही बातें हो रही थी मगर चमकी और शीतल के गायब होने से उसके दिल में भी एक भय समा गया था ।

'आखिर कहाँ जा सकते हैं दोनों ?...कौन है इस गाँव में जिसने मेरे खिलाफ कदम उठाया है?' कुचले साँप की-सी दशा हो रही थी चिकोरा की ।

'उसे खोजना ही होगा। नहीं तो सारा खेल ही बिगड़ जायगा ।' सम्पू ने कहा ।

'तू ही खोज सम्पू । बड़ा एहसान मानुगा तेरा.... उल्टे मैंने तुझे ही मार दिया था कल... मुझे क्षमा कर। परदेसी सचमुच साँप था...' कह रहा था चिकोरा- 'उस बखत तू झाड़ी से न बुलाया होता तो गजब न हुआ होता... खैर... अब भी कहीं से खोज निकाल दोनों को ।'

सम्पू मन ही मन मुस्करा रहा था ।

'मेरी मति तो भ्रष्ट हो गई हैं सम्पू ! खोजते-खोजते हार गया पर पता नहीं किस खोह में जा छिपे हैं दोनों।' चिकोरा क्रोध भरी बावाज में बोला ।

'धीरज रखो भाई ! सम्पू कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं... उस्ताद कसम । आँख का काजल चुरा कर न ला दूँतो मेरा नाम सम्पू नहीं ।' कहकर उठ पड़ा वह ।

हँसते हुए सम्पू ने अपना हाथ चिकोरा के कन्धे पर पटका । सहारा बिल गया चिकोरा को। बैठते दिल को एक शक्ति मिली । बोला- 'तो ठीक है।' और आगे कुछ नहीं बोला वह ।

दो भयानक दैत्यों की बात-चीत खतम हो गई, दोनों ने अपनी-अपनी राह ली। मगर चमकी और शीतल भूले-भटके प्रेमी ! राह खोजने में लगे थे। खोज रहे थे उस देश की राह,

जो इस दुनिया से दूर बसा हो, जहाँ इन्सान का नाम, जिन्दगी के कानून और मौत का इन्साफ तक न हो ।

गाँव की एक झोपड़ी, जो पता नहीं कब से एक किवारे बड़ी जड़ी दुःस्व-सुख की साँस लेते-लेते जीणं-शीर्ण होकर जी रही थी, अपनी मौत की जिन्दगी को जिलाती जा रही थी, किसी के जीवन की रक्षा करने के लिए।

यह बूढ़े धिमानी की बूढ़ी झोपड़ी थी । उजड़ी झोपड़ी की छाया में दो व्यक्ति बैठकर धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। चेहरे पर निराशा और भय के विशाव चमक रहे थे । खर-पत्ते की आवाज भी उनको डराने के लिए काफी हो जाती थी। झोपड़ी का द्वार अन्दर से बन्द किये बैठे थे दोनों। दूर से जर्जर और अनुभवी बुढ़ापा लिए धिमानी, अपनी झोपड़ौ की ओर बाहिस्ता आहिस्ता आ रहा था। मंजिल समीप देख धिमानी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगा। तभी उसे अपनी झोपड़ी के बाहर किसी की आकृति हिलती-डुलती नजर आई। सफेद हुई भौहों पर बल डालकर पहचानने की कोशिश करने लगा धिमानी पर बूढ़ी आंखों की रोशनी ने साथ नहीं दिया उसका। वह जल्दी-जल्दी अपने घर के आगे पहुँचा। बगर तब तक कोई भाग चुका था। धिमानी चिन्ता में डूब गया ! खोज भरी आँखों से चारों ओर निहारने लगा। किसी को देख नहीं पाया तो घर के दरवाजे के सामने जाकर खड़ा हो गया ।

भीतर से किसी की बात-चीत उसके कानों से टकराई, उसके कान सजग हो गये। ध्यान देकर सुनने लगा वह -

'अब क्या होगा ?' स्वर था किसी पुरुष का विवश, दुखी।

'चलो शहर भाग चलें बाबू ! साँपों के बीच तुम्हारी जिन्दगी जी नहीं सकेगी, छटपटाती ही रहेगी...' औरत की आवाज थी यह, करुण, दर्द भरी ।

'रास्ता देखा नहीं है चमकी किस रास्ते से चलोगी ?'

'खण्डहर की राह.... जिधर से मैना के साथ परदेसी भागा था...' चमकी

बोली।

७२

चमकी और शीतल ही थे वे दोनों। दो आकुल प्राण पंछी बन कर उड़ने के लिए पङ्ख फड़फड़ा रहे थे ।

चमकी !' किसी ने बाहर से पुकारा ।

चमकी बोली- बाबा हैं ! डरने की बात नहीं ।'

धिमानी भीतर आया । शीतल के पास बैठता हुआ बोला-कौन आया था, अभी-अभी किसी को बाहर देखा था मैंने !'

'कोई तो नहीं ।' चमकी बोल उठी शीतल के पहले ही ।

'धोखा हो गया शायद मेरी आँखों को बूढ़ा हो गया हूँ नऽ !' पसीना पोंछता हुआ बोला धिमानी ।

चमकी और शीतल धिमानो के घर में थे। उस दिन क्रोधित चिकोरा के चंगुल से धिमानी ने ही शीतल को अपने मंतर के जोर से बचाया था और चिकोरा के हटते ही दोनों को अपने घर ले आया था। मगर अभी खतरे कहाँ टले थे। धिमानी के पास इतनी ताकत नहीं कि चिकोरा की जवानी से भिड़ सके ।

'बाबा, शहर पहुँचा तो इसे ।' कहते-कहते रुक गई चमकी ।

वह कह नहीं सकी तो शीतल ने कहा- 'मेरे साथ इसे भी जाने दो बाबा !

चमकी को चिकोरा जिन्दा नहीं छोड़ सकता ।'

'हाँ बाबा ! मैं नहीं रह सकूंगी छैला के बिना...'

चुप रह तु... तूने बेकार हो बाबू को फेर में डाल विया है...' धिमानी ने डांटा ... अजीब उलझन में पड़ गया था बेचारा ।

डाँट खाकर रोने लगी चमकी ।

रोती-रोती बोली- 'तो इसे ही पहुँचा दो बाबा ! पैर पड़ती हूँ... चमकी को मार डालो... चुड़ैल हू मैं तो" '

'मैं भी यहाँ नहीं रहना चाहता। तुम दोनों के साथ मैं भी चलूंगा ।' धिमानी बोला। चमकी सुनकर खुश हो गई ।

'जरा गाँव घूस आऊँ मैं, टिकोरा भी मैना के पीछे पागल हो गया है। जाते-जाते उसे भी समझा-बुझा दूँ, फिर कहां मौका मिलेगा ?' कहता हुआ जाने के लिए उठा धिधानी ।

और धिमानी चला जा रहा था टिकोरा के घर की बोर ।

७३

रास्ता आधा ही तय किया था उसने कि उसकी विवश दृष्टि ने दो जवानों को आपस में बातें करते देखा ।

एक था चिकोरा और दूसरा सम्पू ! दोनों नागों को फन मिळाये देख

धिमानी के दिल में शंका उठ खड़ी हुई। उसने देखा - सम्पू धिमानी की बओर संकेत कर चिकोरा को कुछ बता रहा था, जो दूर रहने से धीमानी सुन नहीं पा रहा था ।

टिकोरा के पास नहीं गया वह । उलटे पाँव वापस झोपड़ी में लौट आया । आकर बाहर एक चट्टान पर बैठ गया। अन्दर शीतल बौर चमकी शाम होने का इन्तजार कर रहे थे।

'बाबा !' किसी ने पुकारा मीठी आवाज में ।

धिमानी का झुका सर ऊपर उठा।
बोला- 'चमकी तू... क्या है ? अन्दर जाकर बैठ । आजकल पेड़-पौधों को भी आँख हो गई है। जानती नहीं !...'

अच्छा बाबा ! देखने आईं थी कि साँझ हुई या नहीं...' कहती हुई चमकी फिर भीतर चली गई ।

चिन्ता में डूबा धिमानी बैठा था, तभी चिकोरा और सम्पू आते दीख पड़े । सीधे उसी के पास आये ।

'आ बैठ चिकोरा ! कैसे भूल पड़ा बेटे 1'

'मैं बैठने नहीं आया हूँ बाबा ।' क्रोधित स्वर में गरज कर बोला चिकोरा- 'चमकी और शीतल को जानते हो तुम ।' हाथ में सौंप किए धिमानी के सामने आ खड़ा हुआ वह ।

'मैं क्या जानू!'

'लोकान मैं जानता हूं। पूरी तरह बोलो।

'क्या इरादा है तेरा ?...' धिमावी गरज पड़ा ।

अन्दर से जब चमकी और शीतल ने चिकोरा का स्वर सुना तो बेजान हो गये दोनों। मौत आँखों के आगे नाच उठी ।

'अभी बताता हूँ' कहकर चिकोरा ने हाथ के साँप को धिमानी के घर के भीतर फेंक दिया ।

'छोकरे ! धीमानी चिल्लाता हुया अंदर भाग गया।

74

"यह साँप मन्तर से बंधा है बाबा । तुम्हारा मन्तर इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता । भला चाहते हो रुक जाओ यहीं, वहीं तो जबान हिलाने के पहले ही तुम्हारी जान निकल जायगी ।'

मगर घिमानी ने कुछ सुना नहीं। वह विना रुके भीतर की ओर दौड़ा । तभी चिकोरा ने इशारे से सम्पू को कुछ कहा ।

सम्पू ने कमर में लटकी कटार हाथों में ली और विद्युत वेग से घिमानी की पीठ में एक दो-तीन ! उभी एक चीख और निकली जो शीतल के गले की थी।
चिकोरा दौड़कर भीतर घुस पड़ा ।

जमीन पर शीतल के मुर्दे शरीर से लिपटी चमकी के बालों को उसने बेदर्दी से पकड़ लिया।

चमकी को घसीटता हुआ चिकोरा घर पहुँचा। उसे रूई को तरह घुनने लगा और सम्पू देखता रहा-चुपचाप । सम्पू की लगाई आग में छैला जल कर राख हो गया था । उसके रास्ते का काँटा वही तो था। और चिकोरा भी उसी के हाथ का पुतला बन गया था। अब क्या है। चमकी को जब चाहे कलेजे से लगाकर अपनी आग बुझा सकता है। चाहता तो अभी ही... मगर किस बात का खौफ है, जो इतनी जल्दी करे ।

दूसरे दिन सम्पू हँसता हुआ हाजिर हुया । चिकोरा ने उसकी बड़ी खातिर की ।

चमकी भीतर बदहवास; अस्त-व्यस्त-सी पड़ी थी। उसकी दुनिया अँधेरी हो गई थी। जीने की तमन्ना मर गयी थी जैसे ।

'सम्पू ! तुम रहो यहाँ मैं जरा जङ्गल घूस आऊँ... चिड़िया उड़ न जाय-देखना !'

'चिड़िया का पङ्ख तो परदेसी छैला था और वह तो कट चुका है।' हँसता हुआ बोला सम्पू- 'तुम ठाट से जाओ ।'

चिकोरा चला गया तो सम्पू रोती हुई चमकी के पास आकर बैठ गया। कुटिल हँसी हँसकर पूछा उसने " कैसी तबीयत है रानी ! देख ली न सम्पू की ताकत !... अब भी मेरी बन जा, चैन से रह लेगी...' सम्पू ने चमकी का हाथ पकड़ लिया ।

हाथ झटक दिया चमकी ने। नागिन की तरह फुफकार कर

बोली- 'कमीना, चला जा यहाँ से। तेरी बने मेरी जूती !'

'तुझे जूती ही बना करके छोड़ा है मैंने पैरों में पहनना तो पड़ेगा ही ।' कहते-कहते सम्पू ने चमकी को अपनी बाँहों में कस लिया, जवरदस्ती चूम लिया उसके अधरों को ! उसके गालों में उसके तीखे दांत धस गये। सह न सकी चमकी। उसने भी अपने दाँत सम्पू को बाँह में गड़ा दिये। सम्पू चीख पड़ा मगर छोड़ा नहीं उसने । चोट खाकर वह उत्तेजित हो उठा। उसका बन्धन कसता गया.. वासना का भूत सवार था उस पर । चीखती रही चमकी मगर छुड़ा व सकी अपने आपको। और सम्पू ! बह तो पागल हो गया था। वासना से वह अन्धा बन गया था। उन्मत्त सम्पू अपनी बाँहों में कसे जा रहा था छटपटाती चमकी को । आज वह अपनी तमन्ना निकाल कर रहेगा। सूना घर, बेबस चमकी और वह ! - कोई कुछ कहने वाला नहीं। वह वीभत्स दृश्य दीवार की आंखें भी तो नहीं देख सकीं। चमकी का वह रूप-उफ् । चोळी खुलकर जमीन की छाती पर मुँह के बल गिरी थी, अजगर के चमड़े का लहँगा अस्त-व्यस्त हो गया था। उसका सौन्दर्य नग्न होकर दिलफरेब नजर आ रहा था। देखकर सम्पू की आँखों में शैतान जाग पड़ा। वासना की आंधी जोरों से चलने लगी और सम्पू मनमानी करता रहा, चीखती रही चमकी...

तभी किसी की आवाज ने गरज कर पुकारा - 'सम्पू 1' चमकी को छोड़कर सम्पू अलग हो गया ।

सामने चिकोरा दैत्य बनकर खड़ा था, चेहरा गम्भीर था उसका मगर आँखों में प्रतिहिंसा की आग जल रही थी ?

सम्पू सँभल कर बोला- 'देखो न, चिड़िया पङ्ख फड़फड़ा रही थी, उड़ने की खातिर.... कई जगह काट खाया हरामी ने।'

'चुप रह बदजात । बास्तीन का साँप विकला तू ! केवल शहर के लोग हो नाग नहीं होते, गाँव वाले भी जहर उगलना जानते हैं।' चिकोरा का स्वर तेज था- 'शक तो पहले ही था तेरी दोस्ती पर, तूने मेरी आँखों में धूल झोंक दी।' कहता हुआ

७६

चिकोरा वो कदम आगे बढ़ा। हाथों की मुठ्ठियां बंध गई थीं ।

'आगे मत बढ़ो चिकोरा ! तुम मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते-समझे ?' हँसने के बाद भी साँप छाती फुलाये खड़ा था ।

'सम्पू ।' चिल्लाकर चिकोरा लपका उसकी तरफ ।

होशियार सम्पू बगल हट गया तो चिंकोरा जमीन पर गिर पड़ा मुंह के बल । सम्पू ने फुर्ती दिखलाई। पास ही पड़े पत्थर को उठाकर उसने चिकोरा के सर पर दे मारा। मारता रहा, जब तक उसे यकीन न हो गया कि वह मर गया। फिर रुका वहीं वहाँ। ऐसा भागा कि पीठ भी नहीं दिखाई पड़ी उसकी ।

इधर बलात्कार और जुदाई की चोट खाकर चमकी बेहोश थी और उधर पत्थर की चोट से चिकोरा बेजान-सा पड़ा था ।

छोटे से गाँव में दुश्मनी का रिवाज-सा चल पड़ा था। सभी एक दूसरे को दबाकर खून पीना चाहते थे। एक दूसरे को अपने कदमों पर झुकाना चाहते थे। और गांव का उस्ताद टिकोरा ?-उसे किसी की फिकर नहीं। मैना के सिवा दुनिया में सारे मर गये थे उसके लिए । जड़ ही कमजोर हो गई थी तो ऊपर के डाळ-पात किसका हाथ पकड़ कर जिन्दा रहते ।
**
जमीन पर पड़े चिकोरा को जब होश आया तो सर को पीड़ा से कराह उठा वह । बगल में चमकी पूर्ववत् पड़ी थी। उसे हिलाया-डुलाया उसने और नहीं उठी वह तो उपेक्षा से लात मार कर उठ खड़ा हुआ। हाथ में सांप और कटार संभाली और दाँत पीसता चलपड़ा सम्पू की गर्दन काटने ।

थोड़ी देर बाद जब चमकी की चमकहीन आंखें खुलीं तो आस-पास सन्नाटे के सिवा कुछ नहीं था। रात हो गई। गाँव सो गया मगर चमकी की आँखों में नींद कहाँ ? करवटें बदल-बदल कर किसी प्रकार रात गुजारी उसने । रोते-रोते थक गई किन्तु आँखों से पानी का बहाव रुका नहीं! अथाह सागर भी कहीं सूख सका है ? शीतल की जान लेकर चिकोरा ने अपने दिल की आग बुझाई और शीतल को खोकर चमकी ने अपने कलेजे में

शोला भड़काया । दिन बीत चले। कुछ ही दिनों में लोग धिमानी और शीतल की बात भूल गये मगर चमकी की पलकों की फोरों पर बेदना के आँसू छलकते ही रहे। चमकी को हर बात याद रह गयी । किसी की याद

भी कैसी भीषण सजा होती है।

चमकी जङ्गल के एक पेड़ की छाया में बैठी है, आँखों में निराशा की रोशनी और कलेजे में टूटा हुआ दिल लिए। इसी पेड़ की छाया में, छैला के गले में बाँहें डालकर उसने कभी एक नई दुनिया बसाई थी। यहीं पर उसकी मुहब्बत जवान हुई थी और आज अकेली बैठी है।

शाम हो गई। चमकी अभी तक वहीं बैठी है. उसी भयावने जङ्गल में । वह सजग हुई तब, जब पीछे से जाकर किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा- 'चमकी घर चल ।'

"मेरे छैला ।' चीखकर चमकी ने कन्धे पर के हाथ को पकड़ लिया ।

पलट कर देखा उसने सामने चिकोरा खड़ा था ।

देखते ही उसकी खुशी ने उदासी का जामा पहन लिया !

'छैला !....उसे भूली नहीं तू !... अब नहीं आ सकता वह !'

मर कर जिन्दा चमकी की लाश, खोई-खोई चल पड़ी चिकोरा के पीछे-पीछे । चिकोरा घर आया और खा-पीकर सो गया। टिकोरा के बारे में सोचता हुआ... सम्पू के विषय में विचारता हुआ । दोनों साँपों को कुचलना है उसे । चमकी ने खाया नहीं, भूखी पड़ी रही। कुछ देर बाद एक काली छाया चिकोरा के घर से निकलती जान पड़ी। वह छाया बाहर थोड़ी देर तक खड़ी ही फिर उसके पाँव जंगल की ओर उठे। थोड़ी देर बाद छाया जंगल के दैत्याकार वृक्षों के साये में खो गई ।

**

रोज-रोज अजीब घटनाओं की सृष्टि हो रही थी, इस पहाड़ी गाँव के दामन में । टिकोरा का मैना की लाश के साथ इश्क ? शीतल का मरना... और आज इस छाया की पैदाइश ।

पिछली रात की बात दिन की आँखें खुलते ही चारों तरफ धूप की तरह फैल गई। किसी ने उस छाया को देख लिया था

७८

और सभी जबान पर यही किस्सा चल रहा था। विचित्र विचित्र बातें होने लगीं । कोई कहने लगा मैना की रूह थी जो रात में भटकती है। लोग रात होने का इन्तजार करने उगे । सभी मैना की रूह को देखने के लिए उत्सुक हो उठे थे ।

रात हुई और वह छाया फिर भटकने लगी गाँव की पगडण्डी पर। पर किसी ने यह नहीं देखा कि एक विचित्र बात और हो गई थी। कल की ही भाँति छाया चिकोरा के घर से निकली । मैना की रूह टिकोरा के घर से नहीं निकली थी ।

जब संपेरों ने देखा तो उनके दिलों में सांप रेंगने लगे । आँखों में मौत नाच उठी। सभी टिकोरा के पास पहुँचे। हाथ जोड़कर विनती की कि मैना को दफना दो नहीं तो गांव में कोई जिन्दा नहीं बच सकेगा अब मगर टिकोरा ने डाँटकर सभी को भगा दिया ।

बोला- 'मैना तो मेरे पास है, अगर रूह देखा तुम लोगों ने तो अन्धे होकर, मुझे दिखाओ तो जानें ।'

संपेरे निरुत्तर और भयभीत हो अपने घर लौट गये ।

दूसरे दिन सभी मैना की रूह टिकोरा को दिखाने के लिए तैयार हो गये । अगर उनकी बात गलत निकली तो खैरियत नहीं । टिकोरा को छेड़ तो आये लेकिन उसके गुस्से से सभी परिचित थे। मैना की रूह टिकोरा को दिखलानी ही पड़ेगी ।

**

जागरण का सन्देश लेकर दूर से मुर्गों को अवाज आई । पिछली रात का अँधेरा अभी तक धुँधले आवरण में हिल-डुल रहा था। राजमहल के सामने दूसरे किवारे पर नौकरों के रहने के लिए क्वार्टर बने थे। वारिस रात भर पहरा देने के बाद कन्वे पर वजनी बन्दूक छादे अपने क्वार्टर की तरफ पहुँचा ।

'गुलनार ... बो गुलनार !' दूर से ही वारिस मुर्गे की तरह बाँग देने लगा । जानता है कि उसकी चांद-सी हसीन, गुलाब-सी मादक बीवी जब नींद की शराब पीकर मदहोश हो जाती है तो उसकी पलकों की मदहोशी आसानी से नहीं भागती ।

कई बार वारिस चीखा ।

'या रब ! वारिस को बीबी भी मिली तो एक नम्बर की सुप्तक्कड़...' कहता हुवा वारिस अपने क्वार्टर के बरामदे में हाजिर था- " दरवाजा खोलो

मेरी हुर । खैर भई, मत खोलो आंखों का फाटक.... खुदा कसम - कुत्ते की तरह भौंकते-भौंकते जान हलक में आकर अटक गई है मेरी बुलबुल !'

कहता हुआ वारिस वहीं जमीन पर बैठने लगा। तभी दर-वाजे के दोनों पल्ले झटके के साथ खुले और तब निकली एक मोहिनी प्रतिमाया; उनींदी आँखें, बेखबर जवानी, आईने-सी चमक-दार सूरत लिए । देखकर वारिस की जान में जान बाई।

'जग गई हो मेरी हुर ! मैंने तो अन्दाजा लगा लिया था कि मेरी मलका नींद की दुनिया में ख्वाब की ब्लैकमार्केटिङ्ग करने में मशगूल...'

'हटो जी, सबेरे-सबेरे आये तो लगे मजाक ही उड़ाने... यह कुत्ता-कुत्ती क्या बक रहे थे ?'

'खुदा खैर करे ! नींद में भी सुन लेती हो मेरी जान !... वह तो जनाब वारिस अली खाँ कुत्ते की तरह भूक रहे थे... और उनकी मलका...' अंदर आते हुए वारिस कह रहा था।

मगर बीच ही में बोल उठी गुलनार- " खुदा के नाम के पहले जबान गन्दी मत करो जी 1' और अदा के साथ वह कमरे के भीतर आ गई ।

'गुलनार !' वारिस ने हाथ बढ़ाकर गुलनार को अपने पास खींचा। पके आम-सी गुलवार वारिस की गोद में टपक पड़ी। वारिस के अरमान भरे दिल ने गुलनार को अपनी बांहों में भर-जोर कस लिया और उसके बेचैन होठों ने उसके गुलाबी गालों पर अंगार-सा रख दिया ।

जल उठी गुळनार, बोली- 'खैरियत तो है मेरे सरताज !'

'बस, यही तो नहीं हैं मेरी जान ! और सब कुछ है...'
'क्या मतलब !' आंखों में ताज्जुब भरकर बोळी गुरुनार ।

८०

'मतलब तो साफ है चुनमुन की अम्मी !... अरे हाँ, चुनमुन कहाँ है ?'

"छोड़ो भी उसे वह तो सोया है अभी तक... तुम कहो ?'

क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता !' बारिस कहने लगा-'यह राजमहल क्या है, शैतान भानमती की पिटारी बन गया है.... रोज नया किस्सा... कल ही तो देखा तुमने, हमारे छोटे कुंवर पिस्तौल लेकर बहिश्त की तैयारी कर रहे थे... जिन्दगी क्या हुई फुटबाल हो गई.... चाहे जब ठोकर मारकर दूर कर दो। यह तो अल्लाह की मरजी से ऐम वक्त पर एनी पहुँच गई और मौत के मुँह में जाने से रोक लिया, नहीं तो गजब हो गया होता । सभी रानी साहिबा के कलेजे पर लात मार रहे हैं। अगर यह बात जमाना जान ले तो क्या कहे ?... या खुदा, बूढ़ी रानी भाँ की किस्मत कैसी लिख दी है तूने...' कहते कहते वफादार बारिस की आवाज रो-सी पड़ी ।

यह तो बताओ, रानी साहिबा का गठिया कैसा है... ठीक तो है नऽ ?'

'ठीक ही है बुढ़ी जिन्दगी आफत है गुलनार । अल्छाह करे किसी को न मिले यह ।' बोला वारिस ।

'रानी साहिबा की खिदमत में जा रही हूँ... जरा चुनमुत का ख्याल

रखना...' और उठकर खड़ी हो गई गुलनार ।

बारिस ने सोये चुनमुन पर निगाह डाली और बोला- 'चुन सुन भी सुतक्कड़ निकला तुम्हारी ही तरह। ललित को देखो, उठ कर हवा खाने के लिए मेरा इन्तजार करता होगा ।'.

मगर गुलनार ने सुना नहीं वह तब तक बाहर निकलकर रानी साहिबा के महल की तरफ कदम बढ़ा चुकी थी। अब रात का बाकी धुंधलका भी छंट गया था ।

अजीब चुप्पी छितराई है आज राजमहल के चारों तरफ !... शायद रानी साहिबा की हालत आज नाजुक हो उठी है।

सभी छोग रानी साहिबा की बीमारी से परेशान हो उठे हैं।

अचल और कुवराजी कविता भी रात-रात भर दोनों जगकर सेवा में लगे रहते हैं ! फेमिली डाक्टर दास भी हमेशा मौजूद रहते हैं। बूढ़ी जिन्दगी के दीए में दवाइयों का तेल डाल-डाळ कर उसे हमेशा जलाना चाहते हैं, उसे रोशन देखने की हसरत लिए बैठे हैं।

'कैसी हालत है डाक्टर !' अचल का स्वर-बेचैन था ।

'ठीक है, सो गई हैं।' अपने चेहरे को ऊपर उठाते हुए बोले डाक्टर दास। बूढ़ी आँखों में करुणा थी 'इन्हें सोने दीजिए, अभी ठीक हो जायेंगी। घबराने की कोई जरूरत नहीं ।'

'रात भर आप भी जग गये डाक्टर साहब। अब जाकर आराम कीजिये... जरूरत पड़ने पर वारिस बुला लायेगा...'

डाक्टर दास अपने घर जाने लगे तो बोले- कोई बात हो तो तुरन्त इनफार्म कीजिएगा...'

डाक्टर के जाने के बाद अचल अकेला हो गया वहाँ ।

रानी साहिबा सो रही थीं। बुढ़ापा कितना विवश होता है कि चैन की एक साँस लेना कठिन हो जाता है। जिन्दगी का यह आखिरी सफर कितना खौफनाक है। सोच-सोचकर कुँवर अचल नारायण की उद्विग्नता बढ़ती जा रही थी।

मायूस आँखों से एक टक माँ की तरफ देख रहा था वह। बन्द-सी पलकों के पीछे कितना प्यार और कितनी ममता छिपी है, वह जानता है और उसे तो रानी साहिबा चञ्चल से अधिक प्यार करती हैं। करें भी तो क्यों न ? वह भी तो उनके पोछे परेशान रहता है हरदम। कई दिनों से रात-रात भर जाग रहा है, खाने की सुध नहीं, खबर है तो सिर्फ रानी साहिबा की बीमारी की, चिन्ता है तो केवल उनके जीवन की ।

और चञ्चल ? वह तो आ ही नहीं रहा था अपनी माँ को देखने । अपने कमरे में बन्द होकर पता नहीं क्या करता है हर दमस ? अचल के अन्तर में तूफान उठ खड़ा हुआ था। मस्तिष्क के अंधेरे के सिवा कुछ नहीं था ।

आहिस्ते से कोई कमरे में आया और आकर कुँवर की बगल में खड़ा हो

गया चेहरे पर उसके भी उदासी छाई थी। रानी माँकी बीमारी से महल का जर्रा जर्रा रो रहा था। हवा तक आंसू बहाते बहाते गीली हो उठी थी।

'सरकार !' किसी ने धीमी और मधुर आवाज में पुकारा । सुता नहीं अश्वल ने सौर उसने सुना नहीं तो उस व्यक्ति ने धीरे से अपने कोमल हाथों से हिलाया कुवर को। स्पर्श से सजग हो उठा कुवर बोला-

'कविता ? ' भींगी आँखें उसकी ओर उठीं- 'ओह, तुम !.... क्या है... कविता कहाँ है ?'"

'कु'वरानी साहिबा महल की देख-रेख कर रही है हजुर !.... राजमिस्त्री ने सालिक को याद फरमाया है-'

सुनकर कुछ बोला नहीं कुवर । उठ कर खड़ा हो गया जाने के लिए। जाते-जाते उसने कहा- गुलनार ! माताजी का घ्यान रखना, मैं अभी आता हूँ।'

कहकर कुवर धीरे-धीरे अपने महल की तरफ चल पड़ा । आजकल उसके बहल के सामने एक स्मारक तैयार हो रहा या, रानी साहिबा की आज्ञा से। उस जगह पर जहाँ टिकोरा के विकराल साँप ने उसे डसा था। स्मारक उस नारी का था जिसमें कुंवर को अपनी जिन्दगी बेजान बनाकर जीवन दिया था ।

मैना को एक बार अपनी आँखों से देखने का ख्वाहिशमन्द हो गया था कुवर । अनिमेष नेत्रों से देख रहा था कारीगरों की उस कला को और उनके छेनी-हथौड़ों को जो बदसूरत और बेढंगें पत्थर के टुकड़ों में

चित्ताकर्षक सौन्दयं भर रहे थे।

स्मारक को देखते-देखते ऊब गया अचल तो उठ खड़ा हुआ । वहाँ भी शान्ति नहीं मिली उसे। जहाँ जाता है वहाँ ही आंसु की नदी और दर्द का पहाड़ सामने आ जाता है।

माँ की बीमारी और मैना की याद से प्रताड़ित भारी मनः लिए अचल आकर फोवारे पर बैठ गया। एकान्त पाकर उसका दिमाग और भी उड़ने लगा । मैना आँखों की रोशनी बन गई ।

८३

अतीत को पाकर वर्तमान की सुध खो बैठा कुंवर । मैना का अन्तिम स्वर उसके कानों में गूंज-सा उठा- 'परदेसी....तुमको .... मैंने... अपनी जान दी है... भूलना... नहीं...याद करते ... रहना... में... चळी....'

अव्यक्त स्वर जब उसके अन्तर में बोला तो विचलित हो छठा अचळ । उठकर खड़ा हो गया। फूलों की क्यारियों में टहलने लगा । टहलते-टहलते चञ्चल के महल के पास चला आया। दरवाजे के पास ही था कि उसके पाँव ठिठक गये । अन्दर से किसी की बात-चीत बाहर आ रही थी। एक स्वर था मधुरः किसी नारी का और दूसरा था किसी पुरुष का, कुछ भारी। बाहर खड़ा होकर सुनने लगा कुवर ।

क्षण भर के लिए मैना की स्मृति खो बैठा ।

'मुझे बार-बार आकर मत छेड़ा करो.... मैं दगाबाज हूँ..... तुम्हारा साथ

नहीं दे सकता...'

"तुम बहुत एंग्री है चञ्चल कुंवर ।' स्वर था किसी नारी का- 'हम तुमसे साँफी मांगता है...'

'मगर तुम क्षमा क्यों मांगती हो एनी !... गळती तो मेरी ही थी। अगर तुम मुझे नहीं बचाती तो, कल मैंने आत्महत्या कर ली होती... आज मुझे कोई नहीं देख पाता इस दुनिया में...' इस बार छोटे कुवर का स्वर पश्चाताप से भरा था- 'मगर दुख तो इस बात का है एनी !.... मेरे पास कुछ नहीं है तुम्हें ईनाम देने के लिए.... तुमने मेरी आंखें खोल दी हैं....'

"तुम हमको ईनाम देगी ?' एनी का स्वर था ।

'देता तो, पर कुछ नहीं हैं सेरे पास... सिर्फ जान है मेरी-ले सको तो ले लो ...'

'थैङ्क यू ।' एनी बोळी धीमे से ।

आखिरी आवाज बाहर खड़े कुँवर के कानों तक नहीं पहुंच सकी । कुछ देर इन्तजार करने के बाद आई भी तो चुम्बन की मादक ध्वति । कुंवर हटने की सोचने लगा तभी -

तुम जाओ । मुझे अपनी नजरों के आगे जाने के लिए रोक लगा दी है माँ ने.... मैं जाऊँगा तो बिगड़ खड़ी होंगी.'

"नहीं बिगड़ेगा- तुम चलती क्यों नहीं...'

अचल ने जब सुना तो वहाँ से हट गया वह। एनी चन्चल का हाथ पकड़े निकली और रानी साहिबा के महल की तरफ चल पड़ी । इधर रानी साहिबा घण्टे भर सोने के बाद उठ गई थीं । बदन की पीड़ा कम हो चली थी। बूढ़ा बदन हिलने-डुलने लायक हो गया था। कुंवरानी वहीं बैठी थी और धीरे-धीरे किसी तेल की मालिश कर रही थी उनके शरीर की गाँठों पर । तब तक एनी के साथ चन्चल दरवाजे पर आ चुका था। वह दौड़कर माँ के चरणों के पास जा बैठा ।

'माँ !' चन्चल ने कहा ।

"आ गया तू अच्छा तो है नऽ?' रानी साहिबा के प्यार भरे हाथों ने चन्चल का सर सहलाया। प्यार की चोट खाकर चञ्चल रो पड़ा । रानी साहिबा ने इधर-उधर देखा-'अरे तू भी आई है !....खड़ी क्यों है एनी। वहाँ कुर्सी पर बैठ...'

माताजी...' बाहर से किसी ने गम्भीर स्वर में पुकारा ।

'अचल है क्या ? आ इघर.... बूढ़ी आँखें इतनी दूर से तेरी सूरत नहीं देख पातीं बेटा....'

अचल अन्दर आया... पीछे-पीछे डाक्टर दास भी आये । रानी माँ को चङ्गा देख सभी खुश थे। अचल की तरफ एकटक निहारने लगीं रानी साहिबा, कुछ देर देखकर बोली
--तू उदास क्यों है अचल ! कैसी हालत बना रखी है तूने ?'

'मैं कहाँ उदास हूँ।' फीकी हँसी हँसकर कहा कुंवर ने ।
'यह तेरे हाथ में क्या है ? खत है क्या किसी का ?'

'ओह इसे तो भूल ही गया था.. यह पत्र सेदहाँ से आया है.... एक लठैत लेकर आया था... बड़े राजा ठाकुर ध्रुव सिंह का जन्मदिवस है... बुलाया है उन्होंने...'

सुनकर राजी साहिबा ने एक ठण्डी साँस ली ।

८५

बोलीं- 'बड़े भले बादमी हैं राजा साहब, तुम्हारे पिता से खूब पटती थी उसकी... जाना तो पड़ेगा ही तुझे चंचल को भी साथ लिवाते जाना || कब बुलाया है....'

'कळ ही मगर मैं तो नहीं जा सकूंगा माताजी ! चंचल जायगा... आप बीमार हैं, यहाँ मेरा रहना जरूरी है...'

अच्छा भई, चंचल ही चला जायगा.. सेदहाँ जङ्गी इलाका है, कहीं फिर तुम अजगर-सांप के चक्कर में न आ जाओ । बड़ा असावधान है यह कुँवर मेरा...' कहकर हँस पड़ीं रानी साहिबा । आगे फिर नहीं बोलीं वे। कुछ थकान की अनुभूति के कारण ।

****

टिकोरा मैना को नहीं भूल सका है तो परदेसी को भी कहाँ भूल पाया है।

परदेसी ने उसे बरबाद कर दिया। अगर मैना जीवित नहीं हो सकती तो परदेसी को भी जीवित नहीं रहने देगा टिकोरा।
चारों ओर रात्रि नीरवता बिखेर रही है। ऐसे ही समय में टिकोरा मैना की लाश लेकर विकल पड़ा है ।

खण्डहर की तरफ बढ़ता जा रहा है। चारों तरफ सन्नाटा है। मगर टिकोरा तो है अपनी धुन में मस्त । गले में लिपटा मणिधर मुँह बा-बा कर ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंकों को पी रहा है। टिकोरा के पीछे-पीछे एक काळी छाया भी जा रही है मगर उसको इसकी खबर नहीं। खण्डहर के नजदीक आकर टिकोरा एक चट्टान पर बैठ गया। पीछा करनेवाली छाया एक दरख्त की आड़ में हो गई। थोड़ी देर बैठने के बाद टिकोरा खण्डहर में घुस गया मैना को लेकर। दूर छिपी छाया ने उसे खण्डहर में जाते देखा तो वापस लौट गई। खण्डहर में जाकर टिकोरा ने साँप की मणि से रोशनी की। चारों तरफ हरी-षद्धिम रोशनी की चादर-सी फैल गई। टिकोरा ने सर उठाया तो हलकी रोशनी में उसका उदास चेहरा झलक उठा। कुछ ही दिनों में बरगद इन्सी देह सूखकर बाँस हो गई थी ।

८६

यह वही गुफा है, जिसमें से मैना और परदेसी शहर गये थे। यह वही जगह है जहाँ मैना ने टिकोरा की पीठ में छुरा भोंका था और परदेसी ने उसके सर पर पत्थर की चोट की थी।

पुरानी बातें टिकोरा की आंखों के सामने घूम रही थीं। थोड़ी देर तक विगत की स्मृति में खो-सा गया वह- मैना का परदेसी के साथ भागना, पीठ में जख्म लेकर उनकी खोज में उसका शहर जाना, मैना को पकड़ना आदि

बातें सब याद आ रही थीं उसे । परदेसी से हार कर लौट पड़ा टिकोरा.... मामूली शहर के जवान से हार गया वह, मगर उसने अपनी हार कबूल नहीं की। 'मैं हारा नहीं सोचते-सोचते सहसा चीख पड़ा विक्षिप्त टिकोरा ।

आवेश में भरा टिकोरा उठकर खड़ा हो गया और लपका उधर जिधर से एक बार शहर जा चुका था। वह परदेसी का गला घोंट देगा। अब बच नहीं सकता परदेसी । उत्तेजित, क्रोधित और पागल पहाड़ी-सा दीर्घाकार संपेरा जब दौड़ता हुआ खण्डहर के दरवाजे के पास पहुँचा तो किसी की चीख से गूंज उठा वहाँ का वातावरण। चीख उसी के गले की थी ।

***

रात की जवानी ढल चुकी थी। टिकोरा के घर के सामने की चट्टान पर सोया था सम्पू । किसी जङ्गली जानवर की आवाज से उसकी नींद खुल गई। उनींदी आँखों से इधर-उधर देखने लगा । आस-पास उसे कोई जानवर दिखाई नहीं पड़ा। उसकी नजरें जब पगडण्डी की ओर गईं तो चौंक पड़ा। एक काली छाया थी। पगडण्डी की छाती कुचलती हुई चली जा रही थी जङ्गल की तरफ । उसकी चाल में गजब की तेजी थी। थोड़ी देर ना देखता रहा सम्पु फिर लेट गया। उसे इससे क्या मतलब ? लेटते हो उसे कोई बात याद आ गई तो उठकर खड़ा हो गया। टिकोरा के घर के आगे आकर बोला- 'उस्ताव सो गये ?' वह दौड़कर अन्दर गया, वहाँ कोई नहीं था, उल्टे पाँव

वापस लौट आया। बुददुदाया- 'तो अभी तक नहीं आये उस्ताद

सुबह ही वह टिकोरा की खोज में खण्डहर की ओर चल पड़ा । अन्दर घुसकर उसने देखा... मैना जमीन पर पड़ी थी, पास ही विकराल साँप अपनी मणि के चारों तरफ घेरा डाले बैठा था । लेकिन टिकोरा?... वह वहाँ नहीं था ।

'उस्ताद ।' सम्पू ने घबड़ाये स्वर में पुकारा ।

उत्तर नहीं मिला तो उसका कलेजा धड़क उठा । व्यग्र हो वह देखने लगा इधर-उधर । कुछ दूर पड़ी एक चीज पर नजर गयी तो एकदम पीछे हट गया वह। मुँह से चीख निकलते. निकलते बची। सहसा उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। साहस करके वह उस डरावनी चीज के नजदीक गया ।

बोला कम्पित और भयभीत स्वर में- 'उस्ताद !'

टिकोरा ही था वह। गिरा था जमीन पर। आस-पास की जमीन छहू-लुहान थी । सर से खून बहकर उसके भयानक चेहरे पर जस गया था । सम्पू डगमगाते पैरों से टिकोरा के बिलकुल पास गया । काँपते हाथों से उसे स्पर्श किया। उसके बदन को हिलाया-डुलाया भी , पर निश्चल रहा टिकोरा । सम्पू ने बेचैनी से जख्मी टिकोरा की छाती पर हाथ रखा तो खुशी से चीख उठा । अभी धड़कन बाकी थी। दौड़कर वह बाहर से पानी ले आया। पानी के छींटे से टिकोरा के मुँह को तर किया उसने ।

बेहोश टिकोरा काँपा । उसके मुँह से एक आह निकली।

'उस्ताद ! आँखें खोलो उस्ताद !'

टिकोरा ने आँख तो खोल दी मगर बोला नहीं कुछ ।

पलकें खुली तो भौतर से लाल, क्रोप्त भरी आँखें इधर-उधर देखने लगी । पास बैठे सम्पू को घूर कर देखने लगा वह ।

'परदेसी ।' चीख पड़ा टिकोरा। तेजी से उठकर उसने सम्पू का गला पकड़ किया- 'तुमने सोचा था पत्थर मारने से टिकोरा मर. जायगा... जरा-सी चोट टिकोरा की जिन्दगी नहीं छीन सकती...हा-हा-हा !' सम्पू का गला कसता जा रहा था टिकोरा ।

८८

उसने उसे परदेसी समझ किया था ।

'उस्ताद !... मैं... मैं.... सम्पू हूँ उस्ताद ..... छोड़ो...' कहते हुए सम्पू ने गला छुड़ाने की कोशिश की !

'तू भाग नहीं सकता शैतान... तेरा खुन पीऊंगा मैं ।'

'उस्ताद ! उस्ताद !... यह तो तुम्हारा सम्पू है- मैं...' जोरों से चीख पड़ा सम्पू ।

आवाज पहचानी टिकोरा ने तो उसके हाथ का बन्धन ढीळा हो गया- 'तुम हो... भाग गया परदेसी, सम्पू ! भाग नहीं सकता बह शहरी साँप । मैं टिकोरा हूँ.... उसे जिन्दा नहीं छोड़ सकता मैं , ला मेरा साँप ----इतने

जोरों से बोला टिकोरा कि खण्डहर की गिरती दीवारों का कलेजा काँप छठा ।

सम्पू ने काळ-सा विकराल साँप लाकर उसके हाथों में दे दिया। टिकोरा ने साँप को जमीन पर रख दिया ।

'यह शहर जायगा सम्पू !.... परदेसी का खोजकर डॅसेगा.... फिर वापस लौट आयगा हा हा हा!' अट्टहास करके टिकोरा मन्तर पढ़ने लगा । मगर यह क्या ? - मन्त्र की चोट खाकर भी साँप हिला तक नहीं, और दिन तो तूफान बन जाता था। साँप को निश्चल देखकर टिकोरा का क्रोध भभक सठा। सम्पू भी चकित आँखों से तमाशा देख रहा था। टिकोरा ने अपना माथा पकड़ लिया । क्या हो गया है उसे ? मन्त्र सोचने जगा तो दिमाग में अँधेरा और तूफान के सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ा बसे ।

'उस्ताब , क्या हो गया है तुम्हें?' ताज्जुब से बोला वह ।

'पागल हो गया मैं सम्पू । मैं पागल हो गया हूँ। टिकोरा को मैना ने खा लिया फिर भी परदेसी का बच्चा बच नहीं सकता मेरे हाथों से ।' उत्तेजित टिकोरा उठकर खड़ा हो गया ।

"चलो घर चलते हैं, मास्टर।"

'मैं यहां से नहीं जा सकता सम्पू.... यहाँ राहत मिळती है मेरे दिल को। जानते हो- इसी खण्डहर में मेरा जीवन बरबाद हुया, यहीं पर मैना ने मेरी पीठ में छुरा भोंका, यहीं पर मैं

पागल हुआ। मैं नहीं जा सकता यहाँ से... यहीं पर मर जाऊंगा मैं । चले जाओ...' चीख पड़ा टिकोरा पागलों की तरह- जाओ ! अगर तुमने मुझे उस्ताद माना है तो मेरा हुक्म सुनो, मेरा नाम लेकर शहरी परदेसी का गला काट लेना.... मेरी रूह को शान्ति मिल जायगी...' कहते-कहते जमीन पर सर पटकने लगा वह । बड़ी मुश्किल से सम्पू ने टिकोरा को काबू में किया। पानी लाकर पिलाया। शीतल जल अन्दर पहुँचा तो टिकोरा को चेतना छोटी।
उसने पूछा- 'तू यहाँ कैसे आया सम्पू !'

'तुम्हें चोट कैसे लगी उस्ताद !' सम्पू ने पूछा ।

'मुझे मालूम नहीं।'

सम्पू बाहर गया और किसी पत्ती का रस लाकर उसने जख्म पर लगा दिया। कुछ आराम मिला टिकोरा को ।

"तुम जाओ सम्पू !... मुझे अकेला छोड़ दो...'

सम्पू चला गया ।

***

पीपल के पेड़ के नीचे सभी संपेरे एकत्रित हैं। मशालें जल रही हैं। सभी के मुख पर भय की छाया, रात की कालिमा की तरह छा गई है। सामने ही पीपल के वृक्ष के नीचे, चबूतरे पर बेढंगे पत्थर की मूरत रखी है जो

संपेरों के देवता नाग भगवान की है। सभी के हाथ में तुम्बी है। बजा-बजाकर भगवान को रिझा रहे हैं संपेरे, गाँव से मैना की रूह को भागने के लिए ।

चिकोरा भी मौजूद है मगर अकेला, चमकी नहीं है उसने साथ । तभी किसी सँपैरे की नजर दूर हिलती-डुलती छाया पर पड़ी। उसके इशारे पर महुवर की आवाज बन्द हो गई। उसी छाया की तरफ देखने लगे सभी। कमजोर दिलवालों का कलेजा धक् धक् करने लगा ।

'मैना की रूह आ गई... टिकोरा भी देख ले अपनी आँखों से अब...' किसी ने चिकोरा के कानों में फुसफुसा कर कहा।
'आज तो देखना ही पड़ेगा... नहीं देखेगा तो जायेगा कहाँ ?....

छबीले जाकर तू कह दे टिकोरा से-आकर देख ले अपनी मौत को...' चिकोरा ने एक संपेरे से कहा ।

और उसका हुक्म नहीं टाल सका वह संपेरा... आजकछ ाँव में चिकोरा का रङ्ग था। सभी उसके इशारे पर चलते थे । आज चिकोरा तैयारी करके आया है. या तो खुद रहेगा गाँव में या टिकोरा ही रहेगा। छाया धीरे-धीरे जङ्गल की झाड़ियों की तरफ भागी जा रही थी और सभी संपेरों के साथ चिकोरा छबीले का इन्तजार कर रहा था बेचेन-साः ।

तभी दौड़ा-दौड़ा छबीले आया। हक्का-बक्का था वह । बदहवास होकर बोला- 'टिकोरा घर में नहीं है।'

सुनकर अचम्भे में पड़ गया चिकोरा- 'क्या कहते हो तुम ?'

'मैं ठीक कहता हूँ !'

'और वह सम्पू ?...' उठकर चिकोरा खड़ा हो गया ।

वह भी नहीं....'

दोनों के एकाएक गायब हो जाने से संपेरे चकित हो उठे । उधर मैना की रूह जङ्गल की तरफ बढ़ती ही जा रही थी।

'डर के सारे छिप गया, आओ इस रूह से निपटा जाय ।'

गाँव वाले रोकने लगे चिकोरा को ।

बोले अपनी जान जोखिम में मत डालो भाई !'

मगर चिकोरा ने किसी की नहीं सुनी। उसके पीछे गाँव के हिम्मती संपेरे दौड़े। चिकोरा छाया से दस कदम पीछे चल रहा था । तेजी से छाया एक झाड़ी में घुस गई। चिकोरा के पाँव थम गये । अब क्या करे वह ? उसने हाथ के साँप की ओर देखा ।

जमीन पर से चुटकी भर धूल उठाई उसने और उस पर एक फूंक मारी। हाथ का साँप फों कर उठा। मन्त्र से बँधे साँप को झाड़ी में फेंक दिया उसने । गाँव के संपेरे चुपचाप उसकी लीला देख रहे थे। वे सोच रहे थे- भला रूह का सांप क्या बिगाड़ सकता है ? चिकोरा के होंठ बुदबुदा रहे

थे। लगातार साँप पर मन्तर फेंककर उसे उत्तेजित कर रहा था वह। तभी किसी के गले की चीख़ से नीरव रात्रि जोर सुनसान जङ्गछ की शांति जाग पड़ी। आवाज किसी नारी के गले की थी।

'वह मारा !' खुशी से उछल पड़ा चिकोरा- 'आओ टिकोराकी खबर लें । बदजात! घर के किसी कोने में छिपा होगा...'

मैना की रूह को मिटाने के बाद संपेरों का सारा भय भाग गया था । नवई ताकत आ गई थी उनमें। आवेग और जोश में भरे सभी टिकोरा के घर के आगे उमड़ पड़े थे। चिकोरा और उसके साथियों ने छोटे से घर का जर्रा-जर्रा छान डाला मगर पता नहीं लगा टिकोरा का। लोगों ने उसके घर में आग उगा दी।

उधर अपने घर से बेखबर टिकोरा खण्डहर में सम्पू के साथ मैना की लाश देख रहा था।

टिकोरा ने मैना की लाश को दीवार से लगाकर खड़ा कर विया था। आज मैना को सजाया था उसने मैना का बेजार शरीर जङ्गली फूलों से ढँका था ।

बोळ रहा था टिकोरा- 'मैना रानी! आज तुम सेरे पास हो - तुम्हारा परदेसी बहुत दूर है यहाँ से.... कहा था न मैंने-इन्सान जब ताकत से नहीं जीत सकता तो पीछे से वार करता है धोखा देता है। दगाबाजी पर उत्तर चलता

है... और आज टिकोरा दुनिया से ऊपर है.... तुमने खूब सताया मुझे । आंखों की पुतलियाँ राह देखते-देखते थक गई...'

पैशाचिक अट्टहास कर उठा टिकोरा- 'देखो यह साँप उस्ताद का उड़ने वाला साँप भी मेरे पास है, तुमने कहा था-एक दिन तुम्हीं को काटेगा यह कि साँस भी नहीं ले पाओगे तुस.... आज तो यह भी मेरे हुक्म के बगैर फन नहीं फैला सकता-समझी ? आज टिकोरा तुम्हारे साथ खेलेगा... मैं अपनी हसरत पूरी करूंगा । कोई बचा नहीं सकता तुम्हें...' कहता हुआ टिकोरा मैना को अपनी बाँहों में कसने के लिए लपका ।

सम्पू बासना की आग में जलते उस्ताद को देख रहा था। एका-एक टिकोरा को मैना की तरफ लपकते देखा उसने; तो

दौड़ पड़ा । आज क्या करने जा रहा है उसका उस्ताद । बीच ही में उस्ताद फेरई का भयानक साँप फन फैलाये टिकोरा की बोर देख रहा था। मैना की सूरत से प्यास बुझाते-बुझाते उसे भूख ' लग गई थी। मैना के नजदीक पहुँचा भी नहीं था टिकोरा की आर्त्तताद कर उठा वह । जमीन पर लड़खड़ा कर गिर पड़ा भयानक सँपेरा । पणिधर के फन पर पैर पड़ गया था उसका और क्रोध में आकर विकराल साँप ने डस लिया था उसे ।

टिकोरा फौरन उठ खड़ा हुआ। तब तक संपू ने भी सांप को मन्तर से बाँध लिया।

'अभी नहीं मर सकता में... मैना रानी काट तो लिया सांप ने मगर टिकोरा की ताकत इतनी कम नहीं कि इस साँप के डसने से छन भर में मिट्टी बन

जाऊं.. जहरीले सांप से अधिक जहर है मेरे भीतर.... आओ चलो... तुम्हारे परदेसी को तुम्हारी आँखों के सामने यह साँप काटेगा, उसे छोड़ नहीं सकता...' टिकोरा ने तेजी से मैना को अपनी थरथरानी भुजाओं में उठा लिया फिर लड़ख़ड़ाते पैरों से खोह से भयानक अंधेरे की तरफ दौड़ पड़ा फुफकारते हुए ।

टिकोरा को भागते देखा सम्पू ने तो चीखा- 'उस्ताद !'

कोई अट्टहास कर उठा उसके पीछे । पलटकर सम्पू ने देखा तो सन्न रह गया- चिकोरा के साथ कितने ही संपेरे दरार की राह मशाल लिए घुस पढ़े थे ।

'यहाँ हो तुम लोग.... भागने की कोशिश पत करो सम्पू ?' दो पग आग बढ़ा चिकोरा- 'तुम्हारा उस्ताद गया, हा हा हा... चोट भूला नहीं दगाबाज '

कहते-कहते चिकोरा की नजरें दूर पर रेंगती किसी चीज पर पड़ी तो दौड़कर उठा लिया उसने उसे । बोला- सांप यहीं छोड़ गया करैत ? चुप क्यों खड़ा है तू ' चिकोरा का श्वर क्रूर हो उठा था।

परदेसी को मारने की जल्दी में साँप भी चूक गया था टिकोरा ।

चिकोरा !' भयभीत सम्पू गिड़गिड़ा उठा- 'मुझे साफ करो भाई ! मैं बहक गया था ।'

'हा-हा-हा... तो जा उसी के पास जिसने तुझे बहकाया ।' कहकर चिकोरा ने मणिधर को उसकर पर फेंक दिया ।

क्रोधित साँप सम्पू के गले में लिपट गया और... और उसने जहरीले दाँतों को उसकी छाती में गड़ा दिया। दूसरे ही क्षण सम्पू जमीच पर पड़ा था। चिकोरा अपनी विजय पर खिलखिला उला । आज उसके रास्ते के सभी काँटे हट गये थे अपने आप। बाहर निकला वह तो हुक्म दिया उसने - 'इस दरार में पत्थर भर दो ताकि शैतानों की रूह गाँव में न जा सके...'

संपेरों ने ढकेल कर एक भारी चट्टान को दरार में गिरा दिया। रास्ता बन्द हो गया। सभी ने शान्ति की साँस ली ।

'आओ जरा मैना की रूह को झाड़ी में देखें, कैसी है...' चिकोरा ने कहा तो उसके पीछे सभी चल पड़े ।

मशाल की रोशनी से पूरा जङ्गल दिन-सा प्रकाशित हो उठा था । जब संपेरों का गिरोह झाड़ी के पास पहुंचा तो चिकोरा ने सभी को बाहर ही रोक दिया। खुद झाड़ी में घुस पड़ा, हाथ में मशाल लिए। मैना की रूह पर जब नजर पड़ी तो उसके ऊपर आसमान फट पड़ा-

चमकी ' चीख पड़ा वह।
वह चमकी ही थी। छैला की याद ने उसे इतना पागल कर दिया था कि बावरी हो नींद में भी उठकर अपने छैला को खोज रही थी। चिकोरा करुन नेत्रों से चमकी के चेहरे पर छाई खामोशी को देख रहा था। उसने धीरे-धीरे चमकी को उठाया। इस वक्त गम्भीर था वह । उसे उठाकर घने जंगल की ओर चला ।

'चिकोरा !' कुछ संपेरे रोकने छगे उसे ।

'चिकोरा टिकोरा नहीं, जो चमकी की लाश को कलेजे से लगाकर बेकरारी मोल ले... जाओ तुम लोग... मैं इसे नदी में फेंक कर आता हूँ अभी...' लुटा संपेरा आगे नहीं बोल सका । उसके दिल का दर्द उभर आया मगर था मगर वह चुप ही था।

९४

इसके पाँव धीरे-धीरे चल पड़े नदी की तरफ

***

खंडहर से छड़बड़ाता टिकोरा नदी के किनारे निकला । विकराल साँप का जहर धीरे-धीरे चढ़ता जा रहा था , मगर कसमसाती जिन्दगी को संभाले था वह, सिर्फ परदेसी केखून से अपनी प्यास बुझाने की खातिर । मैना उसके कन्धे पर थी। मौत के थपेड़ों को सहता, लड़खड़ाता, जिन्दगी की एक-एक साँस सँभाले बढ़ता जा रहा था टिकोरा। मणिधर का वाहक विष धीरे-धीरे घुल रहा है उसकी छोटी पहाड़ी-सी दीर्घाकार काया में। मरने से पहले वह परदेसी से बदला लेना चाहता है। अगर उसके नाम जिन्दगी नहीं लिखी है तो परदेसी को जिन्दा भला क्यों रहने देगा वह ।

'मैना !' उसने टूटती आवाज में पुकारा ।

मगर मैना उसके कन्धे से उड़ गई थी। खण्डहर से तो भैना को लेकर चला था वह । कहाँ गई मैना ?

टिकोरा परदेसी के घर के बिलकुछ पास पहुँच गया है। ज्यों-ज्यों वह अपने

बैरी परदेसी के पास पहुँचता जा रहा है, त्यों-त्यों उसके अन्तर की आग लपटें उबलती जा रही है। उसकी भवें तनती जा रही है, पाँव बढ़ते जा रहे हैं। लाल-लाल खूनी आंखें परदेसी को खोज रही हैं।

आज नहीं बच सकता मैना का परदेसी उसे क्या पता है कि थोड़ी देर बाद दुनिया से उसका जनाजा उठ जायेगा । वह तो बीमारी की हालत में विक्षिप्त पड़ा है बिस्तर पर । कविता उसके पास है। अचल की विचित्र बीमारी से सभी घबड़ा उठे है। डाक्टर दास रोज इन्जेक्शन देकर उसके शरीर को छलनी बनाये दे रहे हैं। फायदे का कोई चिह्न कुंवर के चेहरे पर प्रकट नहीं हो रहा है। रानी माँ कुछ ही स्वस्थ हो पाई है। एक तो बूढ़ा शरीर और साथ में गठिया का दर्द उस पर बेटे की बीमारी की चिन्ता । माता का ममतामय हृदय चोट पर चोट खाकर भी

चुप है और आज तो टिकोरा कुंवर अचल नारायण के आखिरी दिन का परवाना लेकर आ रहा है।

कुछ देर जिन्दगी की साँस ले फिर तो...

***

पहाड़ी प्रदेश के आँचल में बसा हुआ बहुवारी ग्राम जाग उठा है। सूरज की किरणें छोटे-से खुशनुमा गाँव के चप्पे चप्पे में फैल गयी हैं। बाँस-फूस से सँवारा महुवारी बढ़ा ही मनोहारी है। गाँव के आखिरी छोर पर पश्चिम की ओर एक शिवाला है। शिवाले की बगल में ईंट और पत्थरों के जोड़ पर

खड़ा है महल नुमा एक मकान, जिसे लोग हवेली कहकर सम्बोधित करते हैं। हवेली में रहता है ठाकूर सजीवन सिह का बेटा सजळ नारायण। बही गाँव का राजा है। गाँव वालों की निगाह में अपने राजा के प्रति अत्यधिक आदर और मान है।

सजल तीस-पैंतीस का जवान रोबीला चेहरा, चुस्त ओर सुडौल अङ्गों में अजीब आकर्षण । उसकी आँखों का संकेत ही यहाँ का कानून है। अपने दिवङ्गत पिता की भाँति ही शिकार का शौकीन , पत्नी बेचारी तो तभी मुख मोड़ कर चली गई, जब उसके हाथों की मेंहदी भी नहीं छूटी थी। दूसरी शादी करने का शौक नहीं हुआ । छोटा भाई था वह भी जङ्गल में खो गया। बची है सिर्फ छोटी बहन रचना ।

सुबह हो गई है। हवेली का पुराने ढङ्ग का सिह दरवाजा खुल गया है। अपने राजा का जुहार करने सभी टूट पड़े हैं। रात के पहरे के लठेत आँखों में जगमगाती नींद लिए अपने-अपने घर चले गये तो उनके स्थान पर दूसरे तैनात हो गए हैं।

रात में शान्त रहने वाला गाँव दिन के उजाले में गतियार हो उठा है। छोटे और क्या बढ़े; सुबह किसी का मुँह देखने के पहले आँखें मळते हुए शिव जी का दर्शन करने मन्दिर में इस तरह टूट पड़े हैं, जैसे लोग किसी अपरिचित और अनोखी चीज को पहली बार देखने के लिए उमड़ पड़ते हैं।

शिवलिङ्ग के पास ही मन्दिर के पुजारी महोदय नेत्र बन्द किये दाहिने हाथ

से घण्टा निनादित करते हुए 'बम-बम-भोले' कर रहे हैं। श्रद्धानवतः ग्रामीण अवघड़दानी के चबूतरे पर माथा टेक कर भगवान के चरणों में स्वयं को अर्पित कर रहे हैं।

हर तरह से खुशहाल है ठाकुर सजल नारायण का महुवारी ग्राम । अपने सरल एवं प्रभावशाली व्यक्तिरथ को दर्शन देवर सजल अपने खास कमरे में चला गया है। दोनों हाथों को पीठ की ओर बांधे दीवार पर टंगे शेर, चीता, रीछ, अजगर तथा अन्य जङ्गली जानवरों के चमड़े को निहार रहा है। सामने साफ-| सुथरी गद्दी लगी है, दो मसनद दीवार से उठेंगे हैं। कोने में खड़ी हैं दो बन्दूकें । सजल ने एक बन्दूक उठा ली और उसकी सफाई करने लगा। नली में आँखें डालकर देख ही रहा था कि किसी ने आकर पुकारा- 'भैया...!'

'क्या है ?' सजल ने पूछा। आँखें बन्दूक की नली से हटकर बावाज की ओर उठीं, देखा- सासने थी रचना ! कोयल-सी वाणी और गुलाब-सी देह लिए ।

बोळ नऽ... कहना क्या चाहती है तू...!' स्नेहमय स्वर था।

'कहा मानोगे तुम ! जाने दो भैया... तुमसे कहना न कहना दोनों बराबर.... पानी पर लकीर खींचने से लाभ ही क्या ?' कहती बह भीतर चली गई ।

'रचना .... सुन तो!' कहता हुआ सजल भी उठ खड़ा हुआ ।
सजल की पुकार रचना को रोक नहीं सकी। स्वयं उठकर उसके समीप जाना पड़ा। वह खम्भे के सहारे खड़ी थी। उसने गौर से देखा, रचता का

सौम्य मुख-मण्डल उदास था ।

'नाराज हो गई रचना '.

'नाराज नहीं हूँ भैया !... रूठ गयी हूँ। अब मनाओ मुझे !...' कहते-कहते रुक गई वह ।

'हँसी की बात भी कितनी उदासी भरी होती है तेरी...! व्यथित होकर कहा सजल ने - पता नहीं तीव-चार महीनों से क्या हो गया है तुझे ...'

'मुझे कुछ नहीं हुआ है भैया !.... कुछ हो गया है तुम्हारी नजरों को ही....' होठों पर फीकी हँसी लाकर बोली रचना ।

'अपनी फिलासफी अपने पास रख । शहर में पढ़ क्या आई बहस करने की लत लग गई। अच्छा अब मतलब की बात कर.... क्या कह रही थी तू ! मुझे बहुत काम करता है।'

'मतलब की बात तुम्हीं करते हो....मैं तो नहीं करती - तुम बड़े मतलबी हो भैया ?'

'अरी रचना !... क्या बकझक लगा रखी है तूने... !... क्यों दिक कर रही है अपने भैया को... हाय राम-हाय सीता । यह लड़की तो न अपने चुप रहेगी न दूसरे को दम लेने देगी.... तू खड़ा क्यों है बेटा !... बैठ नऽ !' -- परोसन भी आ गई

मैं कोई बूढ़ा थोड़े ही हूँ दादी कि कमर दुखने लगे, मुझे वसुली के लिए पहाड़पुर जाना है...' कहकर जाने लगा सजल ।

'सुन सजल !' परोसन ने आदेश एवं प्यार से कहा- मत जा तू वसूली के लिए, मुन्शी कारिन्दे क्या सर गये हैं सब...'

'अभी तो जी रहे हैं सभी...' हँस कर कहा सजल ने ।

'जी रहे हैं तो वही जायेंगे। खिला-विलाकर हाथी बनायेगा क्या ?... हाय राम हाय-सीता ! लड़के की अकल मारी गई ।'

'गलती करने वाले के लिए मेरे पास कोई क्षमा नहीं दादी.... एक-एक को गोली मार दूंगा ?' कहता हुआ तेजी से बाहर चला गया सजल ।

'तुम्हारी नहीं सुनेंगे दादी ! भैया अपने मन के हैं... आह ।' रचला के गले से कराह निकली ।

क्या हुआ रे !' आह सुनकर चौंक पड़ी परोसन ।

' 'पेट में दर्द उठा है दादी !... जाओ घर के भीतर...'

दोनों हाथ से पेट दाबे रचता पलंग पर आकर बैठ गई !

'हाय राम... कौन-सा रोग पाल लिया तूने !...जब से शहर से आई है... कभी चैन से नहीं रहती - कभी सर वर्द तो कभी

पेट दर्द...' बोली परोसन ।

रचना की पीड़ा बढ़ती जा रही थी। रेत पर पड़ी मछली की हरह छटपटा रही थी। करवटें बदल कर आराम हासिल करना नाहती थी, किन्तु पेट का दर्द था कि कम होने का नाम नहीं हे रहा था। रचना की परेशानी देखकर परोसन दादी को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। चेहरे पर 'हाय राम-हाय सीता' का भाव उग-मिट रहा था। थोड़ी देर बाद स्वस्थ हुई रचना ।

'दादी !... जरा पानी पिला दो !'

दौड़कर गिलास में पानी ले आयी परोसन दादी। रचना ने ठण्डे जल का पान किया। पानी पीते ही मिचली आने लगी । ओक्-ओक करती पनारे पर जा बैठी। उसके इस रोग का क्रम महीनों से जारी था। अपनी इस विचित्र बीमारी को रचना हमेशा तरह देती आई है। रचना के लिए यह बात महत्व भले ही न रखती हो किन्तु ममतामयी परोसन को तो एक चिन्ता ने आ जकड़ा। पहली बार तो देखा था परोसन दादी ने पेट दर्द । सर दर्द तो जानती थी वह लेकिन कै की बात तो बिल्कुल नई थी उसके लिए ।

इतने दिन से रचना सभी से अपना रोग छिपाती जा रही है। यहाँ तक की सजल को भी अब तक नहीं बताया है उसने ।

थोड़ी देर हँसने-बोलने के बाद रचना के पेट में पीड़ा पुनः होने लगी। परोसन रचना की बेचैनी इस बार चुपचाप देखती नहीं रही। उसके बूढ़े हाथ-रचना के पेट को भी सहलाने के लिए दौड़ पड़े । रचना की पड़ोसिन दादी, जो हमेशा सजल और रचना पर अपनी ममता लुटाने के लिए उद्यत रहती है, जिसने माँ के मर जाने पर रचना को अपनी बूढ़ी पलकों की सेज पर सुलाया था... जिसने दुःख सुख के पीछे आराम की जिन्दनो की साँस को दम नहीं लेने दिया। जिसने प्यार भरे तमाचे को चोट से तराश कर

रचना जैसी प्रतिमा का निर्माण किया, वही परोसन दादी ! चौंक पड़ी, उसकी आँखें आश्चर्य से फैल गयीं ।

९९

उसने रचना के पेट पर से अपना हाथ हटा लिया । रचना छटपटात्ती रही। उसने रचना का पेट उघाड़ दिया। बूढ़ी आँखों की तितर-बितर रोशनी बटोर कर ध्यान से उसके पेट को निहारने लगी । कुछ देर तक निहारती रही। यह क्या देख रही है परोसन ! रचता का पेट फूला क्यों है? क्या है रचना के पेट में.... विचित्र-विचित्र शङ्खाएँ परोसन के मन में साँप की तरह फन उठा कर फुफकारने लगी।

परोसन का बूढ़ा दिल धड़क उठा। रचना तो ऐसो नहीं थी। जरूर यह पाप शहर का है और गांव की स्वच्छ हवा, शीतल जल, पान करके विशाल हो रहा है। जब रचना को पड़ने भेजा जा रहा था तभी परोसन ने अपत्ति की थी। उसने शहर की गन्दगी के बारे में अपने पति से सुना था और उसका सर भन्ना उठा था ।

शुरू से ही शहर की विरोधी रही है परोसन ! इस परिवार के दो दीपकों की रोशनी बुझा दिया शहर की विषैली हवा ने। छोटे ठाकुर साहब का अनुज शहर की कोठी में हो बिगड़ कर माटी हो गया था। रामगढ़ जङ्गल में शिकार खेलने गया तो फिर वापस नहीं लौटा। रचना शहर की दूषित हवा से अपनी सुरक्षा नहीं कर सकी। अपनी और अपने खानदान की नाक ही कटा दी। आज ही परोसन शहर की कोठी बेच देने की सलाह देगी । सोचते-सोचते उसकी आंखों की पुतलियों की छाया में जवानी के दिन भी हँस पड़े ।

उस वक्त जवान थी परोसन। पैर जमीन पर तो पड़ने का नाम ही नहीं लेते थे । किन्तु हाय री किस्मत । जवानो के दिन तो आँखों में ही गुजर गये। यौवन की आग बुझ गयी तो उसने एक बच्चे की भीख भगवान से माँगी। पत्थर के भगवान को मनाती रही वह, मगर उसकी गोद विधवा की माँग की भांति खाली ही रह गई। हवेली में आना-जाना रहता था उसका। उसने अपना सारा प्यार, सारी ममता एकत्र करके ठकुराइन की सन्तान को देना प्रारम्भ किया। उसे असीम आनन्द का अनुभव

होता । दिन गुजरे, बच्चे अनाथ हो गये। पहले ठकुराइन चली गई. फिर ठाकुर भी.... उस समय लड़के तो बड़े हो चुके थे; किन्तु रचना, उस उद्यान की पहली कली थी जिसे हवा का झोंका स्पर्श भी नहीं कर पाया था। परोसन ने उसे अपने आंचल में जगह दी । रचना बढ़ने लगी, मां की कमी उसे कभी खटकी नहीं। किन्तु वही रचना, अपने खानदान की मर्यादा भूल बैठी।

अपने मन की शान्ति के लिये उसने सूरज से चमकते दिवंगत पुरखों के मुख पर कालिख पोत दी। दुनिया सुनेगी तो क्या कहेगी ? सजल की ओर लोग बिजली की तरह उँगलियाँ उठायेंगे और वह देखता रह जायगा ? नहीं, इसके पहले कि खानदान की इज्जत धूल बने, वह मसल देगा रचना को। अपना सर उठाने के लिए रचना का सर काट लेगा वह। परोसने के मन में आया कि सजल को सारी बातें बता दें, किन्तु जब उसने काफी गौर से सोचा तो कहना उचित नहीं समझा। लेकिन परोसन कब तक रचना का पाप छिपायेगी ? क्या करे परोसन, कुछ सोच नहीं पा रही थी।

कुछ तो करना ही पड़ेगा। उसके सिवा इस स्थिति में रचना का सहायक कोई नहीं! कितनी खतरनाक भूल कर बैठी है रचना, जवानी की उमंग में ।

'दादी, क्या हो गया दादी मुझे ?' रचता ने गम्भीर परोसन को ना कहकर हँसाना चाहा ।

परोसन क्या बोलती ? भला कैसे बताये वह कुछ ही दिनों में मां बनने वाली है।

'सुन रचना ! तूने भारी भूल कर दी है...'

'कैसी मूल दादी... किसी का खून तो नहीं किया मैंने ?'

'कैसे बताऊँ तुझे... तूने अपना खून किया है... पुरखों के मुँह पर कालिख पोत दी है तूने!' कहकर रोने लगी परोसन ! उसका दिलबज्रपात से टूक-टूक हो गया था। जब रचना की आंखें उठकर अपनी दादी के चेहरे पर टिकीं तो स्तब्ध रह गई । सचमुच रो रही थी परोसन ! उसकी बूढ़ी पलकें जवान बुदें

ढुळका रही थीं। रचना की सारी हँसी उड़ गई ।

उसने जीवन में दूसरी बार परोसन की आँखों में आंसू देखा था । पहली मरतबा तब रोई थी उसकी दादी, जब वह यहा पढ़ने जा रही थी। परोसन उसे घण्टों कलेजे की हड्डियों में कसे रोती रही। वह जान गई थी कि तीव्र

पीड़ा के आघात से परोसन दादी बांसू बहाती हैं। छोटा-मोटा दुःख तो उनके जीवन में मामूली बात है। अवश्य कोई गम्भीर बात हुई है।

रचना गम्भीर हो उठी- 'तुम रो क्यों रही हो दादी ?'

'रोती कहां हूँ ?' अपनी आंखें पोंछ ली परोसन ने ।
'मेरा दर्द देखकर ही तो ---- पता नहीं मुझे क्या हो गया दादी ... लगता है, पेट में कोई जानवर चळता हो । तुम चिन्ता व करो, ठीक हो जायगा.... मगर तुम रोया न करो, तुम्हें रोते देखकर मुझे भी रोना आ जाता है।'

परोसन रचना के भोले चेहरे की ओर देख रही थी। कितने निश्छल है रचना, किन्तु छळ ली गई ।

'एक बात बतायेगी तू ?' परोसन ने गम्भीर होकर पूछा।

'तुमसे कुछ छिपाया है दादी !... पूछो !'

बता रचना ! तेरी इज्जत का पापड़ क़िसने बेला है.?...

'मेरी समझ में तो खाक पत्थर कुछ नहीं आता क्या कहलवाना चाहती हो दादी ? तुम तो पहेली बन रही हो आज --रचना खीझ भरे स्वर में बोली ।

'तो सुन ले... औरत भले ही अपने पेट में कोशिश करके बात छिपा ले, किन्तु पाप नहीं छिपा सकती... अपने पेट पर हाथ रख कर देख । देख कि पका फोड़ा होता जा रहा है' कहते कहते रुक कर परोसन ने रचना का चेहरा पढ़ा ।

रचना का मुख-मण्डल भावहीन था । 'लड़की तो भोली है। जवान हो गई पर इशारा वहीं समझती .. "
अरी बनो ! तू मां बनने वाली है....!'

'मैं मां बनकर क्या करूँगी दादी। भैया सुनेंगे तो क्या

कहेंगे ? डूब मरूंगी कहीं जाकर मगर खानदान पर आंच न आने दूंगी।' रो पड़ी रचना । उसके ऊपर आसमान फट पड़ा ।

'चुप रह, गळती की है तो हिम्मत से काम ले...'

'मैं निर्दोष हूँ दादी ! मुझे पता नहीं यह सब कैसे हुआ ?'

यह सब मदहोशी का परदा पड़ जाने से होता है बेटी '

'चाहे जो कह लो...' रचना सिसक पड़ी ।

उसकी अन्तर-वेदना फूट पड़ी। वह तो हमेशा सजग रही । सपने में भी उसकी बांखें खुली रहती थीं। जवानी का हर कदम फूंक-फूंक कर रखती थी। गिरता तो वही है जो आसमानव देख-कर चलता है या आंखें मूंद कर... रचना ने तो न कभी आकाश निहारा न पलकें ही झपकाईं; तो हो कैसे गया यह सब ?

विकट प्रश्न रचना के दिमाग में उठ रहा था ।

****

आज सजल को वसूली के लिए पहाड़पुर जाना है। सुबह से ही तैयारी कर रहा है। वसूली तो होगी ही ! हो सका तो शिकार भी खेलेगा। आहट सुनकर चौंक पड़ा सजल ।

' ओह दादी -तुम हो ।'

'हां, कहीं जा रहा है तू !'

'पहाड़पुर वसूली के लिए, बताया तो था तुम्हें, भूल गई ?'

'भूल गई बेटा ! बुढ़ापे ने मति भ्रष्ट कर दी है।'

'आज रचना नहीं दीख पड़ी। सोयी है क्या अब तक ? आज तो जगाने भी नहीं आई मुझे...' कहते-कहते कुछ गम्भीर हो गया वह । फिर बोला- 'एक बात है दादी। मगर...'

'अगर-मगर क्या बेटा !.... कहो न साफ-साफ । कोई भेद की बात होगी तो अपने बुढ़ापे की तरह सँभाल रखूंगी... औरतों की जबान बेळगाम होती है लेकिन मैं तो तेरी मां हूँ बेटा !'

वह सजल के पास खिसक आई। ध्यान से सुनने लगी ।

'रचप्ता तो जवान हो गई अब ?'

'तब क्या बच्ची ही रहेगी हमेशा ? मतलब क्या है तेरा ?'

१०३

'यही की जवान नारी घर की लाज होती है। नारी की लाज दूसरे के घर में ही शोभा धारण करती है अपने घर में तो काँटा बनकर दूनिया की नजरों में पड़ जाती है उसे कौन सा रोग लग गया है ? तुम जानती हो दादी ?' सजल ने सर उठा खुळी आंखों से परोसन दादी को देखा ।

रोग के बारे में सजल के मुख से सुनकर घबड़ा उठी वह।

परोसन को चुप देखकर पूछा सजल ने- 'कौन-सी बीमारी है दादी, पूछा है कभी तुमने ?... पूछकर बताओ !... उसे मनहूम देखकर मेरा दिल बैठने लगता है।'

बच्चों की बीमारी तो ओस होती है, दिन चढ़ते ही उड़ जायगी।' परोसन ने सान्त्वना दी।

आश्वस्त भी हुई यह जानकर कि रचना की बीमारी के बारे में अनभिज्ञ है सजल ।

'रचता को बुलाओ दादी ! जरा देख हूं.... बाहर जा रहा हूँ न ? आवश्यक कार्य पड़ जाने पर शायद कल न आ सकूं।' परोसन रचना को बुलाने चल पड़ी ।

और रचना । जब से उसने सुना है अपनी दादी के मुख से कि उसे गर्भ है तब से उस पर पहाड़ टूट पड़ा है। उससे यह भूल कैसे हुई ? कब हुई ?

ऐसी स्थिति में क्या करे वह ?

मौत की ओर कदम बढ़ाती है तो भैया की आवाज उसके पैरों को पकड़ लेती है। उसे कितना प्यार करता है सजल ।

अगर सजल को उसके पेट के पाप के बारे में मालूम हो जाए तो....तो क्या रचना को कभी प्यार करेगा। सजल ठाकुर अपना अपमान नहीं सह सकेगा। फिर क्या करे रचना ? वह तो कहीं की नहीं रही अब ।
तभी चौंक पड़ी वह किसी के पैरों की आहट सुनकर । उसने देखा, सामने परोसन दादी थी ।

'चळ बेटी तुझे ठाकुर बेटा बुला रहा है... हाय राम, हार सीत्ता ? यह क्या हालत बना रखी है तूने ?' रचना के उदास मुख को देख कर बोळी परोसन दादी- 'पागल मत बनो रचना! मैं सारा इन्तजाम कर दूंगी...'

१०४

बिना उत्तर दिये रचना परोसन दादी के पीछे हो ली। परोसन दादी को देखकर उसके दिल को सहारा मिल जाता है । लेकिन दादी बार-बार उसे दोषी क्यों बनाती हैं? उसे तो यह भी नहीं पता कि गर्भ कैसे ठहर गया है। शहर में उसका कोई पुरुष साथी तो था नहीं और नर-नारी के सम्पर्क के बगैर यह असम्भव है... इतना वह जानती है ! अजीब उलझन है। उदास चेहरा लिए रचना सजल ठाकुर के सामने खड़ी हो गई ।

"पास आ रचना ! सजल ने स्निग्ध वाणी में कहा- 'इतनी दूर बड़ी है कि राखी की गाँठ भी नहीं बाँध सकती...'

क्या कहते हो भैया तुम ?' काँपते स्वर को संभाल कर बोळी रचना । मुस्कुराने का व्यर्थ प्रयास भी किया ।

'झूठ तो कहता नहीं कल से मुँह भी नहीं दिखाया तूने ?... फटी पतंग की तरह साथ ही छोड़ देना चाहती है?' असीम व्यथा निहित थी सजल के स्वर में ।

रचना पास आकर खड़ी हो गई। उसकी आँखें ज़मीन की छाती पर कुछ खोज रही थी। रचता को लगा कि उसके ठाकुर भैया की दृष्टि उसके पेट के पाप को देख रही है- एक टक !

पेट का पाप हिल उठा। रचना पेट थाम कर जमीन पर बैठ गई। पूर्ववत् पीड़ा होने लगी और लगी छटपटाने ।

'रचना !... क्या हो गया तुझे ?'

'कुछ नहीं भैया, कुछ नहीं...?' कराहती हुई बोली रचना ।
'बहाना बनाती है तू ! मेरी आँखें अन्धी नहीं.. दिनों दिन तेरी हालत पुरानी इमारत की तरह ढहती जा रही है...'

'सरकार " मुन्शीजी दो-चार लठेतों के सङ्ग बाहर दरवाजे पर आपकी राह देख रहे हैं।' एक लठैत ने आकर कहा ।

दादी रचना को बाहर ले जाओ। मैं पहाड़पुर जा रहा हूँ, उधर से आते समय किसी डाक्टर को लेता आऊँगा...'

सजल चिन्तित हो हवेली के बाहर आया। अपने घोड़े की पीठ पर बैठ गया । ऐंड़ लगाते ही घोड़ा हवा से बातें करने लगा । मुन्शी-कारिन्दा पहले ही प्रस्थान कर चुके थे ।

******

१०५

जीवन से निराश रचना ने मरने का बहुत मौका खोजा, किन्तु उसे हर तरफ से निराशा ही मिली।

परोसन रचना से जोंक की तरह लगी रहती है।

रचना गमगीन होकर खिड़की पर बैठी है। सोच रही है-अगर खिड़की में छड़ नहीं लगे होते तो कूद पड़ती वह । जमीन पर परोसन दादी बैठी हैं। कटोरी में किसी चीज का घोल तैयार कर रही हैं। शायद कोई दवा होगी। घोल तैयार कर उसने रचना की ओर बढ़ाया ।

*मैं नहीं पीती दादी !... कल से ही कितनी तरह की दवा पिला चुकी हो तुम मगर फायदा कुछ होता नहीं.... कहती हूँ जहर लाकर दे दो पर सुनती नहीं...'

'हाय राम-हाथ सीता!' कहकर कपार पीट लिया परोसत दादी ने । यह लड़की तो मरने की ही बात करती है; अरे , हाथ में घाव हो जाने से उसे काट कर फेंक थोड़े देता है कोई ?... पी ले, सब ठीक हो जायगा ।'

'बदवामी से बचाना चाहती हो तो मार डालो दादी ! कल भैया डाक्टर लेकर कहीं आ गए तो क्या छिपा रहेगा कुछ... पर मेरी समझ में नहीं

थाता दादी कि किसी मर्द के सम्पर्क के बिना यह सब कैसे हो गया ।'

"क्या कहती है तू?... तूने किसी से प्रेम नहीं किया ?' आश्चर्य से परोसन दादी की आँखें फट पड़ीं ।

'नहीं, लेकिन तुम्हें यकीन नहीं होगा कैसे बताऊँ तुम्हें ?'

'बता बेटी !'

'जाने दो दादी !... अब कुछ बताने की जरूरत नहीं। कल तो डाक्टर आ ही रहा है। सब कुछ बता देगा.... भैया का सर नीचा होगा। लोग मुझ पर थूकेंगे। भैया मेरा गला घोंट देंगे... इतना ही तो... मैं मर जाऊँगी , मरना तो चाहती ही हूँ...' रचना भारी गले से बोली ।

१०६

परोसन दादी ने किसी प्रकार रचना को दवा पिला दी। कुछ राहत मिल गई उसे। पहले तो रुक-रुककर पीड़ा से चीत्कार कर उठती थी । किन्तु यह दवा पीये एक घण्टे से ऊपर हो गया अभी दर्द नहीं उठा है। इससे रचना को भविष्य के अन्धकार में क्षीण प्रकाश की रेखा दिखाई पड़ने लगी है।

****

'मुन्शीजी ! गाँव के मुखिया को बुलाओ ।'

पास ऊँघते मुन्शीजी हड़बड़ा कर सामने आ खड़े हुए हाथ जोड़े ।

बोले- 'अभी बड़े राजा ! अरे यो महँगू !' पुकार लगाने लगे मुन्शीजी ।

'जरा धीरे से मुन्शी बाबू! अभी जिन्दा हूँ माई-बाप !' महेंगू पास ही खड़ा था ।

'समझे कि नहीं ?.... कहाँ हो.... मुखिया को बुलाओ ।'

'हम हाजिर हैं हजूर !' एक बूढ़ा सामने आकर बोला ।

"हम वसूली के लिए आये हैं मुखियाजी !' मुन्शीजी बोले-'जितनी जल्दी हो, उतनी जल्दी हम लोग निपटना चाहते हैं, समझे कि नहीं ?...' मुन्शीजी की झड़प से मुखिया सिटपिटा गया बेचारा । सजल होंठों में ही मुस्कुराया ।

तीसरे पहर वसुली समाप्त हो गई। सजल ने सोचा, खाली बैठने से अच्छा तो यही होगा कि जङ्गल में शिकार ही खेल आये । वह तैयार हो गया। महंगू और एक लठैत को लेकर वह जङ्गल की सघनता की ओर बढ़ा। एकाएक उसके विचारों में रचना बाई, इसी रामगढ़ के जङ्गल में शिकार खेलते-खेलते शिकार हो गया भाई, विचलित हो उठा वह ।

'सरकार ! कोई जानवर नहीं दीख पड़ता... शाम भी हो गई. लौटते-लौटते अँधेरा हो जायगा हजुर ।' महेंगू बोला ।

'थोड़ी दूर और चलो ।'

वे लोग थोड़ी ही दूर चले थे कि सघन जङ्गल के किसी कोने से एक चीख सुनाई दी। वह तेजी से उस ओर बढ़ा, जिधर से

अभी-अभी हवा के साथ किसी के गले से मौत की चीख आई थी । घटनास्थल पर पहुँच कर जो कुछ देखा सबल ने उसे देख-कर स्तब्ध रह गया। उसकी समक्ष में ही नहीं आया कि क्या करे और क्या न करे । बड़ा खौफनाक दृश्य था वह। एक व्यक्ति का आधा शरीर मानव-भक्षी अजगर के मुख में था; दूसरा जमीन पर था होठों में कुछ बुदबुदाता और हाथ के छुरे से अजगर के घरीर पर वार करता। लेकिन अजगर था कि उस पर उसके तेज छुरे का कुछ भी असर नहीं। वह मुँह में पढ़े व्यक्ति को धीरे-घोरे निगल रहा था। दूसरा व्यक्ति क्रोधावेश में करता जा रहा था छुरे का वार । विचित्र पोशाक थी उनकी - अजगर के चमड़े की ही तो थी। देखते-देखते अजगर के भयानक मुँह के बाहर निकले पैर भी लुप्त हो गये ।

'उस्ताद ।' दूसरा व्यक्ति चीख पड़ा। क्रोध में जलकार उसने अपना छुरा अजगर के मस्तिष्क में भोंक दिया ।

क्रोधित अजगर फुफकार कर झपटा उसकी ओर,
और 'गोली मार दो सरकार !' महँगू चीखा ।

बन्दूक तनी और... धायें... धायें
****
जो कुछ सुना है सजल ने उस पर विश्वास कार ले ? वह एकटक पहाड़ की ओर निहार रहा है। इस जंगल की सघनता के पीछे एक ऐसी दुनिया है जहाँ के निवासी संपेरे हैं। साँपों से खेलते हैं, साँपों को खाते हैं। मन्त्र के

बल पर साँप काटे आदमी को जिन्दा कर लेते हैं। लेकिन इससे भी बढ़कर तो मुखिया के मुख की बात है। अभी तक उसकी बात कानों में गूंज रही है। उसी चीख की तरह जो उसने जंगल में सुनी थी ।

'सरकार ! तन्त्र- मन्त्र की बात छोड़िये । सेदहाँ गाँव में तो लोग साँप काटे आदमी को छूकर जिन्दा कर लेते हैं।'

ये सब फालतू बातें हैं। इस पर सोचने-विचारने से उसका कोई लाभ नहीं और बेकार की बातें सोचकर करेगा ही क्या ?

१०८
बह उठकर टहलने लगा। देखा, कुछ दूर पर बैठे मुन्शीजी संपेरे में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं।

'यह तुम्हारे हाथ में क्या है जी?' मुन्शीजी ने पूछा। इस तरह देख रहे थे कि मस्तक की रेखायें उभर आई थी ।

'यह महुवर है सरकार ?' सँपेरा बोला ।

'महुवर !... समझा ? साँप नाचता है इसकी आवाज पर; बही महुवर है नऽ? चश्मा कोठरी में है। नहीं तो पहचान ही जाता... सुनायो जरा.... सुना है बड़ा मोठा स्वर होता है इसका; मगर अभी तक सुनने का मौका नहीं मिला... कलम का खिलाड़ी हूँ... समझे कि नहीं?.... सो महुवर से मतलब ही क्या ?'

"सुनोगे सरकार ?'

'कैसे हो जी तुम, समझे कि नहीं? कहा तो सुताओ... लेकिन भई, सांप-वाँप मत बुला लेना, नहीं तो मेरी नानी इस बुढ़ापे में ही मर जायगी समझे कि नहीं ?'

"समझ गया सरकार !'

संपेरे ने होठों पर महुवर रखी। फूंक मारी। एक मादक स्वर-लहरी वातावरण में तैर उठी। बूढ़े मुन्शीजी उकड़ बैठे थे। उनके दोनों हाथ घुटने का चुम्बन कर रहे थे और सँपेरे के गाळ फूल-पचक रहे थे। जादू भरी उँगलियाँ महुवर के छिद्रों पर उठ-गिरकर स्वर में सम्मोहन पैदा कर रही थीं ।

भई, वाह ! कमाल का बजाते हो ।' हर्षातिरेक से विह्वल आवाज थी मुन्शीजी की- जी चाहता है नाचने लगूं उठकर ।'

'तो नाचो न मुन्शी बाबू !... सच जानो सोने में सुगन्ध आ जायगी।' पास बैठे महंगू ने कहा ।

'महंगू !' पुकारा सजल ने तो मुंशीजी का पिंड छोड़ चला गया वह । मुंशीजी को फुरसत मिली !

'भाई सम्पेरे... बजाते चलो, अरे !' मुंशीजी चौंके – 'क...क...कहाँ चले गए भाई? समझे ?"

'मैं यहीं हूँ सरकार !'

सँपेरा मुंशीजी को महेंगू से बातें करता देखकर चुप हो गया था। उसके खामोश चेहरे पर गम की लकीरें उभरी थीं ।

'तुम चुप क्यों हो गये भाई ! बोलो भी तो समझे कि नहीं? कि बोलना ही नहीं आता अधिक... महुवर बजाते हो तो मुँह भी बजाना सीखो.. घर की याद सता रही है क्या !'

'याद तो आती ही रहती है सरकार ! उसे रोकने की ताकत किसमें है भला...' उदास वाणी थी संपेरे की ।

'रोती आवाज में मत बोलो भाई अभी तो खासे जवान हो, जरा तड़प कर बोला करो.... मुझे देखो, बूढ़ा हो गया हूँ, मगर जबान में लगाम नहीं लगा सका... बोलने लगता हूँ तो --समझे कि नहीं ?... जबान घोड़ा हो जाती है... कोई दुःख है तुम्हें ?' मुंशीजी सहानुभूति प्रदर्शित करने लगे ।

'एक दुःख हो तो बताऊँ सरकार । यहाँ तो जिन्दगी ही गम बन गई है।' दिल का दर्द स्वर में भरकर बोला सँपेरा ।

'यहाँ रहोगे तो सारा दुःख दूर हो जायगा.... हाँ, यह तो बताओ जिसे अजगर ने निगल लिया, वह कौन था तुम्हारा ?'

मेरा उस्ताद था सरकार !'

'तुम्हारा उस्ताव अजगर के पेट में कैसे चला गया। वह तो जन्तर-मन्तर जानता रहा होगा ? क्या वह भी सँपेरा था ?' मुंशीजी उत्सुक आंखों से उसकी ओर देखने लगे ।

'जब मौत आ जाती है सरकार, तो किसी का बस नहीं चलता, सारी उस्तादी धरी रह जाती है।'

'ठीक कहते हो तुम !... ससुरी कहकर भी तो नहीं आती , मगर तुम तो थे, क्यों नहीं मंतर पढ़ने लगे ?'

"क्या कहूँ। मति भ्रष्ट हो गयी थी।' सँपेरा बोला ।

'आगे क्या इरादा है तुम्हारा ?'

'कोई साध बाकी नहीं रही सरकार ?... जिन्दगी में कोई उम्मीद नहीं अब तो... राजा साहब कल जंगल में नहीं पहुँचते तो मेरा भी क्या हाल होता, कौन जाने ?'

११०

तुम भई ! बड़े कमजोर दिल के आदमी हो... समझे कि वहीं ?.... कैसे रह सकोगे यहाँ ? हिम्मत से काम लो जरा !... कमज़ोर आदमी को दुनिया दबाती है- समझे....' मुन्शीजी गम्भीर होकर उपदेश दे रहे थे।

'दिल कमजोर हो सकता है मुंशी बाबू । हाथों की ताकत बिन्दा है... और जिस के पास जिस्मानी ताकत है दुनिया उसका बाल भी टेढ़ा नहीं कर सकती... किसी पर भार बनकर नहीं रहूँगा सरकार !... मन्तर पढ़-पढ़ कर लोगों को जिन्दगी दूँगा.... लोग बदले में दुआएँ देने लगेंगे तो इस पापी पेट के लिए खाना भी माँग लूंगा।' संपेरे के स्वर में दृढ़ता आ गई ।

'अपने घर नहीं जाओगे कभी ?'

'घर में तो आग लग गई सरकार !... वहाँ रखा ही क्या होगा, राख ही तो , सभी से नाता तोड़ आया; यहाँ तक कि हमदर्दी देने वाला कोई नहीं बचा, बूढ़ी मां है.... उसे गाँव वाले सहारा दे ही देंगे।' वेदना थी संपेरे की आवाज में ।

'क्यों भाई, तुम्हें अपनो मां से प्यार नहीं ?"

'है क्यों नहीं मुन्शी सरद्वार कभी-कभी फर्ज के आगे अपने को भुलाना ही पड़ता है।' कहते-कहते सँपेरे को अपनी मां की याद आ गई तो चुप हो गया ।

थोड़ी देर बाद- 'एक बात है सरकार !... पूछु।'
'हां... हां, बेखटक हो के पूछो ?.... समझे की नहीं ?'
'ये राजा साहब हैं नऽ ।...' कहना शुरू किया संपेरे ने-

'उसकी सूरत मेरे छैला से मिलती है बाबूजी ! अजीब बात है ! चाल-ढाळ, शकल-सूरत, सभी कुछ एक-सी- दुतिया में एक चेहरे के वो पुतले कुछ समझ में नहीं आता ।'

'समझे कि नही ? यहीं तो ईश्वर की भाया है भाई ! कहीं धूप कहीं छाया !... यह छैला कौन था तुम्हारा?... हम तो वाचने वाले को छैला कहते हैं...' मुन्शीजी ने सवाल किया और अपनी आंखें पोंछ कर उसकी ओर देखने लगे ।

मुन्शी बाबू !... बड़े राजा बुला रहे हैं तुम्हें... जाओ...' आकर महेंगू ने कहा

।

मुन्शीजी को महेंगू का आना बड़ा बुरा लगा, किन्तु बढ़े राजा की आज्ञा टाळने की क्षमता उनमें नहीं थी।
वे सजल के सामने खड़े हो गये । बोले- 'आपने बुलाया सरकार ।'

'हाँ, मुन्शी दादा !... तुम सँपेरे को लेकर हवेली चलो... शाम तक पहुँच जाबोगे ।' कहा सजल ने गम्भीर होकर ।

और आप अन्नदाता ।'

'मैं शहर जाऊँगा । मेरे साथ महेंगू रहेगा... किसी अनुभवी डाक्टर को लेकर कल सबेरे आऊँगा मैं !'

'जैसी आज्ञा !' मुन्शीजी के दोनों हाथ जुड़ गये ।

'मैंने लाख बार कहा मुन्शी दादा कि आप बुजुर्ग हैं; आज्ञा मत माँगा कीजिए...'

'आदत है ठाकुर बेटा । समझे कि वहीं !... तोते की तरह याद हो गया है यह तो... आगे से ध्यान रखूंगा...'

घण्टे भर बाद मुन्शीजी, संपेरे के साथ महुवारी इलाके की ओर चल पड़े । बैलगाड़ी कच्ची सड़क की लीक पर 'चरं चों' का संगीत सुनाती चली जा रही थी। सँपेरा चारों ओर बिखरी सुषमा निहार रहा था विभोर होकर ! मुन्शीजी ठण्डी-ठण्डी हवा की थपकी से ऊँघ रहे थे। उनकी पलकों के परदे पर दूसरी शादी की सुहागरात के फूल खिल रहे थे ।

****

महुवारी रियासत के मुन्शी गिरधारी चरण को अपने भविष्य की बात नहीं मालूम। बुढ़ापे की लात खाकर कमर कमान की तरह झुक गई है, किन्तु जीने का सपना नींद में भी देखना नहीं भूलते । उन्हें पता नहीं कि सांस का तीर कमर की कमान पर चढ़कर कब छूट जाय।
मगर मुन्शीजी तो कहते हैं- जान भले ही निकल जाय, किन्तु इन्सान होने के नाते शान से जीना चाहिए ताकि मरने के बाद लोग इज्जत से नाम लें।

११५

अंधेरा अट्टहास कर उठा है। गाड़ी 'चर्च-चों' का पुराना राग अलापती थके मुसाफिर की तरह धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। पहिये जब कभी राह में पड़े किसी रोड़े पर चढ़ जाते हैं तो गड़ी में एक दोल पैदा हो जाती है। उनका सुनहला सपना धक्का खाकर टूट जाता है। चेहरे की झुर्रियों पर निराशा, विस्मय एवं भय के चिह्न उदित हो जाते हैं।

बोळ उठते हैं- भई गाड़ीवान। जरा संभल कर चलाओ गाड़ी.... समझे कि नहीं ? तुम्हारी गाड़ी के पहिये तो नवेली दुलहिन की तरह नखरे दिखा रहे हैं। बाप रे बाप !... जरा धीरे-धीरे भाई !' मुन्शीजी गाड़ी के हिचकोले से चीख पड़े-'मुन्शिआइन कसम ! तुम्हारे बैल तो बिलकुल बैल ही हैं... दौड़ते हैं तो ऐसे कि कलेजे पर ही खुर पड़ते हैं... गर्दभदेव की दुलत्तो भी मात इस चाल के आगे, समझे कि नहीं ?'-

गाड़ी जंब ठीक से चलने लगी तो मुन्शीजी दूसरी ओर मुखातिब हुए- 'भाई

संपेरे ।.... सोने लगे क्या ?'

'वहीं सरकार ?... अभी तो जाग रहा हूँ।' बोला सँपेरा ।
जागते ही रहो भाई !... डगर बड़ी ऊँची-नीची है। कहीं बैल बिदक गये तो जमीन सूंघने लगोगे। बेहतर है कि आंखों की खिड़की खोलकर ही चलो नहीं तो सांस का पंछी बेपर का ही उड़ जायगा, समझे कि नहीं? भूख तो नहीं लगी है?"

'भूख-प्यास तो आपकी हमदर्दी से ही मिट गई सरकार ! किरपा बनाये रहें यही बहुत है!' आदर के साथ बोला संपेरा ।

बैलों के गले में बँधी घण्टी का टलमल-टुन स्वर सुनसान घाटी में गूंज उठा। दौड़तो हुई गाड़ी किसी पेड़ के नीचे से गुजरी। दैत्याकार पेड़ की काली आकृति देखकर मुन्शीजी की सांस नीचे-ऊपर होने लगी! शायद डर लग गया उन्हें। पेड़ के नीचे पड़े सूखे पत्तों पर जब पहिये दौड़े तो विचित्र तरह का स्वर पैदा हुआ। मुन्शीजी भय एवं विस्मय से पत्थर हो गये ।

पेड़ का साया छोड़कर गाड़ी जब खुले आकाश के नीचे आई

तो वे चैतन्य हुए ।
बोले- पेड़ के नीचे से गाड़ी मत ले जाया करो, समझे कि नहीं ?... रात में पेड़ के नीचे देवता सोते हैं।'

'देवता तो नहीं भूत-परेत जरूर जागते हैं।' गाड़ीवान था।
'चुप रहो जी, समझे कि नहीं ?... तुम्हारा किराया काट लूंगा अगर रात के समय इन लोगों का नाm लोगे तो ---कहने के साथ ही मुन्शीजी

खिसककर संपेरे के पास आ गये ।

'डर लगता है सरकार !'

व... नहीं.... वहीं...डर कहां रहा हूँ... डरें मेरे दुश्मन... समझे कि नहीं?.. मुझे ऐसा-वैसा समझ किया है क्या ?....ठाकुरों के बीच में बाल सफेद हुए हैं, जो अपनी जान हथेली पर लेकर चलते हैं तलवारों की लड़ाई देखते-देखते दिल मजबूत हो गया है... समझे कि नहीं ?....'

'समझ रहा हूँ सरकार ।' गाड़ीवान बोला ।

'चुप रहो !' मुन्शीजी की डांट से गाड़ीवान बैलों की पूंछ हाथ में लेकर जरा और तेज चलने के लिए पुचकारता रहा ।

तभी, बहुत दूर से रात के अंधेरे को चीरती हुई किसी चीख की आवाज मुन्शीजी के कानों से टकराई। चौंक पड़े थे। मिरजई की जेब से पुराना चश्मा निकाला उन्होंने जिसकी कमानी न जाने कब, कहां गिर चुकी थी और मुन्शीजी ने उसमें धागा बांध दिया था। बेढंगे चश्मे को हाथों से बीच नाक पर चढ़ाया। झपकती-झिलमिलाती नजरों से वे देखने लगे ।

थोड़ी देर बाद घोड़े की टाप सुनाई पड़ी ।

'समझे कि नहीं? रोक दो गाड़ी।' चीख पड़े मुन्शीजी। उनका स्वर भय से कांप रहा था ।

'क्यों सरकार !... कोई हाजत-बाजत ?' गाड़ीवान ने पूछा।

'घत्त तेरे की.... हाजत के बच्चे ! समझे कि नहीं ?... कोई आ रहा है उधर... वह देखो... भू भू भूत!' मुँह से लड़ खड़ाती आवाज निकली मुन्शी जी की। उनका चश्मा छटककर नाक की नोक पर अटक गया। गाड़ीवान ने गाड़ी रोक दी।

११४

मुन्शीजी भय से प्रायः बेहोश हो गये थे। उनकी सारी देह भूकम्प के धक्के से डोलती धरती की तरह हिल रही थी ।

संपेरे ने मुन्शीजी को सहारा देता चाहा। उसके हाथों के स्पर्श से लेजी से मुन्शीजी चीख पड़े। घोड़े पर चढ़ा सवार जब नजदीक आया तो उसकी काली छाया दिखाई पड़ने लगी। वह सवार तेजी से गाड़ी की ओर बढ़ता आ रहा था।
गाड़ीवाल ने भी देखा - भय तो उसे भी लगा, किन्तु मुकाबले के लिए तैयार हो गया । खुद बरछा लेकर खड़ा हो गया और सँपेरे को गड़ासा थमा कर उत्साहित किया। सवार तेजी से पास आता जा रहा था । जब फासला बीस कदम रह गया तो गाड़ी वाले ने कड़ककर पूछा- कौन हो? वहीं खड़े हो जाओ !'

'मैं हु ।' इतना ही बोला सवार ।

और गाड़ीवान के हाथ का बरछा नीचे झुक गया। पता नहीं कौन-सा जादू भरा था उस 'मैं हूँ" में। सवार गाड़ी के पास आ के रुक गया।

बोला- 'सॅपेरे। मेरे साथ आओ ।'

और उसकी आज्ञा के साथ ही सँपेरा घोड़े की पीठ पर सवार हो गया, ठीक उसके पोछे।
सवार ने घोड़े को ऍड़ लगाई। घोड़ा आंधी की तरह भाग चला महुआरी गाँव की ओर ।

- गाड़ीवान से कुछ करते न बता। सँपेरे को लेकर सवार अंधेरे में खो गया । गाड़ीवान मुंशीजी की परिचर्या करने लगा ।

मुन्शी बाबू अरे ओ मुंशी बाबू 1.... उठो भी!' हाथों से गठरी हुए मुंशोजी को सीधा करने लगा गाड़ीवान ।

'अरे ! भई, भु भुभू भूत अरे, ... मुझे नहीं; किसी और को... किसी और को समझे कि नहीं ?? मैं तो बूढ़ा हूँ।' मुन्शीजी आँखें बन्द किये ही बोले । लग रहा था कि भूत ने ही आकर पकड़ रक्खा है उन्हें ।

'उठो भी सरकार ! आधी रात हो गई, सुबह-सुबह बड़े राजा हवेली में नहीं देखेंगे तो फाँसी पर लटका देंगे। समझे कि नहीं?'

किसी प्रकार मुंशी ने डरते-काँपते अपनी आँखें खोली ।

११५

देखा तो सामने गाड़ीवान खड़ा था। जान में जान आई ।

'समझे कि नहीं ?' मुंशीजी के गले से निकळा-'अरे कहाँ गया सैंपेरा का बच्चा !... समझे कि नहीं ?'

'उसे तो भूत ले गया माई-बाप ।.... बहुत खुशामद करके बचाया... तुम्हें ?' बोळा गाड़ीवान ।

'चलो बड़ा अच्छा किया तुमने; समझे कि नहीं ?... तुम्हें ईनाम दूंगा.... वह तो खुद मरना चाहता था !... चीखा भी था इतने जोर से कि मैं बेहोश हो गया ।'

"चीखे तो तुम थे सरकार !'

'समझे कि नहीं ?.... झूठ मत बोलो... भला मैं क्यों चीखने लगा ?' मुन्शीजी शान से बोले मानों शेर का शिकार करने आये हों । किन्तु अभी उनके अन्तर में भय तम्बू ताने बैठा था- 'जरा जल्दी ले चलो, समझे कि नहीं? नहीं तो उल्लू का पट्टा कहीं फिर न आ जाय ।'

" लो सरकार ! वह तो फिर आ गया। भला तुम बुलाओ और भूत व आये.... क्या कहने ' सामने की ओर ऊँगली से दिखाता हुआ बोला गाड़ीवान। मुंशीजी के कान खड़े हो गये ।

'बाप रे बाप... समझे कि नहीं ?... जल्दी से कोई उपाय करो।' मुंशीजी की नानी मरने लगी ।

वह सवार इस बार आया तो रुका नहीं। तेजी से पहाड़पुर की ओर भाग गया। संपेरा अब तक उसकी पीठ के पीछे था । इस बार गाड़ीवाले ने मुन्शीजी को जगाया नहीं ।

गाड़ी धीरे-धीरे चलती रही। सन्नाटे को चीरकर कभी-कभी किसी बिरही

पपीहे की दर्द भरी चीख सुनाई पड़ जाती थी ।

*****

रचना आशान्वित हो उठी है। जब उसे आराम है। उसका दर्द कम हो गया है, किन्तु पेट का पाप मस्तक उठाये बड़ा है। रचता के मन की व्यग्रता कम नहीं हुई है। डाक्टर के साथ सजल भैया कल आ जायेंगे और जो बात सिर्फ परोसन जानती है । वह दो व्यक्तियों के चार कानों मे पड़ जाएगी ।

११६
भैया भले ही उसके पाप के बारे में सुनकर चुप भी रह जायें मगर डावटर भला क्यों चुप रहेगा? डाक्टर से बचने का उपाय क्या हो सकता है? एक-आध रोज और डाक्टर नहीं आये तो कितना अच्छा है। जहाँ परोसत दादी ने दो-चार खुराक और दवा पिलायी कि पाप का मस्तक कटकर नीचे गिर जायगा ।

तभी परोसन दादी कटोरी में कुछ लेकर उपस्थित हो गई ।

'क्या है दादी । जहर तो नहीं ?'

ओछी बात क्यों बोलती है री!' प्यार की झिड़की देकर कहा परोसन दादी ने-- ले, दूध के साथ बुढ़िया की गोली मिला दी है मैंने... पी ले... सारा किस्सा समाप्त हो जायगा...'

'तुम बुढ़िया की गोली पिलायो दादी ! काल भैया आकर बन्दूक की गोली

दागेंगे...' बोली बह ।

'मेरे रहते किसकी मजाल कि तेरी जान ले ले। मुँह नोंच लूँगी मैं उसका...' एक ही साँस में कह गई परोसन दादी ! उसका चेहरा तमतमा उठा था ।

'तुम ऐसा नहीं कर सकती।' उसके स्वर में सन्देह था ।

'कैसे भला ?'

'इसलिए कि जितना तुम मुझको चाहती हो उससे अधिक भैया को चाहती हो... भैया ही तो गोली मारेगे !...'

'लड़की, तू तो पागल हो गई है। भाई कहीं बहन की जान ले सकता है।' कहा परोसन ने --'ले पी ले दवा ।'

परोसन के आश्वासन से उत्साहित होकर रचना दवा पी गई। किन्तु डाक्टर का भय सताता ही रहा उसे ।

जब वह गम्भीर होकर अपने अतीत के विषय में सोचने लगती है तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता। जब वर्तमान पर गौर करती है तो उसका छोटा-सा मासूम दिल करुणा से भर उठता है और उज्ज्वल भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होने लगता है। कितनी जटिल उलझन रचना के मस्तिष्क में समा गई है
कि सुलझाना चाहती है तो उलझती जाती है ।

परोसन दादी बराबर शादी की बात करती हैं, शादी के नाम से जितना उसे

सुख मिलता है उतना ही भय भी होता है। होने वाले पति को अगर उसके पाप की बात मालूम हो जायगी तो क्या उसे अपनायेगा ? रचना की गम्भीरता बढ़ने लगी। उसके शान्त मुखः मण्डल के पीछे एक भयादक तूफान की सृष्टि होने लगी। उद्वेग से मस्तिष्क फटने लगा। जिधर देखती उधर ही अमावास की रात काला मुँह बाये गला घोंटने के लिए तैयार दीखती ।

'चुप क्यों हो गई तू... शादी की बात से लज़्जाने लग गई बाजवन्ती !... कौन जिन्दा रहेगा तेरी इस -- !'

'चुप रहो दादी । चुप रहो... मैं नहीं सुनना चाहंती , यह सब असीम वेदना निहित थी रचना की आवाज में, जिसे परोसन दादी समक्ष न सकी-

'दादी मैं, अकेली रहना चाहती हू- मेरा सर फटने लगा है।'

'तू तो पागल है।'

'पागल भी हो जाती तो अच्छी रहती दादी !...कम से कम सारा दुःख भूल तो जाती ।'

वह पलंग पर विक्षिप्त होकर पड़ी रही। आँखों से गरम गरम आँसू की बूंदें लुढ़क कर उसके कोमल-कपोल को नहलाने लगीं। गले पर हिचकियों का दर्द भरा सरगम भी छिड़ गया। हिचकी की आवाज ने पशेसन दादी के मन में अशान्ति भर दी।

समय धीरे-धीरे खिसकने लगा। रचना कब सो गई पता नहीं। परोसन दादी

सर पर हाथ रखे कुछ सोचती रही ।

दिन की धूल उड़ते ही शाम गोधूलि बन गई।
शिवालय घण्टे-घड़ियाल घनघना-टनटना उठे। सान्ध्य दीप की आँखें खुल गई, पर रचना आंखें बन्द किये पड़ी रही। धीरे-धीरे रात हो गई। परोसन दादी ने लालटेन जळाई। लालटेन की फीकी रोशनी में देखा परोसन ने, बेखबर सोई थी रचना ।

साँस की हर लहर पर छाती नीचे-ऊपर हो रही थीं।

११८

गालों पर आंसू की सूखी लकीरें करुण अदा से मुस्करा रही थी, बालू पर खींची पानी की लकीर की भांति ।

परोसन ने धीरे से पुकारा। एक ही पुकार में रचना जाग गई । और दिन तो घण्टों जगाने पर भी नहीं जागती थी वह-

'चल उठ, बाहर बाग में बैठ तनिक --भीतर रहते-रहते मन ऊब गया होगा !' परोसन दादी सहारा देकर उठाते लगी उसे ।

बाग में आकर पत्थर के चबूतरे पर बैठ गई वह। चारों तरफ से सौरभ भरा पवन उठ-उठकर बातावरण को सुगन्धित कर रहा था किन्तु रचना को कोई रस नहीं मिला उसमें ।

फुलवारी छोड़कर उठ खड़ी हुई वह। उठकर पत्थर से बने कुएँ की जगत पर था बैठी। आँखें गड़ाकर गहरे कुएँ के भीतर काँपते अन्धकार को

निहारने लगी। उसके अन्तर में एक भाव उदित हुआ। अगर कुएँ में कूद पड़े तो ?

****

महुवारी गाँव दिन भर की थकान के पश्चात् आँखों में नींद का काजल लगाकर सो रहा है। जाग रहे हैं तो सिर्फ वे जिन्हें रात को पहरा देने के लिए सजल ने तैनात किया है।

ऐसे ही वक्त में- गाँव के दूसरे छोर से कुत्तों के भौंकने की आवाज-रह-रहकर आने लगी। पहरे पर के लठैत सावधान हो गये । तभी - घोड़े की टाप सुनाई पड़ी और उसके पीछे दौड़ते कुत्तों की आवाज । घोड़ा दौड़ता हुआ हवेली के फाटक पर रुका । लठैत ने हुक्स भरे लहजे में पूछा- 'कौन ?...'

'मैं हूँ !' कहते-कहते घोड़े पर चढ़ा आदमी उसके पास आ गया 'फाटक खोलो, जरूरी काम है।'

फाटक खुल गया । सवार उतर पड़ा। एक व्यक्ति और था उसके साथ । दोनों व्यक्ति हवेली के भीतर प्रविष्ट हुए ।

घर का दरवाजा पहले व्यक्ति ने खटखटाया । भीतर सो रही थी परोसन दादी और रचना ।

परोसन दादी की नाक फों-फों कर रही थी किन्तु रचना अब तक बेचैनी से

करवट बदल रही थी। किवाड़ खटखटाने की आवाज जब उसके कानों के पर्दों से टकराई तो चौंक पड़ी वह।

उसका नाम लेकर किसी ने पुकारा भी। स्वर परिचित था। और अपने परिचित से भला कैसा डर ? चाहे रात में चोर की तरह आये या दिन के उजाले में शरीफ बनकर ।

रचना ने दरवाजा खोला। हाथ की लालटेन नीचे रख दी। अपने परिचित को देखकर बोली- तुम !'

वह बोला- 'मैं ही हूँ रचना ।' घबड़ाया स्वर था उसका।

'इतनी रात को... और भैया ?'

'कुछ मत पूछो ? ठाकुर साहह्व की जिन्दगी और मौत का सवाल है... वक्त कम है और सफर लम्बा... थोड़े में जल्दी से सुनो।' कहने लगा वह धीरे-धीरे ।

रचना ने सुना तो उसके पैर के नीचे की धरती खिसक गई और अधिक नहीं सुन सकी वह। उधर वह व्यक्ति रचना से बाते बताता जा रहा था। वह बाहर के अंधेरे में खड़ा था इसलिए उसकी आकृतिं अस्पष्ट थी। जो कुछ कहा उस व्यक्ति ने सुनकर रचना घबड़ा उठी। कुछ ऐसी बात थी कि रचना के दिल की धड़कन और बढ़ गई। पेट का दर्द फिर उठकर खड़ा हो गया।

अपना पेट दाब जमीन पर बैठ गई वह। उसके होठों से नैराश्य-पूर्ण,

बोझिल स्वर निकला - 'अब क्या होगा ।'

'जो भगवान चाहेगा ? बड़े राजा की जिन्दगी उस पर निर्भर है... अगर. वह चाहे तो बचेंगे नहीं तो मरे तो हैं ही... मैं जाता हू अब !... मुझे पहाड़पुर पहुंचना है।'

'कौन है वह ?'

'आने पर बताऊँगा - अभी समय नहीं है।' कहकार विचित्र व्यक्ति बाहर निकला, घोड़े पर सवार हुआ और उसके साथ का आदमी उसके पीछे बैठ गया। घोड़ा दौड़ चला ।

रचना के मुख से चीख निकली। जैसे उसका गला दबा दिया हो किसी ने ।

१२०

परोसत ने सुना तो वह दौड़कर पास आई । रचना पेट दाबे आहें भर रही थीं।

'क्या हुआ रे रचना.... यहाँ क्या कर रही है इतनी रात को?...' बोली परोसन ।

'दादी! भीतर ले चलो... लगता है अब प्राण निकले । दादी मैं नहीं बचूँगी। पेट फटा जा रहा है... दादी ।' लड़खड़ाती आवाज थी रचना की।
कुछ देर बाद फिर कहने लगी - 'भैया को सांप ने काट लिया... वे नहीं बचेंगे. अब... उन्हीं की आशा से महंगू इतनी रात को... आया था... वह ।'

परोसन पर हिमालय का एक टुकड़ा आ गिरा। सजल को साँप काटने की

बात ने और इधर रचना के पेट दर्द ने हैरान कर दिया उसे । कितनी बड़ी आफत थी यह बूढ़े दिल के लिए |

एक ही तीर में दो शिकार खेलना चाहती है मौत ?

रचना बेहोश हो गई। परोसन को होश रहते बेहोशी आ गई । अब क्या करे बेचारी, सिर्फ रचना का पेट सहला रही थी। हाहाकार आँखों में आँसु लिए बूढ़ी परोसन दादी अत्यधिक विकल हो उठी थी। क्या करे वह, किसको पुकारे ?

किसी को पुकारता तो पड़ेगा ही, बहीं तो रचता की हालत सुधरेगी कैसे ? आज जो होना है होगा ही। बदनामी ही सही ।
परोसन डगमगाते पगों से किसी को पुकारने के लिए बाहर निकलने लगी। तभी 'समझे कि नहीं?... अरे रे !... भोंक- भोंक के कान क्यों फाड़े जा रहा है... पाजी कहीं का ?... कुत्ता, कुत्ता ही रह गया... रुको भाई गाड़ी वाले ! यह तो काट खायेगा मुझे... सालों को इतना खाना मिल जाता है कि आँखों पर चर्बी बढ़ती जा रही है, समझे कि नहीं ?... अपने बाप को भी नहीं पह-पानते.... दीनू, चतुरिया, ठींगू... कोई नहीं... अबे सबके सब मर गये क्या , या जी भी रहा है कोई?....' मुन्शीजी का बेढंगा ढांचा देखकर कुत्ते भौंकना बन्द नहीं कर रहे थे। बार-बार वे छाते से कुत्तों को धमका रहे थे।
लठैतों ने अपना-अपना नाम

सुना तो हाथ जोड़े सामने आकर खड़े हो गए।

'सब के सब मर गये थे या कान में तेल डाल कर सो रहे थे ?... सबकी तनख्वाह काट लूंगा समझे कि नहीं !' मुन्शीजी क्रोध से बिगड़ते हुए बोले ।

'माफ करो मुन्शी बाबू ! जरा झपकी लग गई थी माई-बाप 1....सुनते ही भागा आया हूँ सरकार ! तुम्हारी कलम की कसम । खाली पैर उड़ता आया हूँ।'

" उड़ने की आदत बहुत बुरी है, समझे कि नहीं?...'

'मुन्शी लाला !' तभी किसी ने चीखकर पुकारा ।

"मुन्शीजी चीत्कार सुनकर नीचे से लेकर ऊपर तक सिहर उठे ! देखा उन्होंने, बरामदे में खड़ी थी परोसन !

'भाभी ! इतनी जोर से चीखती हो सबेरे सबेरे कि आसमान ही फट जाय, समझे कि नहीं?... जरा धीरे-धीरे ।' मुन्शीजी कहते हुए परोसन की ओर बढ़े ।

'आसमान तो फट ही गया मुन्शी लाला ! अब तो जमीन भी फटने बाली है... हाय राम-हाय सीता!' काँपने लगी थी बेचारी - 'ठाकुर बेटा का हाल तो कहो कुछ, कैसा है ?... कहाँ है ?' एक ही साँस में पूछ बैठी ।

'अजीब सवाल है, समझे कि नहीं? पहाडपुर में हैं... ठीक हैं और कैसे हैं?' मुंशीजी ने सरल भाव से कहा ।

'अरे उसे तो साँप ने डस लिया मुंशी लाला !... अभी-अभी महँगू आया था। वही कह गया है... रचना भी पेट-पीड़ा से बेहोश हो गयी है-घर उजड़ना चाहता है मुंशी !'

सुना मुंशीजी ने तो उनके पैरों के नीचे की जमीन भागने लगी । खड़े नहीं रह सके तो धीरे से जमीन पर बैठ गये ।

'कोई इन्तजाम करो, शहर जाकर डाक्टर बुला लाओ.... रचना की उम्मीद टूटती जा रही है... उसे बचा लो...'

'क्या बकती हो भाभी !... समझे कि नहीं ?... तुमने सपना तो नहीं देखा है... समझे कि....'

'नहीं मुन्शी लाला !... भीतर जाकर देखो तो...'

'अपने को सँभालो भाभी ! समझे कि नहीं.... तुम्हीं होश खो बैठोगी तो रचना को कौन सहारा देगा। मैं डाक्टर लेकर अभी आता हूँ... गाड़ी वाले शहर ले चलो.... अभी इसी बखत ।'

कहते कहते तेजी से उछलकर गाड़ी पर बैठ गये मुन्शीजी उनकी फुर्ती देखने लायक थी इस समय ।

महुवारी से शहर करीब डेढ़ मील दूर था। गाड़ी भाग चली शहर की ओर । मुन्शीजी जोश दिलाते जा रहे थे ।

'क्या बात है सरकार !' साहस करके गाड़ीवान ने पूछा ।

'बात को मारो गोली... समझे कि नहीं?... तुम हाँकते चलो... आँधी की तरह चलो.... आंधी की तरह लौट आओ. समझे कि नहीं ?... तुम्हें ईनाम दूँगा...'

मुँह अँधेरे ही मुंशीजी शहर से डाक्टर लेकर लौटे । डाक्टर ने रचना को देखा। उसकी नाड़ी देखी। गति में विशेष अन्तर नहीं था। बेहोशी को दूर करने की दवा दी।

चैतन्य हुई रचना तो चीख पड़ी 'भैया।'
मगर भैया की जगह मिला डाक्टर, चचित रह गई ! अगल-बगल झाँका । एक तरफ मुन्शीजी मुँह लटकाये, चेहरे पर 'समझे कि नहीं' का भाव लिए, दूसरी तरफ परोसन दादी 'हाथ राम-हाय सीता' की गम्भीर मुद्रा बनाये खड़े थे। रचना परिस्थिति सभझ गई। सामने डाक्टर बैठा था । अब तो उसके पाप का भण्डा फूटेगा ।

'जीभ दिखाओ बेटी ।' बूढे डाक्टर का गम्भीर स्वर था ।

'पहले भैया को देखिये डाक्टर साहब... वे मर रहे हैं... उनके बगैर मैं जी नहीं सकती ।'

'वे ठीक हैं बेटी ' डाक्टर ने झूठी तसल्ली दी।

रचना ने अपनी जीभ बाहर ली । डाक्टर ने 'पाकेट टार्च' की निकाल दी। आँखें बन्द कर रोशनी में निहारा तो चौंक पड़े। उनके चेहरे पर की

गम्भीरता और भी गहरी हो उठी । रचता की जीभ के ऊपर चितकबरे चिन्ह बने थे ।

जीभ के बाद डाक्टर ने पेट दिखाने को कहा। रचता पशो पेश में पड़ गई। अब ससका पाप दुनिया के सामने आकर बोल उठेगा। उसने आँखें मूंद ली, निचले होठों को दाँतों के नीचे दबा लिया जैसे साहस बटोर रही हो वह । डाक्टर ने पेट पर का कपड़ा हटाकर देखना प्रारम्भ किया। जीभ जैसा निशान पेट पर भी. हलकी आभा लिए उगा था ।

'ठीक है' कहकर डाक्टर फारिग हो गये। वे बैठक में आए। परोसन और सुन्शीजी भी वहीं थे।

'क्या बात है डाक्टर साहब! आप साफ-साफ कह जाइए।' बच्ची के पेट में तो साँप है.....

क्या?' मुन्शीजी और परोसन आश्चर्य से भर उठे ।

'जी हाँ, उसके पेट में साँप है.... पेट का आपरेशन करता पड़ेगा... नहीं तो खून खराब हो जाने का भय है, जल्दी नहीं की जायगी तो मौत ... लीजिए यह दवा कुछ फायदा करेगी...' कहकर डाक्टर चलने के लिए एठे ।

परोसन दादी और मुन्शी का दिमाग चक्कर खाने लगा। पेट में साँप का बच्चा होने की घटना उसके लिए बिलकुल नवीन थी ।
पूर्वाकाश पर सुबह की लाळी छा रही थी और इतर हवेली में अँधेरा छाता जा रहा था ।

***

मँहगू सँपेरे को लेकर पहाड़पुर पहुँचा, किन्तु दोनों के पहुँच्ने के पूर्व ही गाँव के लोग सजल को सेदहाँ ले जा चुके थे। जहाँ साँपों का विष सिर्फ छूकर ही उतार दिया जाता था। संपेरा खुश हो रहा था कि राजा साहब की सेवा का मौका तो मिला उसे, मगर यहाँ आने पर बड़ी निराशा मिली ।

'सेवा का बखत आया तो समय ही बीत गया। उस्ताद कसम बड़ा अभागा हूँ मैं !...' बोळा संपेरा सेदहाँ ले चलो भाई... मैं भी देखूं कि बिना मन्तर पढ़े वहाँ जहर उतरता कैसे है... अगर साँस का पक्षी उड़ा नहीं होगा तो बचा लूंगा मैं...'

१२४

सहेंगू का घोड़ा तीर की रह सेदहाँ की ओर दौड़ पड़ा ।

दो आदमियों का बोझ लादे घोड़े की चाय धीमी होने लगी बगर महेंगू को इसकी परवाह नहीं। शिथिल घोड़े को कोढ़े पार-मार कर उत्तेजित करता रहा। इस समय घोड़े के जान की कीमत उसके समक्ष कुछ भी नहीं थी ।

****

नाम तो छोटी पहाड़ी, किन्तु देखने में इतनी विशाल कि कुछ पूछना ही नहीं। दूर से देखने में आकर्षक, मनोहारी, लेकिन बड़ी भयानक, बहुत खतरनाक है। शिकार के शौकीन शिकार खेलने यहाँ बराबर आते हैं। इस पहाड़ी को दो आगों में विभा-जित करती है एक नदी, जिसका उद्गम किसी

को मालूम नहीं। ढाल पर काफी चौड़ी हो गई है यह चंचळ सरिता । इठलाती-बलखाती नदी लाखों की प्यास बुझाती रहती है। इन्सान तो इन्सान, आस-पास की धरती भी अपनी तृष्णा बुझाते-बुलाते अघा जाती है। इसी नदी की एक भुजा पर बसा है सेदहाँ ।

एक छोटी-सी रियासत। वहाँ से करीब दस मील का फासला तय करने के बाद शहर की आबादी शुरू होती है। शहर की सभ्यता धीरे-धीरे इस गाँव में अपता प्रभुत्व, अपना स्वत्व जमा रही है। इसकी दाहिनी तरफ रामगढ़ रियासत है।

चारों ओर हरे-भरे खेत हैं। दक्षिण की ओर घनी अमराई। आम की सघनता में कोयल की टीस-भरी कूंक, झुकी हुई डालियों पर पड़े झूले और उस पर दीन-दुनिया की सुध बिसारे झूलते 'गाँव के छोकरे ! खेतों में ग्राषीण युवतियों ! और उनके कोकिल कण्ठों से निकलते हुए ये सम्सीहक स्वर-

आइल पुरवइया के लहरा,
नाचे मन का मोर रे!...

कैसा अनोखा दर्द अन्तनिहित है इन ग्रामीण कजलियों में, कान सुने तो दिल निहाल हो जाय। ऐसा ही है यह सेदहाँ । यहाँ की घरती सोने की, पानी अमृत जैसा और लहराते स्वच्छ

वायु में है संजीवनी । एक बार मुर्दे भी साँस लें तो जी उठें। छोटी पहाड़ी के उस पार के जङ्गल में संपेरों की दुनिया है; जहाँ के लोग असभ्य हैं, किन्तु मानवता से अछूते नहीं ! वे सांप काटे सनुष्य को जिन्दा कर लेते हैं। हाथ के स्पर्श से नहीं, जादू-मंतर की कठोर साधना की शक्ति से किन्तु छोटी पहाड़ी के इस पार आधुनिक ढंग से बसे सेदहां के लोग सांप काटे इन्सान को हाथों के स्पर्श से ही जीवित कर लेते हैं।* सेदहां के इस चमत्कारी उपचार के पीछे एक अनोखा इतिहास है।

सेदहां की गोद में सबेरा मुस्करा उठा है। रात की खुमारी लिए दूबों पर ओस की बूंदें अँगड़ाई ले रही हैं। नींद की चादर फेंककर सारा गांव जाग पड़ा है। अपने-अपने काषों में व्यस्त हो गये हैं सभी और आज तो अजीब रौनक बिखरी है सेदहां में ।

लाल-पीली झण्डियां साज-सजावट । ठाकुर ध्रुव सिंह की हवेली तो नवेली दुलहत बन गई है सज-धज कर ।

कच्ची सड़क पर पेड़ की छाया में घरौंदे से खेलते नन्हें-मुन्ने बालक चिल्लाकर एक ओर दौड़े। बड़े प्रसन्न हैं सभी । घूळ भरी देह कितनी आकर्षक लग रही है।

मोहन भैया ... वह देखो पालकी !....' छोटी-छोटी उंगलियों से एक ओर इशारा करता हुबा बोला रवि ।

'कहां रे !...'

'उधर नहीं... उधर मोहन भैया !... तुम्हें दिखाई नहीं पड़ता.... चलो न

दुल्हन देख आवें ।' मचल पड़े सभी बालक ।

'अरे, दुल्हन नहीं है उसमें। कोई साँप काटा आदमी होगा बेचारा !' बोला मोहन- 'देखते नहीं, खेलावत बाबा के चौरे की ओर जा रही है पालकी ।'

*सेदहां शाहाबाद जिले के अन्तर्गत एक गांव है। यहां की यह कहानी मस्तिष्क की कल्पना नहीं। अब भी सांप काटे व्यक्ति का उपचार इसी विधि से होता है। विश्वास न हो तो वहां जाकर देखें ?
- लेखक

खेलावन बाबा का चौरा गाँव के किनारे बट-वृक्ष के नीचे है। वहीं पर साँप काटे इन्सान को जान मिलती है। पहले लोग आदमी को छूकर ही जिन्दा करते थे। किन्तु आजकछ तो बिना छूये ही सन्दिर में बन्द कर देते हैं, फिर 'खेलावन बाबा की जय' बोळकर ठीक कर लेते हैं। इसकी भी कहानी है अजीब-सी ।

'चलो न भैया ... देखें कौन है ?'

'भाग शैतान !... देखा नहीं है क्या ?... कोई आदमी ही तो होगा.... हमारी ही तरह।' डाँटा मोहन ने तो सिठपिटा कर लड़के पुन: अपने घरोंदे के पास चले गये ।

पालकी खेलावन बाबा के चौरे की ओर चली गई ।

मोहन लौटकर पेड़ की छाया में, बैठी युवती के समीप बैठ गया। युवती

गुम-सुम होकर आँसू बहा रही थी। पता नहीं कौन-सी पीड़ा काट रही थी उसे ।

'देखो जो ! इतना इतना मत रोओ... तुम्हारे आँसू मुझसे नहीं देखे जाते... कह तो दिया, जो मर जाता है फिर वापस नहीं आता... भला तुम्हारा छैला, कैसे आ सकता है अब ।' आठ साल का भोळा सोहन बोला ।

"मैं अकेली जिन्दा रहकर क्या करूंगी ? मुझे नदी में डूब मरने दो भाई !...' बोली वह युवती। उसका स्वर मार्मिक था । हवा तक सिहर उठी उसकी व्यथा सुनकर ।

'चुप रहो जी, यहाँ के लोग लोगों को जिन्दा करते हैं। मारते नहीं... मरना ही था तो कलेजे में धड़कन बाँधे नदी किनारे क्यों आ लगी थी ?' नन्हें मोहन ने सवाल किया ।

'मुझे तो मालूम ही नहीं कि यहाँ कैसे आई !'

'मालूम क्यों नहीं। नदी में कूदी थी तो मरने के लिए ही नऽ । बाबा कहते हैं जब तक भगवान की मरजी नहीं होती, मरता नहीं है कोई। विश्वास न हो तो बाबा से पूछ लेना। चलो बाबा इन्तजार करते होंगे... मौत आयेगी तो चली जाना ।'

दोनों उठकर एक ओर चल पड़े। मोहव के अङ्गों पर मैले

कुचैले देहाती ढंग के कपड़े थे, और युवती की पोशाक तो अजीब थी,

छाती पर साँप की चोली और कमर में चमड़े का लहेंगा।

उधर पालकी खेलावन नाबा के चोरे पर आकर रुकी। जीवन देनेवाले ग्रामीण एकत्र हो गये ! पालकी का परदा हटाया गया । उसमें से एक नौजवान का खूबसूरत शरीर निकाला गया जो इस वक्त विक्कृत हो रहा था। चेहरा कुछ काला और गोरा गोरा शरीर हल्दी की तरह पीला हो गया था। मुँह से झाग बह रही थी। साँप डंसे नौजवान को खेलावन बाबा के मन्दिर में डाल दिया गया। मन्दिर के भीतर कौन था, कुछ पता नहीं। बाहर से मन्दिर का दरवाजा बन्द कर दिया गया। गाँव के लोग एक स्वर से आकाश की ओर निहार कर चिल्ला उठे-

'खेलावन बाबा की जय !' जयकार के उदघोष से शून्य गगन गुअरित हो उठा । दो-चार बार यही क्रिया संम्पत हुई। और तब - हवा का एक तीव्र झोंका आया ।

थोड़ी देर बाद ही मन्दिर के भीतर से किसी ने चिल्लाकर दरवाजा खटखटाया-

'खोलो।... खोलो दरवाजा !'

साँप के जहर से मृत नौजवान, जिन्दगी की साँस सँभाले सामने खड़ा था ! उसका शरीर पीला नहीं था अब । चेहरे की स्याही मिट चली थी। मुँह से झाग का वहना बन्द हो गया था। यही तो या सेंदहाँ का दैवी चमत्कार। उसी समय कोई घुड़सवार आंधी की तेजी से आया वहां। कूद पड़ा घोड़े से और दौड़ा नौजवान की ओर - पता नहीं क्यों ? सभी चकित थे !

******

महेंगू का घोड़ा तीर की तरह सरपट भागा जा रहा था। अब वह सेंदहाँ के इलाके में प्रविष्ट हो चुका था। खेत-खलिहाव रौंदता महेंगू का घोड़ा दौड़ रहा था बेतहाशा । दौड़ते-दौड़ते घोड़ा कच्ची सड़क पर आ गया जो रमजानपुर की ओर गई थी। सामने से दो व्यक्ति आपस में बात करते जा रहे थे। एक था आठ साल का बच्चा और दूसरी थी युवती। दोनों बातें करने

में इतने तल्लीन थे कि पीछे से जाते घोड़े की सुध भी नहीं थी।

'यहाँ तो अजीब बात है। लोग कैसे ठीक कर लेते हैं साँप डँसे आदमी को मंत्र भी तो नहीं पढ़ते' युवती कह रही थी ।

'तुम क्या जानो ?... बाबा कहते हैं, खेलावन बाबा भगवान है... उनकी सहिमा अपार है....'

'खेळावन बाबा थे कौन ?'

'भगवान थेः विश्वास न हो तो बाबा से पूछ कर देखो ।'

युवती बालक की ऊंगली थामे उसके भोळे चेहरे को देख रही थी और बालक कौतूहल से उसे देख रहा था ।

दोनों बातें करने में लगे थे। उधर महेंगू का घोड़ा आ रहा या पीछे से ।
महेंगू अन्धा बनकर घोड़ा दौड़ा रहा था। उसे सिर्फ दिखाई पड़ रही थी

सजल की मौत। अपने मालिक की जिन्दगी के लिए परेशान था वह। रास्ते में कौन मरता है कौन जीता है, उसे फिकर नहीं। यहाँ तक कि अपनी सुध भी नहीं थी उसे । घोड़ा बिलकुल करीब आ गया था दोनों के ।

'अरे, मोहन का बच्चा । जान भारी हो गई है क्या तेरी... भाग-भाग, पीछे घोड़ा आ रहा है... कैसा अंधा सवार है...' खेत में काम करती किसी महिला ने चीखकर कहा ।

सुना मोहन ने तो सजग हो उठा। फिर कर देखा उसने, घोड़ा सर पर आ गया था। उसका दिसाग चकरा गया आकस्मिक विपत्ति देखकर । वह युवती से लिपट गया भय के सारे । किधर भागे, किधर नहीं भागे, शीघ्रता से युवती भी नहीं समाझ सकी और घोड़ा आगे निकल गया ।

दोनों के मुख से चीख निकल पड़ी। घोड़ा दोनों को ढकेलता आगे बढ़ गया । खेत की मजदूरिन दोनों के पास दौड़ी गई ।

महंगू के पीछे बैठा संपेरा चीख की आवाज सुनकर सजग हो गया।
उसने पीछे मुड़कर देखा और जसके मुंह से निकला-'महंगू, घोड़ा रोक दो... गजब हो गया ।'

'गजब हो गया है तभी तो घोड़ा दोड़ा रहा हूँ.... चुपचाप बैठे रहो... हवा रुक सकती है, घोड़ा नहीं रुक सकता...'

'तुम्हारे षोड़े ने जान ले ली, खून हो गया महेंगू भाई !'

खैर ! जो हो गया सो हो गया मगर रुक नहीं सकता वह... और घोड़े की

चाल कम नहीं हो सकती। घोड़ा रुका तो खेळावन बाबा के चौरे पर ही आकर। घोड़े पर से उतरा महँगू।

महंगू ठीक उसी समय पहुँचा था वहाँ जब मंन्दिर का दरवाजा खोला था लोगों ने और मौत की नींद त्याग कर सजल ने जीवन की आँखों से बाहर झांका था। याने मालिक को बरकरार देखकर महेंगू की खुशी आसमान चूमने लगी ।

कुछ क्रोधित उत्तेजित भीड़ वहाँ आई। वे लोग बोले- यही है वह घुड़सवार !.... क्यों जी, घोड़े पर चढ़कर अन्धे हो गए थे क्या ? या आसमान पर उड़ने लगे थे ?... कभी तुम्हारे बाप ने भी सवारी की थी या तुम्हीं कर रहे हो? इधर देखो तो जरा।'

जरा-सा ही तो देखा महंगू ने उधर । किन्तु देखने के बाद उसकी जान सूख गई। खून पानी होने लगा। मोहन के साथ वाळी युवती थी यह। सर से खून बह रहा था उसके ।

'चमकी ' जब सँपेरे की निगाह उस पर पड़ी तो चीख पड़ा वह । आगे बढ़कर युवती को बाहुओं में बाँध लिया - 'क्या मेरी आँखें सपना देख रही हैं। यह क्या देख रहा हूँ मैं।'

चमकी ही थी वह। मगर सँपैरे को यकीन नहीं हो रहा था। चमकी को तो साँप ने डंस लिया था। चिकोरा ने उसे नदी में बहा दिया था। पुकार सुनकर युवती की जाँखें खुल गई ! उसने संपेरे को देखा तो देखती रह गई। कुछ देर तक पहचानने के पश्चात् होठों से बोल फूटे- छबीले भैया !'

छबीले ही था वह संपेरा। चिकोरा का शागिर्द ।

दोनों एक-दूसरे के गले मिलकर सिसकने लगे। अपने छोटेः से जीवन की लम्बी कहानी एक-दूसरे की ओर देख-देखकर सुनाने लगे। दोनों की जुबान चुप थी किन्तु आँखें बोल रही थीं।

'छबीछे ?' चमकी के होंठ फड़के ।

'चमकी! मेरी बहन... ये क्या देख रही हैं मेरी आँखें.... कहाँ भयानक सांप के विष से भरी चमकी! कहाँ जिन्दगी लेकर हंसती तुम ?... मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है... उस्ताद कसम ! बताओ जल्दी... नहीं तो पागल हो जाऊँगा मैं !'

'तुम ठीक देख रहे हो छबीले भैया !.. तुम्हारे सामने वही चमकी है... यह गाँव जिन्दगी देता है... नहीं जानते ?'

'हो चमकी !... देख न राजा साहब को।' कहकर सजळ की ओर देखा छबीले ने ।

चमकी की नजर भी उधर उठी 'अरे' चौंक पड़ी वह । आज क्या-क्या देखने को मिल रहा है उसे। यह तो वही है, ठीक वही शहरी छैला | उसकी आँखों का सपना ।

'छैला!... मेरे बाबू !...' कहकर चमकी सजल की और दौड़ी । दौड़कर उसने अपना सर उसके पावों पर पटक दिया।

आस-पास खड़े ग्राधीण भी आश्चर्षचकित से दोनों का मिलन देखते रहे। महँगू भी काठ बनकर विस्फारित नयनों से देखता रहा । माजरा किसी की समझ में नहीं आया ।

चमकी विभोर थी और उसका छैला चकित । चमकी के हृदय में मिलन की आग जल रही थी। उसकी आँखों के आंसू बह-बहकर चिर-वियोग के घावों पर मरहम लगा रहे थे ।

अमराई के झुरमुट से दर्दीली आवाज तठकर खुले आकाश की छाती में वेदना-रस खोल रही थी-

नीचे उठत रे लपट अगिन की,
ऊपर बदर की छड्याँ !...
रे बेदरदी सइयाँ !

सजळ ठाकुर को जब देखा चमकी ने तो उसे जिन्दगी मिल गई। मगर लोगों ने जब बताया उसे कि वह 'वह' नहीं है, जो वह समझ रही है तो उसके दिल के अरमान एक ही ठोकर से धूल-धूसरित हो गये। वह आकाश में उड़ती पतंग की तरह

अभिलाषा किए मंडरा रही थी, किन्तु बीच ही में डोर टूट गई बौर लड़खड़ा कर जमीन पर आ रही। कितनी अभागित है चमकी। जब-जब उसने अपने छैला को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, तब-तब प्यार की अभिलाषिनी

नारी के करों में खार ही चुभे। कलेजे पर पत्थर रखकर उसने एक बार फिर निहारा सजल की ओर, और देखती रह गई। भींगी भींगी आँखों में वेदना के आँसू भरे, उसने पहचाना। वह सचमुच वह नहीं था मगर था उसी का प्रतिरूप । भगवान भी मजाक उड़ाने के लिए कभी-कभी कैसा निर्माण कर देता है ।

'मुझे साफ करता बाबू !.... मेरी आँखें अन्धी हैं और अन्धी आँखें अंधेरा ही देखती हैं हमेशा, मुझे धोखा हुआ सरकार ! एक मुद्दत से धोखा ही खाती रही हूँ।'

और सजल समझ नहीं पा रहा था, आखिर यह सब हो क्यों रहा है ? वह आश्चर्य से भरे नयनों से सबको बारी-बारी से देख रहा था। उसके चकित नयनों में प्रश्न डोल रहे थे।

अपने को नई जगह में पाकर तो ऐसे ही ज्ञान खो बैठा था।
कौन है यह लड़की !' उसने सामने खड़े महंगू से पूछा ।

यह मेरी बहन है हजूर.... इसकी गुस्ताखी साफ करें....'

संपेरा बोल उठा- आओ चमकी ... इधर आओ ?'

चमकी छबीले के समीप जाकर खड़ी हो गई ।

छैला नहीं मिला उसे मगर छबीले तो मिल गया । दूर देश में अपना दुश्मन भी मित्र बन जाता है। कम से कम छबीले उसको सहानुभूति तो देगा ही। उसी समय भीड़ चीरकर एक व्यक्ति बाया और बोला- 'ठाकुर साहब !

आपको राजा साहब याद फरमा रहे हैं...' कोई लठैत था वह ।

राजा साहब से उसका मतलब सेदहाँ के स्वत्वाधिकारी ठाकुर ध्रुव सिंह से था। राजा साहब को जब महुवारी के ठाकुर सजल के आने की खबर मिली तो उन्होंने सत्कार करना उचित समझा। सजळ थोड़ी ही देर बाद ध्रुव सिंह के सामने था। राजा साहब

के रोबीले व्यक्तित्व से वह बहुत प्रभावित हुआ ।

ठाकुर ध्रुव सिंह की वर्षगाँठ थी आज । गाँव की रियाया तारों के समूह की तरह हवेली में छाई थी। शहर के भी मित्रादि पधारे थे, सहदय ठाकुर साहब की लंबी जिन्दगी की शुभकामना के साथ ।
लोग उठ उठकर ठाकुर साहब की अभ्यर्थना कर रहे थे । सजल भी भेंट करने उठा, किन्तु खाली हाथ ही-

'बड़े राजा ! आपके पैरों को धूल हूँ मैं तो आपके गाँव में मुझे जिन्दगी मिली है। आप महान हैं और आपका गाँव भी ।' कहतर सजल ठाकुर ध्रुव सिंह के पैरों पर झुक पड़ा।

बीच ही में ठाकुर साहब ने पकड़कर सजल को हृदय से लगा लिया । सजल धन्य हो उठा।

सूरज पहाड़ी के उस पार उतरने लगा । चारों ओर धुंधलका छा गया। हवेली में गैस जल उठे । तीव्र प्रकाश से हवेली आलोकित हो उठी। कुछ

मेहमान तो शाम की ठण्डी हवा खाने और ग्रामीण दृश्यों का अवलोकन करते नीकल पड़े, मगर सजल नहीं गया। वह ठाकुर साहब और अन्य मेहमानों के पास ही बैठा रहा। सजल के बगल में एक नौजवान बैठा था । व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली था ।

'आपका परिचय जान सकता हूँ ?' सजल ने पूछा।

'इन्हें नहीं जानते, ये हैं रामगढ़ रियासत के छोटे कुंवर चंचल, अचल जी के अनुज वे अस्वस्थ हैं... अजगर के पेट में चले गये थे और फिर वापस आ गये इनके पिता से खूब पटती थी मेरी ।' ठाकुर साहब बीच ही में बोल उठे ।

'यही बात संपेरा भी कह रहा था।' सजल ने कहा ।

'संपेरा कौन... कैसी बात ?' चन्चल उत्सुक हो उठा ।

'यही कि उसके गाँव का कोई टिकोरा अजगर के आया पा.... उसके पेट से एक परदेसी निकला, आदि-आदि ।... जाने दीजिए... मुझे उसकी बातों पर पहले विश्वास नहीं हुया; किन्तु आपके भाई ही वो परदेसी हैं जानकर आश्चर्य हो रहा है।'

'कहाँ है वह संपेरा !.....मैं उससे मिलना चाहता हूँ।'

वह तो मेरे गाँव चला गया!..' कहा सजल ने और उसने संपेरिन लड़की के बारे में भी बताया ।

लड़की के बारे में सुनकर चञ्चल सोचने लगा - कहीं मैना ही तो नहीं है वह लड़की, तभी तो परदेसी छैला कहकर सजल के पैरों से लिफ्ट गई थी। तो क्या टिकोरा ने मैना को जिन्दा कर लिया सेदहां लाकर ।

'उस लड़की का नाम क्या है ?'

'नाम तो याद नहीं आ रहा है मुझे। संपेरा कह रहा था, वह उसकी बहन है। शायद वह भी उसके साथ ही गाँव गई।'

'मैं उससे मिलूंगा; कब चल रहे हैं आप ?'

'कल सुबह ।'

'ठीक है.... मैं भी चलूंगा, आपको कोई एतराज तो...'

'कैसा एतराज ? मेरे लिए तो सौभाग्य की बात होगी ।'

एक लठैत आया और उसने ठाकुर साहब के हाथ में एक चिट्ठी थमा दी। लिफाफे पर लिखा था- 'चन्चल' !

ठाकुर साहब ने वह खत चञ्चल को दे दिया । व्यग्रता के साथ उसने वह खत खोलकर पढ़ा ।

चंचल !
तुम्हारे भैया की हालत नाजुक है। किन्तु घबड़ाने की बात वहीं । शीघ्र आ सको तो उत्तम...

'बाबूजी ।' चंचल ने ठाकुर साहब को सम्बोधित कर कहा-'मैं जाऊँगा अभी... भैया की तबीयत ठीक नहीं है..' चन्चल के स्वर में गंम्भीरता थी, मगर अन्तर में थी हलचल ।

पत्र ठाकुर साहब के हाथों में दे दिया उसने ।

चंचल रात को ही जाने के लिए तैयार हो गया। रास्ते की भयानकता उसके लिए अवरोध नहीं बन सकी। अपने जीवत की महत्ता उसके लिए कुछ नहीं। उसे अपने भाई की जिन्दगी अधिक मूल्यवान प्रतीत हो रही थी इस समय। रात के अंधेरे में चंचल

नारी मन लिए रामगढ़ की ओर चल पड़ा। मोटर भाग रही बी। पहाड़ी और खतरनाक रास्ते से गुजर रही थी मोटर । जरा भी चूकने पर मौत । लेकिन चंचल के आगे मौत का नहीं कुँवर की जिन्दगी का सवाल था और उधर सजळ, ठाकुर ध्रुवसिह से बातें करने में विभोर था। वह जीवन देनेवाले गाँव के विषय में बिस्तृत जानकारी हासिल करना चाहता था ।

जब सजल ने वहाँ के इस दैवी चमत्कार के इतिहास के बारे में पूछा तो ठाकुर साहब बोले- इसके पीछे एक अनोखी कहानी है बेटा 1... बड़ी दर्दीली- आंसू से लबरेज... उस वक्त मेरा जन्म भी नहीं हुआ था...इस गाँव के एक किनारे....'

****

पूर्व की ओर एक पुराने ढङ्ग का खपरैल । ईट-पत्थरों के जोड़ पर खड़ी, खून-पसीने के त्याग एवं अभाव के दुलार से निर्मित - मकान के भीतर एक परिवार रो-गाकर जीवन यापन करता था । पेट के लिए मेहनत जरने वाले चार भाई ।

तीन की शादी हो चुकी थी। फूल जैसे बच्चे और सुशील पत्नियाँ , सबसे छोटे की शादी अभी नहीं हुई थी। छोटे भाई का नाम था खेलावन । बीस-बाइस का हीरा जवानः । बदन गठीला ! कसरत की कसौटी पर कसे अंग। होठों पर हल्की मूञ्छे , जवानी की परिचायक । आँखों में लाल-लाल डोरे। आँखें दिन में नई चमक देखतीं और रात को नींद में मादक सपने ।

साल भर बाद खेळविन की शादी हो गई। शहनाई बजी । खेळायन रात दिन अपने मन में एक मीठी हलचल किए सुहाग-रात का इन्तजार करने लगा। उसकी साध पूरी हुई किन्तु अर-मान अधूरे रह गये। जीवन का यह नया मोड़ उसे उमंगों से भरा मालूम पड़ा। किसी काम में उसका जी नहीं लगता। सिर्फ पत्नी से बातें करने में, उसके सम्पर्क की मादकता लूटने में असीम आनन्द की अनुभूति होती ।

रोज अपने भाइयों के साथ खेत पर जाता। पर उसका मन

पङ्ख लगाकर कहीं और उड़ता रहता, हाथ कहीं और चलते। कोयल की कूक, पपीहे की पुकार, बाँसुरी का स्वर, चिड़ियों की चहक, पेड़ की ठण्डी

छाँव, अन्न के दाने, पानी के कतरे बौर चंचल नदी की शोख लहरों में एक अजीब आकर्षण, विचित्र परिवर्तन दोखने लगा था उसे । पूरा दिन तड़पन की ज्वाला में जलते बीत जाता । शास बाती और घर पहुँच जाता; तब कहीं उसके बेताब दिल को करार हासिल होता। उसकी कुछ बोलती निगाहों को राहत मिलती ।

- घर जाने पर उसकी आँखों को झलक तो मिल ही जाती, लेकिन घर के बड़ों के सामने जुबान कुछ नहीं कह पाती। संकोच की अर्गला होठों पर लगी रहती। जवानी की रातें उसे बहुत छोटी लगतीं । प्रत्येक दिन उसे आगामी रात की प्रतीक्षा रहती। उधर खेळावन के खेत में मकई और बाजरे के पौधे जवान होने लगे और इधर उसके मन की साध भी अंगड़ाई लेने लगी। वह रोज रात में खेत के मचान पर जाकर सोता लेकिन जागकर करवटें बदलता रहता। उसकी बेचैनी बढ़ती जाती और इस तरह सवेरा हो जाता ।

उसके भाई उसकी मजबूरी पर ध्यान नहीं देते। पता नहीं वे कभी जवान हुए थे या नहीं। उनके मन में हिलोरें उठती थीं या नहीं। अगर उठती थीं तो घायल की गति घायल क्यों नहीं जानता ? उसे अपने भाइयों पर क्रोध आता, किन्तु विवश होकर रह जाता। मगर आज वह विरोध करेगा। रात को खेत न जाने परतुल गया वह । शाम हुई और फिर रात।

'खेलावन ?' बड़े भाई की आवाज थी ।

'भैया' गम्भीर स्वर में वेदना का सम्मिश्रण था । 'चलो खेत पर ?'

'भैया !' आगे कुछ नहीं कह सका वह। उसके सन की साध मन ही में रह

गई। साहस नहीं कर सका खेळावन कि कुछ कहे। कुछ कहकर उदण्ड बनना नहीं चाहता था । मन मारे पीछे-पीछे

चल पड़ा। एक ओर भाई के आदर का प्रश्न था, दूससे ओर दिल की आवाज थी । द्वन्द्व मच रहा था उसके मन में ।

'भैया ! सिर में दर्द हो रहा है।' हिम्मत कर कहा उसने ।

'चल-चल ! भरी जवानी माझा ढील ---बहाना बनाता है। हम भी जवान थे। मगर सर में दर्द तो कभी नहीं हुआ.... यह दिल का दर्द है... यह सब ठीक नहीं। अभी बच्चे हो तुम ।'

खेळावन का अनुरोध भी अस्वीकृत हो गया। मूक: पीछे-पीछे चलता रहा वह। कुछ ही दूर चलने पर चीख पड़ा खेलावन । पैर पकड़ कर बैठ गया वहीं जमीन पर ।

'मैया ! किसी कीड़े ने काट लिया मुझे !' खेलावन बोका ।

'चल-चल, समझता हूँ तेरी चाळबाजी.... कहाँ सोना चाहता है !.... मैंने कहा न, बुरी बात है यह सब ।' बड़े भाई ने डाँटा ।

फिर कुछ बोळा नहीं खेलावन । विक्षुब्ध होकर मन में पीर की कसक और तीर की चुभन लिए चुपचाप मचान पर जाकर सो रहा । उसका बड़ा भाई खेत के दूसरी ओर मचान पर खर्राटे भरने लगा। तभी किसी कोने से देहाती तराने की स्वर लहरी वातावरण में एक मदहोशी बोल गई ।

घेरि-घेरि आवे घटा घोर मन मोर नाचे !
रसे-रसे बहेला बयार .
बिछुआ तऽ मारे रामा अँगुरी के पोरवा !
रग-रग टीसेला हुमार !

हवा सिहर उठी । सियारों के स्वर ने ताल दिया उसमें । खेलावन ने सुना, सुनता रहा- न जाने कब तक ।

ओस चाट चाट कर रात की रानी जवान हो रही थी। ठंडी ठंडी हवा के हल्के झोंके खेलावन को लू जैसे लग रहे थे। दिन को जगाकर रात सो गई। अभी कुछ-कुछ ही उजाला हुया था । नीचे से खेलावन को किसी ने पुकारा। खेळावत ने उत्तर नहीं दिया। वह सोया था दिल में आग लेकर। किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता वह। समस्या तो उसकी जटिल थी।
१३७

जो अपना हल नहीं पा सकता, दूसरे का समाधान कैसे कर सकता है।

'अरे बो खेलावन !... रात भर सोया, नींद नहीं पूरी हुई क्या !... खेलावन ।' शायद खेळावत के बड़े भाई ही थे ।

जवानी की नींद तो हिमालय की तरह होती है, भला क्यों डिगने लगी । खेळावर जागा नहीं तो उसका भाई ववान पर चढ़ा । हाथ से हिलाया-डुलाया। फिर भी नहीं जगा वह ।

'खेलावन ' कहते-कहते जब बड़े भाई ने उसके चेहरे की ओर देखा तो चौंक पड़ा ।

देखा-खेलावन के मुँह से सफेद-सफेद साबुन के फेन की तरह कोई चीज निकल कर बह चली थी। चेहरा विकृत, शरीर स्याह और आँखें पथराई थीं। बड़े भाई का दिल घड़का ।

मचान से उतारने पर पता चला कि साँप ने डंस लिया है उसे । रात की घटना ख्याल आई बड़े भाई को। सर पर हाथ रखकर रह गया वह । रो उठा सारा परिवार। नवेली दुछहन की माँग का सुहाग आकस्तिक विपत्ति ने पोंछ दिया, गोरी-पोरी कलाइयों में खनक पैदा करने वाली चूड़ियाँ टूटकर बिखर पड़ीं।

कितनी बड़ी भूल की थी बड़े भाई ने। लेकिन अब क्या था । खाली पिंजड़ा ही तो था। कहने-सुनने के लिए कहानी ही तो रह गई थी। भोळी नारी के पैरों का महावर अभी तक चमक रहा था। किन्तु माँग का सिन्दूर उड़ चुका था ।

दिन बीत चले। घर वाले भूल गये खेळावन को किन्तु भोळी नारी पति की याद में घुलती रही। घुलते-घुटते बिलकुल घुल गई । एक दिन बीमार पड़ी वह ? दो-चार दिन बुखार आया। पति के वियोग में जलने वाली सारी एक दिन सबकी मोह-माया त्याग चिता पर जाकर सो गई। धरती का आधार पाकर जो आपस में मिल न सके, वही निराधार आकाश में एक हो गये।

महीने भर बाद ! एक रात गाँव के किसी व्यक्ति को स्वप्न हुआ । उसने सपने में खेळावत को देखा, उससे बातें की ।

खेळावत ने कहा- 'मैं सांप के जहर से सर गया लेकिन

१३८

आज के बाद दुनिया का कोई भी विषेला साँप किसी को भी क्षति नहीं पहुंचा सकता । सौंप ने मुझे डसा, अब मैं साँप का दुश्मन बन गया हूँ। जाओ तुम, ठाकुर साहब की गोशाला में; गाय को करैत ने डंस लिया है, मैं जैसे बताता हूँ वैसा करना , अभी जाओ ।'

और तब वह उठा जाने के लिए तो उसकी नींद खुल गई । अपनी मूर्खता पर उसे हँसी आई ! रात के अँधेरे में खेळावन की वात उसके कानों में गूँजती रही। आँखें बन्द कर फिर सो गया वह । अभी झपकी ही आई थी कि हवा का तीव्र झोंका आया, बंद दरवाजे खुल गये, किसी छाया ने प्रवेश किया । छाया सोये व्यक्ति के सिरहाने आकर खड़ी हो गई। उसके हाथ उठे और एक चपत-- चीखकर जाग उठा वह, अपना बाल सहलाता हुआ । लालटेन जलाई उसने। इधर-उधर देखा, लेकिस कोई हो तो दिख पड़े । सोचा सपने में सब कुछ हुआ है। फिर सो गया । फिर वही घटना। वह जाग पड़ा। उसे लगा जैसे कोई जबरदस्ती गोशाले की ओर खींचे लिए जा रहा हो।

खेलावन की आवाज अब तक उसके कानों में गूंज रही थी। अव्यक्त शक्ति की प्रेरणा के वशीभूत होकर वह पहुँचा गोशाले में । उसने जो देखा चकित रह गया। चार-पाँच ग्वाले खड़े थे । गाय जमीन पर हुँकारी भर-भर कर तड़प रही थी ।

सपना उसे सत्य के रूप में मिळा ! सपने में बत्ताई विधि द्वारा गाय का

उपचार करने लगा वह। उसकी विचित्र अवस्था हो रही थी। छगता था जैसे उसके मन में बैठा कोई आदेश दे रहा हो वैसा करने के लिए। वह अर्द्ध विक्षिप्त-सा हो उठा था । गाय के निकट पहुंचा और चिल्लाया- 'खेलावन बाबा की जय !'

उसके हाथ ऊपर उठे और तड़ाक !... गाय के जिस अङ्ग में साँप ने डँसा था उसी जगह पर उसका हाथ दो-तीन बार गिरा । वह धीरे-धीरे बेहोश होने लगा, छटपटाने 'लगा ठीक गाय की तरह, लेकिन गाय ठीक होने लगी। गाय का जहर उस पर चढ़ने लगा पा। लोग-विस्षय-विभोर होकर देख रहे थे सब कुछ ।

'पानी !...' उसके सुख से निकला ।

पानी आया। पीने लगा वह और पी गया पूरी बाल्टी। तब कहीं उसकी छटपटाहट शान्त हुई। धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया वह।

'उसी दिन से यह गाँव जीवन देने लगा... गाँव का प्रत्येक व्यक्ति खेलावन बाबा को बुलाकर साँप का विष उतारने में सफल होने लगा।' करुण स्वर में बोले ठाकुर ध्रुबसिह - 'मगर अफ-सोस खेलावन बाबा के खानदान में से अगर कोई पुकारता है तो नहीं आते ... उन्हें अपने परिवार से नफरत है। वह तो घर ही बरबाद हो गया है। जिस घर का दीया ही बुझ गया, वहाँ बँधेरा न होगा तो और क्या होगा... इसके आगे भी कहानी है बेटा !... तुम्हें नींद तो नहीं आ रही है ?'

'नहीं... यहाँ के लोग मौत की नींद तोड़ सकते हैं... यह तो रात की नींद है... आप आगे कहिए ।' सजल तकिये को कुहनी के बीचे दबाकर सुनने के लिए उत्सुक हो उठा।

'वहाँ पर आजकल खेलावन बाबा का मन्दिर बना है वहीं पर स्वप्त देखने वाले व्यक्ति का घर था। समय के साथ-साथ उसका निशान मिट गया और उसकी जगह बरगद का पेड़ निकल आया । लोग उसे 'चौरा' कहने लगे। यह नाम कैसे पड़ा -- पता नहीं.... बरगद की जड़ों पर अनन्त चतुर्दशी के रोज एक आदमी बैठा था। किसी राही ने उससे आकर पूछा-

*****

'यह कौन गाँव है भाई !'

'सेदहाँ !' सुनकर परदेसी बैठ गया; बरगद की छाँव में सुस्ताने के लिए ।

'क्या नाम है तुम्हारा ?' परदेसी ने पूछा !

'खेळावन ।' खेतों की ओर देखता हुआ बोला वह व्यक्ति ।

कुछ देर तक दोनों में बातें होती रहीं, फिर उठकर चल पड़े गाँव की ओर । पगडण्डी पर चलते-चलते परदेसी ने फिर पूछा-क्या नाम बताया या भाई तुमने ?'

'भिखारी !'

'अजी, वहाँ तो कुछ और बताया था तुमने ?'

'तुम्हें याद नहीं होगा...'

राही उसे पागल समझ बैठा ।

****

'उसी दिन से लोगों को यह पता लगा कि वो अनन्त चतु-देशी के रोज बरगद की जड़ पर बैठता है उसमें खेष्ठावन बाबा की आस्था प्रवेश कर जाती है... उसे लोग खेलावन बाबा ही सम्बोधित करके कोई प्रश्त करते हैं, सभी प्रश्नों का उचित उत्तर देते हैं वे । आज भी यह घटना पूर्ववत् होती है... शंका की तनिक भी गुञ्जाइश नहीं इसमें...'

'अगर किसी को, जो विदेश में हो, साँप काट ले तो खेछा-वन बाबा बुलाने पर वहाँ पहुँच जायेंगे ?' सजल बोला ।

'अवश्य ! वे कहते हैं, मेरी गति सन की तरह है लेकिन पुकारने वाला सेदहाँ का ही होना चाहिए।' ठाकुर साहब ने कहा । इस विधि से तो काफी धन एकत्र किया जा सकता है।'

नहीं... खेलावन बाबा का आदेश है, जिस दिन इस भलाई की खातिर एक पैसा भी किसी ने लिया, उसी दिन से पाँव छोड़ कर चले जायेंगे वे.... इसी भय की बजह से तो उन्होंने सन्दिर बनबाने की आज्ञा दी। अब तो मन्दिर के भीतर आदमी बन्द करते ही स्वस्थ हो जाता है... अन्दर शेषनाग की प्रतिमा रखी है।'

'यह तो मुझे मालूम है जब मैं होश में आया तो मुझे लगा कि मेरे साथ कोठरी में कोई और है. शायद उन्हीं की पवित्र आत्मा रही होगी...' सजल ने कहा ।

'हो सकता है ।' ठाकुर साहब ने कहा- 'यही इतिहास है इस दैवी चमत्कार का --कल्पना से भी अधिक आश्चर्यमय है यह, पर है सत्य... अब सो जाओ, रात काफी बीत गई ।'

लेकिन सजल को नींद नहीं आई उस रात । कभी खेलावन बाबा की बात को, कभी चमकी के बारे में और कभी घर पर

रचना के लिए व्यग्र हो उठता। थोड़ी देर के लिए आंख झपकी भी तो पलकों की छाया में विचित्र-विचित्र सपने जाग पड़े।

दूसरे दिन सजळ महवारी के लिए रवाना हुआ ।

****

रानी साहिबा ठीक हो गई हैं। पञ्चल भी सेदहाँ चला गया है। किन्तु अचल बीमार है। उसकी हालत दिनोंदिन बदतर होती जा रही है। आजकल कुँवर बुखार एवं मानसिक व्यथा से पीड़ित है। मैना की याद, माँ की बीमारी के पीछे रात-रात भर का जागरण और उपवास ने उसे मरीज बना दिया है।

अचल के चेहरे पर अजीब किस्म का रंग चढ़ रहा है आज-कल । हमेशा

सर में पीड़ा और दिल में बेचैनी छाई रहती है। उदास-उदास आंखें किसी को खोजती रहती हैं। किसी से अधिक बोलना नहीं सुहाता है उसे, इसलिए बेमन पड़ा रहता है। कभी हँसता भी वहीं, मानो दूनिया की सारी खुशी, सारी रंगीनी उसकी दृष्टि में गुनाह हो। कविता हमेशा कुँवर के पास बनी रहती है। उससे भी प्रेम की बातें नहीं करता बह। हरदम विक्षिप्त होकर कुछ सोचता रहता है। आँखें खुलती हैं, मगर कविता को नहीं देखती; देखती हैं तो सिर्फ छत । कुँवरानी पति का यह व्यवहार देखकर विचलित हो उठती है। पर अपने हृदय की व्यथा को होठों से बाहर नहीं निकलने देती। मूक साधना में रत कुँवर के अधर कभी हिलते हैं, जबान किसी को पुकारती भी है, किन्तु जो वाणी निकलती है, उसमें कुवरानी कविता नाम नहीं रहता। रहता है तो सिर्फ मैना का।

मानसिक अवस्था ठीक न होने के कारण वह कभी-कभी झुंझला पड़ता है, क्रोधित हो उठता है। यहाँ तक कि वफादार बारिस भी उसके क्रोध का शिकार हो जाता है, क्योंकि वह हमेशा उसकी खिदमत में हाजिर रहता है। कुवर एकान्त का अभिलाषी है, पर लोग उसे तन्हाई में छोड़ते नहीं ।

उसके अन्तर को कहीं राहत मिलती है तो सिर्फ मैना के

स्मारक के पास । वह स्मारक के पास बैठता है... बैठा रहता है। खुली-खुली आँखों में वेदना के कुछ आँसू लिए निहारता रहता है। अपार दौलत के अधिपति को भी दुःख हो सकता है, कोई समझ, नहीं पाता। यह तो सिर्फ कविता समझती है और समझते हैं डाक्टर दास ! और कुछ-कुछ वारिस भी। वही लोग तो हमेशा अचल की गतिविधि पर निगाह रखते हैं।

रानी माँ भी जानती हैं किन्तु कहती कुछ नहीं।

कोई अचल की बीमारी की दवा नहीं ला सकता । कविता भी पड़ी-पड़ी अपने पति की पीड़ा देखती रहती है। जीवन में पति के दुःख-सुख की भागिनी नारी अपने पति के दुःख में भी हाथ नहीं बँटा पाती है। कोई नहीं जानता कि कुवर का डग-मगाता उदित जीवन कब लड़खड़ा कर अस्त हो जायगा ।

अचल की बीमारी बढ़ती जा रही है।

रात हो गई है। बाहर ठण्डी हवा सनसना रही है। कुवर को बेखबर नींद में लीन देख रही है कविता । देख रही है कि कुछ ही दिनों में कैसा हो गया है कुवर। गुलाब जैसे चेहरे पर हल्दी जैसा पीलापन छितरा गया है। कविता की वेदना बढ़ने लगी है। उसकी आँखें रोने को आतुर हो उठी हैं।

जब कभी कविता कुछ पूछती है तो अचल जवाब नहीं देता । कभी-कभी अन्तर की पीड़ा कसक जाती है तो पति की खामोशी से 'प्रताड़ित नारी, महल के किसी कोने में जाकर दो-चार आँसू बहा लेती है। कुवर सोया है अभी । कविता उठकर बाहर आ गयी है। इधर-उधर देखकर अपने दुख को दूर करना चाहती है। चबूतरे पर बैठकर फाटक की ओर देखने लगी है। लोहे के फाटक पर चढ़कर ललित झूल रहा है। अपने बच्चे के साथ गुलनार भी वहीं है। कविता आजकल छोटे ललित को भी प्यार नहीं कर पाती। ललित भी आजकल उसकी ओर आकर्षित नहीं होता। अब तो काफी बड़ा हो गया है। कुछ सोचने की शक्ति भी आ गई है। अपनी ओर से माँ को निराश देख

उसने भी मुख मोड़ लिया है। वह तो बच्चा है, माँ की ममता न सही; किसी और के प्यार से ही सन्तुष्ट हो जाता है। अधिकतर रानी माँ के पास ही बना रहता है। रानी माँ भी पड़ी पड़ी अपना वक्त काट लेती हैं।

कविता ही कभी-कभी ललित के लिए लालायित हो उठती है। फाटक से खेलते ललित पर उसकी दृष्टि पड़ी तो उसका कुछ दुःख दूर हो गया। ललित को बुलाया कविता ने । वह नहीं आया । कविता खुद उसके पास चली। लळित भाग चला ।

'देखो... आगे पत्थर है... तेज मत भागो बेटा .... नहीं तो चोट लग जायगी ।'

लेकिन ललित धुन का पक्का है।
बोलता है- 'पहले पकलो तो छही ।'
उसकी तुतलाने की यादत अभी भी बनी है।
सामने से कोई जसीन निहारता आ रहा है और ललित भी बेखबर है। वह नहीं चाहता कि रुककर माँ की पकड़ में आ जाय ।

भागता ललित थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था कि आने वाले व्यक्ति से टकरा गया । कविता घबड़ा उठी। मगर गिरा नहीं ललित । वह आने वाले व्यक्ति के पैरों से लिपट गया। बोला-'आँटी ! हमको बचायो।' दौड़ने के कारण हॉफ रहा था वह।

'जरूर बचायेगा' कहते-कहते उसकी नजर कविता पर पड़ी।

'एनी ! इसने मुझे थका डाला।' कविता पास जाकर बोली।

एनी ही थी वह । ललित एनी को आन्टी ही कहा करता है।॥ एनी अधिकतर महल में ही रहती अब। कभी-कभी अपने घर चली जाती है। चपल से जुदा होने की तमन्ना नहीं उसकी ।

'हमको किस देगी ?' एनी ने ललित से पूछा ।

'यछ ! कहकर ललित ने अपना मुँह एनी के रक्तिम अधरों से सटा दिया ।

'और मुझे ?' कविता ने माँगा ।

'नो ।' ललित बोला । 'यस' और 'नो' एनी ने पढ़ाया है उसे ।.

लात में हमको अपने पाछ क्यों नहीं छुलाती ?'

कविता कैसे समझाती अपनी विवशता ।

'आज सुलाऊँगी राजा-रानी की कहानी भी सुनाऊंगी... मुझे दो ।' कहकर कविता ने अपना मुँह ललित को चूसने के लिए बढ़ाया।

तभी - 'गजब हो गया सरकार !... हजुर कुँवर साहिब अपना सर फोड़ रहे हैं।'

कुंवरानी ने सुना और एनी ने भी ।

बदहवास होकर दोनों दौड़ पड़ों पहल की ओर।
देखा कुँवरानी ने । पागल-सा अचल मैना के स्मारक पर अपना सर पटक रहा है। कई जगह से खून झाँकने लगा है। उसने दौड़कर पकड़ लिया अचल की। कुंवर ने विक्षिप्त आँखों से कविता की ओर देखा।

चिल्ला उठा- मैना ! मेरी मैना ?....तू आ गई....'

आवेश में कुंवरानी को मैना समझकर अचल ने अपने आलिगन में जकड़ लिया उसे !

कितना सुख मिला कविता को। काश वह मैना बन पाती। आंखों से आँसू बह चले। पता नहीं खुशी के या गम के। अचल के कानों में जब कविता का स्वर गया तो उसकी चेतना लौटी, ज्ञान तन्तु सजग हो उठे। उसने मैना की जगह कविता को पाया।

कविता ने कुँवर को पलंग पर लाकर लिटाया। थोड़ी ही देर में वारिस डाक्टर दास को लेकर आया। रानी माँ भी आईं ।

अचल अर्द्ध पागल-सा सबको घूर घूर कर देख रहा है।
रानी माँ, कविता और डॉक्टर साहब अचल के पास बैठे हैं। पास ही खड़ा बारिस अपने आपको मालिक की जान पर कुर्बान करने को तत्पर है।

'इसे क्या हो गया है डाक्टर ! कुछ पता नंहीं चलता..... रानी साहिबा की आवाज असह्य करुणा से भीगी थी।

'घबड़ाने की बात नहीं कोई खास बीमारी नहीं है।' सांत्वना देने के ख्याल

से बोला डाक्टर ।

कुंवर आँखें बन्द किए पड़ा रहा। इन लोगों की बातें भी
१४५

सुनता रहा और मैना को याद भी करता रहा। डाक्टर दास दवा देकर चलने लगे तो रानी साहिवा भी उनके साथ बाहर आई ।

आधे घण्टे बाद कुंवर की आँखों में नींद झूलने लगी। झपकी लेता सो गया वह तो कविता भारी मन किए खिड़की' पर आ बैठी। आसपास की ओर देखने लगी। अपने बेकरार दिल को उड़ते बादलों में उड़ा दिया उसने; किन्तु ठण्डी-ठण्डी बूंदें बरसाने वाले बादलों ने भी शान्ति नहीं दी कविता को ।

****

मुन्शीजी थके-थके सर झुकाये अपनी अलबेली चाल पर थिरकते चले जा रहे थे। किसी की आहट पाकर चौंक पड़े। सामने देखा-अजीब शकल दिखाई पड़ी उन्हें। फाटक पर विचित्र पोशाक में एक लड़की खड़ी थी ।

'ऐ ! कौन हो तुम ? यहाँ क्या लेने आई हो !'

मुन्शीजी को देखकर घबड़ा उठी युवती ।

'यह मेरी बहन है सरकार ।' तभी संपेरे ने आकर कहा ।

'संपेरा, तुम हो ?... कैसी तबीयत है ठाकुर राजा की ?... समझे कि नहीं ? साफ-साफ कहो... महेंगू कहाँ मर गया ? --मुन्शीजी सुनने के लिए आतुर हो उठे ।

'मिठाई खिलाओ सरकार !.... राजा साहब सेदहाँ में जिन्दगी पाकर मेहमानी बजा रहे हैं।'

सुना मुन्शीजी ने तो उनकी साँस भीतर गई! पाँव में शक्ति मिल गई। पैरों तले की भागी धरती वापस आ गई ।

वे भीतर दौड़े, परोसन और रचना को खुशखबरी सुनाने के लिए-

'भाभी, ओ भाभी ? आनन्द मनांओ, समझे कि नहीं?" बाहर से ही चिल्लाते जा रहे थे मुन्शीजी ।

रचना ने सुना तो खिल उठी। इतनी खुशी हुई उसे कि पेट में दर्द उभर आया खुशी के मारे। शायद पेट का सांप क्रोधित हो उठा था खुशी के मौके पर। सभी उसकी सेवा में जुट गये । चमकी और छबीले उस करुण दृश्य को देखने लगे !

घण्टे भर बाद ठीक हो गई रचना। चमकी और छबीले से बातें करने लगी, पलङ्ग पर पड़े ही पड़े। उदास चमकी आंखों में आश्चयं भरे महल के भीतरी आकर्षण को देख रही थी।

'छैला !' खुशी से चीख पड़ी चमकी ।

'क्या है... क्या बात है ?'

'वह देखिये सरकार । मेरा छैला !...' दौड़कर चमकी ने तस्वीर हाथों में ले ली।
उसकी ओर देखकर कहने लगी - 'बोलो जी परदेसी !.... चुप क्यों हो तुम 1... मैं तुम्हारी चमकी हूँ-नहीं पहचानते.... एक टक मत देखो... कुछ बोलो तो सही...'

मगर बेजवान तस्वीर, भला क्यों वोलती ? चमकी उसे कलेजे से लगाकर सिसक पड़ी । मगर उसका छैला पिघला नहीं। कुछ बोला भी नहीं ।
रचना ने चमकी को समझाया- यह तस्वीर मेरे भाई की है... और तस्वीर बोलती नहीं चमकी ।'

'लेकिन यह देखती क्यों है सरकार !'

चमकी के प्रश्न पर मौन रह गई रचना। वह समझ नहीं पाई कुछ । आखिर छबीले ने सारी कहानी कह सुबाई । .

'क्या नाम था तुम्हारे छैला का ।' रचना ने पूछा ।

'शीतल नाम था सरकार !'

'शीतल !...' रचना एक बार फिर चोंकी - 'क्या कहा... शीतल ... यही नार नाम तो मेरे भाई का भी था। जङ्गल में शिकार खेलने गया था... फिर वापस नहीं लौटा। कहाँ है बह ?'

'वह अब नहीं है, उसे तो...' कहते-कहते रुक गया छबोले ।

'मेरे शौहर ने साँप डसा दिया सरकार !... मैं लुट गई !...' कहकर रोने लगी चमकी ।

रचना ने सांत्वना दी। आँसू रोककर सुबकती रही वह ।

अपनी शङ्का मिटाने के लिए बहुत कुछ पूछा रचता ने । चमकी और छबीले ने उसका सही-सही उत्तर दिया। रचना को विश्वास हो गया कि उसी का भाई शीतल चमकी का छैला था। '
" चमकी तुम यहीं रहोगी अब ! तुम्हारा घर है यह.... तुम्हारे

छैला का घर---- बोली रचना, पूरी तरह से अपनेपन से भरी आवाज़ में।

सुनकर चमकी विभोर हो उठी।
बोली- 'सरकार?.... यह मेरे छैला का घर है न । यहाँ की मिट्टी में जान जायगी मेरी तो धन्य हो जाऊँगी ।' चमकी का गला भर आया ।

****

चमकी को छैला न मिला, किन्तु उसका घर तो मिला। नारी के लिए पति के घर में जगह भिल जाय, इतना ही पर्याप्त है। गम के आँसु को याद के दामन से पोंछकर सन्तोष कर लेगी। चमकी के लिए यहाँ का हर जर्रा पूजनीय बन गया ।

चमकी और छबीले आपस में दुःख-सुख की कहानी कह सुन रहे थे ।

चमकी बहुत प्रसन्न हो रही थी। उसका छैला कितना बड़ा आदमी था। जब उसकी सूरत आँखों में तैर उठती तो जुदाई के आँसू पलकों की कोरों पर चमक उठते। लेकिन बहने नहीं देती वह । संजो कर रखती, अमूल्य निधि समझ कर ।

'छबीले भैया .... आगे कहो, मुझे जब नदी में फेंक दिया चिकोरा का क्या हुआ ?'

'इन्सान जोश में अन्धा हो जाता है चमको!... लेकिन जब होश में आता है तो अपने किये पर पछतावा ही हाथ लगता है उसे... तुझे खोकर चिकोरा भी मरने पर उतारू हो गया सारी घटनाएँ सविस्तार सुनाने लगा छबीले । चमकी सतर्क कानों से सुनने लगी -

****

अंधेरी रात ! चिकोरा विदग्ध हृदय लिए चमकी की लाश लेकर नदी के किनारे खड़ा हुआ। एक बार, सिर्फ एक बार उसने हसरत नही निराहों से चमकी के धधकते, चाँदनुमा चेहरे को देखा। उसके चेहरे की शान्ति देखकर उसका दिल कसक उठा । पहाड़ जैसा संपेरा रो पड़ा। अपनी अन्तरवेदना पलकों की ओट में छिपा नहीं सका। उसकी इच्छा हुई कि जिला ले चमकी को, किन्तु जब परदेसी छैला की आकृति याद आई तो

चमकी से भी घृणा हो गई उसे। उसके हाथ उठे। हवा का तीव्र झोंका आया और |

छप ! सन्नाटा चीख पड़ा। चमकी की लाश लेकर लहरें 'रामनाम-सत्य' का शोर मचाती अनिर्दिष्ट दिशा की ओर बह गई । चिकोरा ने आँखें मूद ली। कितना कठोर, कितना स्वार्थी है वह ! चाहता तो चमकी को जिन्दगी देकर जिन्दा कर लेता । लेकिन चमकी तो उससे प्यार करती ही नहीं थी। जीवन पाकर वह उससे नफरत करती और छैला से मुहब्बत । वह अपने परदेसी के वियोग में पागल रहती। एक मर्द यह कैसे बरदाश्त कर सकेगा कि आँखों के आगे ही उसकी औरत गैर सर्द के किए आँसू बहाये; तड़पे । चिकोरा भी मर्द था। उसके लिए यह नाकाबिले बरदाश्त था कि चमकी उसे छोड़कर किसी और से नजर लड़ाये, नजारा लूटे । वह लौटकर गाँव में चला आया । अपनी झोपड़ी में आकर आँसू बहाता रहा, न चाहकर भी ।

बीती बातें याद करने पर रोता, क्रोधित हो उठता और हँसता भी । धीरे-धीरे पागल जैसा होने लगा वह ।

कितना प्यार करता था चमकी को वह - मगर अन्त में चमकी का खून कर दिया। वह खूनी है। टिकोरा की ही तरह। उसके सच में अपने प्रति घृणा उदित हो उठी। ग्लानि से अपना सर पटकने लगा वह। गले में लिप्टे साँप को देखा उसने । कितना भयानक है यह साँप । इसी साँप की तरह वह भी सांप हो गया है।

साँप का जहर उतारने वाला संपेरा स्वयं अपने जहर से मात हो रहा था। उसे साँप से अफरत होने लगी। साँप न होता तो क्या मजाक कि किसी की मौत इतनी जल्दी आ जाती ।

उसने साँप को मन्तर से बाँधकर जमीन पर पटक दिया । मन्तर की आग

से जलने लगा मणिधर। फों-फों फुफकारने लगा वह। उसके मुँह से चिङ्गारियाँ छिटकने छगीं।

'उस्ताद !' तभी किसी ने पुकारा - यह क्या कर रहे हो....

यह बड़े उस्ताद का सांप है... इसे पूजोगे तो ताकत मिलेगी... मारो मत इसे ।'

'तुम चुप रहो छबीले , खबरदार जो मेरे काम में दखलन्दाजी की.... आज गाँव का कोई भी सांप ज़िंदा नहीं रह पायेगा...' और मन्तर पढ़ता रहा चिकोरा ।

थोड़ी देर छटपटाने के बाद साँप फ़न उठाकर झपटा और उड़ चला बाहर की ओर। चिकोरा का मन्तर उस पर कोई अधिकार नहीं जमा सका ।

'अपनी खैर सनाओ उस्ताद ! साँप ने नुकसान नहीं पहुँचाया। नहीं तो कुचलने वाले को साँप कभी माफ नहीं करते... देवता था वह !' बोला छबीले ।

उस्ताद फेरई का साँप उड़ गया पता नहीं किधर, किन्तु दूसरे दिन लोगों ने अपनी पिटारियाँ खोलीं, देखा-सारे साँप मुर्दा थे।

लोगों को मालूम हुआ तो चिकोरा को कहने आये । चिकोरा ही तो था उस समय सरदार। लेकिन चिकोरा की झोपड़ी खाली थी। छबीले भो गाँव में नहीं था। सपेरे समझ गये कि यह करतूस चिकोरा की ही है। सभी के दिलों में चिकोरा के प्रति घृणा पैदा हो गई पर मन मसोस कर रह गये वे ।

और इधर ! चिकोरा और छबीले घनघोर जङ्गल के दैत्या-कार वृक्षों की छाया के नीचे नीचे बढ़े जा रहे थे पता नहीं कहाँ ? चिकोरा आगे था और छबीले पीछे । दोनों मौन थे, जङ्गल के सन्नाटे की तरह । दोनों अनजान दिशा की ओर बढ़ते जा रहे थे और जङ्गल की सघनता भी बढ़ती जा रही थी। साथ-साथ अँधेरा गाढ़ा होता जा रहा था। कँटीली झाड़ियों का समूह अधिक चुभने छगा था। जङ्गली लतायें पैरों में उलक्ष-उलझ कर अवरोध डाल रही थीं। कभी-कभी जली जन्तुओं का विचित्र-विचित्र स्वर जङ्गल की शान्ति भङ्ग कर देता था ।

मगर दोनों चल रहे थे। जैसे मौत का कोई भय ही न हो उन्हें । थोड़ी ही देर बाद भयानक जङ्गल में काली रोशनी छा गई।

रात आ गई किन्तु चिकोरा रुका नहीं और छबीले रुकना चाहकर भी उसका अनुसरण करता रहा। कुछ दूर चलने पर छबीले को मशाल की रोशनी दिखाई पड़ी। उसने सोचा, शायद कोई गाँव हो । उसने वहाँ रुकने का दृढ़ निश्चय कर लिया ।

तभी - आगे चलता चिकोरा चीख उठा। उसके ऊपर कोई चीज आ गिरी थी- ठण्डी-ठण्डी, बर्फ जैसी ।

छबीले लपका। उसके मुँह से चीख निकली । एक अजगर था, करीब अट्ठाइस फीट का विशाल - भयानक ।

स्तब्ध रह गया छबीले । अपने सँपेरा जीवन में उसने अब तक उतना भयानक अजगर नहीं देखा था ।

चिकोरा को कसे जा रहा था वह खूंख्वार अजगर । चिकोरा' अपने बचाव के लिए युद्ध कर रहा था। अपनी सारी शक्ति से लड़ रहा था अजगर से। किन्तु जसके हाथ में कोई अस्त्र महीं था। अपने हाथों और दाँतों से जानवर बनकर अजगर को काटने लगा वह । जब वह अजगर के ठण्डे शरीर में दाँत गड़ाता तो मिचली आने लगती उसे। विचित्र तरह का स्वाद था अजगर के माँस का। लेकिन इस वक्त तो अपनी रक्षा कर रहा था वह । मौत की चाह रखने वाला चिकोरा; जिन्दगी के लिए काल से लड़ रहा था, अजीब बात थी ।

लेकिन मौत से कब तक लड़ता कमजोर मानव ! दूसरे ही क्षण एक भयङ्कर फुत्कार अजगर के मुँह से निकली और उसके भयानक जबड़े में चिकोरा का सर चला गया। छबीले चीखकर सजग हो उठा। अपनी कमर से छुरा निकाल कर अजगर के शरीर पर वार करने लगा। साथ ही मन्त्र भी पढ़ने लगा किन्तु अजगर पर कोई असर नहीं हुआ छबीले के तेज छुरे और जन्तर-मन्तर का । चिकोरा को निगल ही गया वह ।

'उस्ताद !' छबीले चीख पड़ा ।

उसी समय । धायें की आवाज से जङ्गल का जर्रा-जर्रा काँप उठा । अजगर का शरीर लड़खड़ाकर जमीन पर सीधा हो गया ।

****

१५१

कहानी सुनकर काँप उठी चमकी। कितना दुखद अन्त था चिकोरा का। उसके मन में करुणा उत्पन्न हुई, किन्तु क्षणिक । चिकोरा ने ही तो उसकी

दुनिया उजाड़ी, तब वह क्यों बहाये उसके लिए आँसू ।

'उसके बाद राजा साहब मुझे अपने साथ ले आये इसके बाद की बात मालूम ही है तुझे ।' कहकर ठण्डी साँस की छबीले ने- 'तुम्हारे छैला का घर तुम्हें मिल गया। इससे बढ़कर सन्तोष और क्या होगा ?'

थोड़ी देर बाद चमकी उठकर भीतर चली गई। छबीले दरवाजे पर ही बैठा रहा। कुछ दूर पर मुंशीजी बहीखाता उलट रहे थे। चबूतरे पर बैठा महगू खेनी रगड़ रहा था ।

मुन्शी जी को ध्यायावस्थित देखकर महंगू को रश्क होने लगा। उठकर उनके समीप आया वह। मुन्शीजी की नाक के पास दोनों हाथ ले जाकर बजाया उसने ! खेनी की गैस भरी चूर्ण जब मुन्शी जी की नाम में घुसी तो दनादन छींकने लगे ।

'नालायक ? पाजी... आक्छौं- उल्लू का पट्ठा...समझे... कि आक्छी.... नहीं तुम्हें निकाल दूंगा... आ. आक्छौं ।'

महेंगू हाथ जोड़े मुन्शीजी की हर छींक पर मांफी मांगे जा रहा था और कहता जा रहा था- 'सरकार यह जेठवार की खैनी है.... बड़ी तेज... जरा चखकर तो देखो ।'

तभी भीतर से परोसन की चीख सुनाई पड़ी। सभी बद हवास-से भीतर दौड़े। देखा रचना फर्श पर छटपटा रही थी। मुँह से खून की कै हो गई थी। वो एक हाथ से कलेजा थामे थी वह और दूसरे से दाबे थी पेट। वफादार महँगू किसी के हुक्स के वगैर शहर दौड़ पड़ा डाक्टर बुलाने। उधर महेंगू

घोड़े से शहर की ओर जा रहा था और इधर एक सवार तेजी से हवेली के फाटक पर उतरा ।

कोई परेदार नहीं था। सभी लठेत पता नहीं कहाँ मर गये थे । मरे कहाँ थे बेचारे ? भीतर रचना की हालत पर आंसू बहा रहे थे।

१५२

सन्नाटा देखकर सवार चकित हुया । धड़धड़ाता अंदर घुस पड़ा, किसी की आज्ञा के वगैर। इधर-उधर देखता भीतर चला जा रहा था। किसी नये मोड़ पर घूमने के लिए सोचना नहीं पड़ता था उसे, जैसे घर की हर एक राह उससे परिचित हो ।

वह भी वहाँ पहुंचा जहाँ मुन्शीजी घबराये-से खड़े थे । परो-सन कुलदेवता को याद कर रही थी। छबीले और चमकी मौन थे और रचता थी फर्श पर बेहोश। उसका सर परोसन दादी की गोद में था। दो-चार लठेत हाथ बाँधे बाहर आज्ञा का इन्त-जार कर रहे थे। बाहर के लठैत आने वाले व्यक्ति को देखकर बगल हट गये । कमरे के भीतर चला गया आगन्तुक ।

'रचना' आनेवाला व्यक्ति चीखा- 'इसे क्या हुआ दादी !'-

'सजल बेटा... इसके पेट में साँप है...'

सजल ही था वह । सुनकर चौंक पड़ा। चमकी ओर छबीले ने भी सुता । सजल परेशान हो उठा। अभी-अभी वह सेदहाँ से अपना जीवन लेकर आया, लेकिन यहाँ उसे देखने को मिला मौत का मंजर में देखकर दुख

सागर में टूटे किनारे-सा भहरा पड़ा ।

दो घण्टे बाद आँधी की तरह आया महेंगू, डाक्टर को लेकर । दवा दी डाक्टर ने । चैतन्य हुई रचना। डाक्टर ने सारी बातें बताई सजल को । आपरेशन की भी सलाह दी ।

'आपरेशन हो या चाहे जो हो... सुझे रचना की जिन्दगी चाहिए... रुपये की चिन्ता आप न करें। लेकिन पेट में साँप गया कैसे, बड़ी अजीब बात है।' पशोपेश में पड़ा था सजल ।

'अन्धकार में पानी पीने से !'

'क्या मतलब ?'

'लोग अँधेरे में पानी पी लेते हैं... यह गाँव है, पानी कुएँ से आता होगा.... कभी-कभी कुएँ में साँप चला जाता है.... उसके अण्डे पानी में फूट जाते हैं.. उसके बच्चे पानी में तैरने लगते है. कोई पानी भरकर ले आया और पी गया बिना देखे... कुछ पता भी नहीं लगता है। 'भीतर जाकर वह बढ़ने लगता है-

बस ?' डाक्टर ने कहा ।

डाक्टर के जाने पर सजल व्यग्र होकर टहलता रहा, छबीले चिन्तित सजल के पास आकर खड़ा हो गया।
बोला- 'हुजूर ।'

'क्या है ?' चोंक पड़ा सजुल ।

'सरकार ! अगर आप हुक्म दें तो गरीब कुछ खिदमत करे... मैं संपेरा हूँ हजूर! साँप के हर रोग का ईलाज जानता हूँ... सेदहाँ के लोग साँप का जहर छूकर रफा कर सकते हैं। लेकिन पेट के सांप को छूकर निकाला नहीं जा सकता... सेदहाँ का देवी चमत्कार देखा सरकार ने, अब जादू-मन्तर का चमत्कार भी देखें। मैं रचना बहन के पेट का सांप निकाल सकता हूँ...'

छबीले को आज्ञा मिल गई। रचता अब तक शिथिल होकर पलंग पर पड़ी थी । छबीले ने सबको वहाँ से हटा दिया। स्वयं भी कमरे के बाहर चला आया ।

भीतर सिर्फ चमकी, रचना को अपनी गोद में लेकर जमीर पर बैठ गई ! रचना के शरीर से कपड़े का आवरण हटा दिया गया । आपस में सटी जाघों को अलग कर दिया गया ।

कमरे में आग जलाई गई। मयूर-पंख के धुएँ से सारा कमरा महक गया । रचना और चमकी बेमौसम के बादलों में खो गई।

बाहर छबीले की आँखें बन्द हो गयीं। उसके होंठ कुछ बुदबुदाने लगे। उसका दाहिना हाथ जमीन पर साँप की टेढ़ी मेढ़ी चाल से आगे-पीछे चलने लगा। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह जमीन से धूल उठाकर मुँह से फूंक सार कमरे की ओर देखता।

संपेरे की कला स्तब्ध होकर सभी देख रहे थे और किसी बात का इन्तजार कर रहे थे। रचना भीतर से कभी-कभी कराह उठत्ती थी। सजल बेचैनी से पहलकदमी करने में मशगुल था। करीब एक घण्टे तक यही क्रिया चलती रही उसके बाद कोई चीज कमरे से रेंगती हुई छबीले के पास आकर रुक गई ?

लोगों ने देखा करीब एक फीट लम्बा साँप था, दुबला पतला। सभी चकित थे और प्रसन्न भी।

१५४

दूसरे दिन सभी शोक-मुक्त होकर विहँस रहे थे ।

छबीले ने कहा- 'सरकार ! अब मुझे हुक्म दिया जाय.... देश लोट आऊँ मैं। मरने चला था हजूर ! लेकिन सभी को जिन्दा देख, अपनी भी तबीयत जिन्दगी पर ही आ गई।'

'छबीले भैया ! क्या कहते हो तुम ! गाँव जा रहे हो सचमुच । लोग मार डालेंगे तुम्हें सभी गुस्से में हैं...' किसी के बोलने के पूर्व चमकी बोल उठी ।

रचना ने भी हां में हां मिलाई ।

'मुझे सिर्फ मौत मार सकती है चमकी ! इन्सान की इतनी हस्ती कहां....' कहा छबीले ने 'बूढ़ी मां मेरे बगैर मर जायगी हजुर !... चमकी की खुशी देखकर घर जाने की तमन्ना हो गई है... चमकी मेरी बहन है सरकार ! और यह घर चमकी का है... बहन के घर में भाई का रहना नामुमकिन...

मुझे माफ करें। दया बनाये रखें केवल...अब तो रिश्ता कायम हो गया है। आना-जाना तो लगा ही रहेगा। यह तो दुनिया का पुराना रिवाज है।'

आखिर हठी छबीले ने अपनी जिद्द पूरी की। जाते वक्त सजल जब छबीले को काफी रुपया देने लगा तो इनकार कर गया वह । बोला- 'दौलत की भूख मुझे नहीं बाबू ! आपने मुझे 'जिन्दगी दी है। जिन्दगी से बढ़कर एक चीज और भी दी -बह है मुहब्बत ! मुहब्बत के आगे दुनिया की हर एक चीज नाचीज होती है राजा साहब ।'

चमकी के आग्रह पर एक रोज और रुक गया छचीले । दूसरे दिन जाने लया तो रो पड़ी चमकी। बोली- 'सबसे मेरा कुशल-छेम कह देना भैया , जरा सेदहां आकर मोहन के बाबा से भी मिल लेना... अगर उसके बाबा ने नदी में से मुझे नहीं निकाला होता तो चमकी इस दुनिया में नहीं होती... कभी-कभी आना नहीं भूलना....'

छबीले चल पड़ा । चमकी रो उठी। रचना का दिल भी सहानुभूति से भर गया । छबीले उसके जीवन का रक्षक जो था ।

****

कविता चुपचाप सूखे पेड़ के ठूंठ की सेवा कर रही है। देखना चाहती है कि कब उसमें वरदान के फल निकलते हैं।

रानी साहिबा दिन-रात भगवान के आगे अपनी बूढ़ी झोली फैलाये रहती हैं-'नये घर की दीवार मत गिरा भगवान !' उनकी प्रार्थना है- 'उजड़े घर पर

ही हाथ फैला दे... मुझे फिर से बीमार कर दे मेरे बेटे की जान लेने के पहले मेरी जिन्दगी का गला घोंट दे तू !... तेरा इन्साफ मेरे आंचल में धब्बा लगा देगा... दुनिया कहेगी- सौतेली मां अपने बेटे को खा गई !'

भगवान तो आसमान में रहता है, जहां इन्साफ की आवाज पहुंचते-पहुँचते बिखर जाती है। आसमान छोड़कर जमीन पर आता है भगवान तो पत्थर बन जाता है.... और पत्थर के दिल में स्पन्दन कहां, जो इन्सान के दर्द का अन्दाजा लगा सके। कितनी बड़ी मजबूरी है यह।

आज तो अचल की हालत कल से अधिक खराब है। उसका पागलपन तेजी से बढ़ता जा रहा है। चांदनी रात के ज्वार-भाटे की तरह कभी बड़बड़ाता है तो कभी चुप हो जाता है। उसकी जबान सिर्फ मैना की रट लगाती रहती है।

बड़े पशोपेश में पड़ जाती है कविता ! कहां से लाये वह मैना को। बेचारी दिल में आग, आंखों में अन्धकार और जिन्दगी में मौत लिए बैठी है। वह अपने विक्षिप्त पति को सान्त्वना देती है; धीरज बंधाती है, मैना को लाने का झूठा वादा भी करती है, तब जाकर कुछ शान्त होता है कुवर। लेकिन वह बच्चा नहीं, जो झूठ भी न पहचान सके। थोड़ी देर बाद फिर मैना-मैना चिल्लाने लगता है।

कहता है- 'सरकार ! आप मुझे छोड़ दें... मैना सिर्फ मेरी आवाज पर आ सकती है... आपका इशारा उसके लिए कुछ नहीं... और इस कैद से मेरी आवाज उसके कानों तक नहीं पहुँच पाती....'

कविता सुनकर चुप रह जाती है। कैसे छोड़ दे वह ? किसके सहारे छोड़ दे

? और अचल ! कभी उसका पाँव पकड़ता है, कभी

माफी मांगता है और कभी मैना की याचना करता है। लेकिन डाक्टर दास दवा और इन्जेक्शन लगा देते हैं, उसकी हालत सुधर जाती है कुछ... और तब कुछ-कुछ सबको पहचानने लगता है, किन्तु मैना को भूलता नहीं फिर भी ।

अचल की तबीयत खराब देखकर कविता ने चंचल को बुलाने के लिए सेदहां आदमी भेज दिया है और बारिस को भेज दिया है डाक्टर दास को बुलाने। थोड़ी देर बाद डाक्टर दास आये । उन्होंने अचल का परीक्षण किया ओर गम्भीर हो उठे ।

मेरा अनुमान ठीक निकला ।'

'क्या डाक्टर साहब !' कविता ने व्यग्र होकर पूछा ।

'जी, कुछ नहीं... इसका 'ब्लड' टेस्ट करना होगा ।' डाक्टर साहब कुछ छिपाते हुए बोले और अचल के बदन से खून लेकर चले गये ।

****

चन्चल सेदहां से आ गया है। रानी मां कुवर की चिन्ता मन में लादे अपने पलंग पर पड़ी हैं। बेचारी अचल के पास हमेशा रहना चाहकर भी नहीं रह पाती। कुंवर की हालत देखकर रोने लगती हैं वे । ललित फर्श पर खेल रहा है और रानी साहिवा गम्भीर चिन्ता में पड़ी हैं, जिससे उनके चेहरे की

झुरियां स्पष्ट हो गई हैं। बूढ़ी आंखें लाल होकर सूज गई हैं।

किसी खटके के साथ चौंक पड़ी वे। आंखें उठाकर देखा तो सापने चञ्चल खड़ा सिका ।

"क्या सोच रही हो मां !' चंचल ने पूछा ।

'एक बात हो तो कहूँ यहां तो भण्डार पड़ा है सोचने के किए... सेदहां का समाचार बता कुछ... आ बैठ नऽ !' वे उदास चन्चल को अपनी वाणी द्वारा समझाना चाहती थीं ।

लेकिन चन्चल क्यों बदलने लगा, कोई बच्चा तो या नहीं।

'एक बात है माँ !....' बैठता हुआ बोला चंचल ।

'क्या ?' चौंक पड़ी रांची यो।

'डाक्टर साहब कहते हैं...'

'क्या कहते हैं, जल्दी बोल ।' रानी साहिबा व्यग्र हो उठीं ।

'यही कि भैया के खून में सांप का जहर है बहुत दिनों से, शायद मैना ने सारा विष नहीं चूसा था। विष मस्तिष्क पर चढ़ गया है' कहा चञ्चल ने ।

'तो अब क्या होगा रे चंचल !... कोई उपाय कर, दौलत पानी की तरह

बहाकर बचा ले अचल को।' रानी साहिबा बोली- 'हां देख; बहू को यह बात अभी मत बताना.... सुनकर क्या गुजरेगी उस पर.... गला नहीं दबा लेगी ?'

'मुझे पहले से मालूम है.....' कहती हुई कविता भीतर चची आई।

रानी साहिबा ने चकित होकर देखा कविता के गम्भीर चेहरे की ओर । उसकी उस गम्भीरता के पीछे कितना भयानक तूफान उठ रहा था, यह तो रानी थां ही समझ सकती थीं। कविता शान्त थी और उसको पलकें झुकीं। आंखों के आसमान में वेदना के बादल घिरे थे, लेकिन पानी नहीं बरस रहा था, सिर्फ बिजलियां ही चमक रही थीं।

'माता जी आप चिन्ता न करें !... कविता का दिल इतमा कमजोर नहीं... वे तो मैना की अमानत हैं, जब तक मेरे पास रहेंगे तब तक अपना जीवन देकर सेवा करूंगी हो... जाना चाहेंगे तो रोकने की शक्ति मुझमें नहीं... चांदनी चार दिन की होती है मां, सपना समझ कर भूल जाऊभी उन्हें !... मौत का सबेरा होनेवाला है माताजी' कहते-कहते कविता के गले में करुणा आ बैठी तो चुप हो गई वह ।

'मेरी बच्ची । मेरी बहू !' कहकर रानी साहिबा ने कविता को छाती से लगा लिया- 'तू निराश न हो बहू !... अचल की जिन्दगी के लिए इस महल का खजाना लुटा दूंगी....'

'बेकार है माँ, राही अपना सफर काफी तय कर चुका है, मञ्जिल के पास पहुँच गया है वह। दौलत जिन्दगी की दवा बन सकती है, मौत की नहीं...' थोड़ी देर रुककर बोली- 'अच्छा

.....दवा पिलानी है- समय हो गया है... मुश्वसे जो हो है कर रही हूँ... आप लोग भी कर गुजरिए ।'

कहकर कविता भारी घन, भरा दिल कोर भरी आँखें लिए। बाहर चली गई। रानी साहिबा कविता की सहनशीलता देखकर चकित रह गयी। नारी की सहिष्णुता की पराकाष्ठा थी वह ।

'मां ।' चञ्चल ने टोंका- 'भैया को सेदहाँ ले चलो'।

"क्यों ?'

भैया के रोग का ईलाज है वहीं, तुमको बताया नहीं मैंने; अजीब गाँव है।' कहने लगा चञ्चल और सुनने लगी रानी साहिबा ।

चन्चल ने वहाँ के दैवी चमत्कार की बात कही तो दङ्ग रह पई रानी माँ, बोलीं- इतने दिन हो गये, यह बात मेरे कानों में क्यों नहीं पड़ीं ।'

'आवश्यकता पड़ने पर ही किसी वस्तु की खोज होती है....'

'मैं ले चलूंगी.... जहाँ ठीक हो सके, वहीं ले चलूंगी !'

इधर सेदहाँ जाने की तैयारी हो गई और उधर अचल बीमारी में बेहोश कभी अपना सर धुनता है तो कभी दातों तले उबली दबाकर काटने लगता है। वारिस और कविता उसे संभालते हैं। बारिस जब अपने मालिक के

साथ जबरदस्ती करने लगता है तो उसका दिल भर उठता है।

*मुझे बाहर ले चलो... मेरा जी घबड़ा रहा है.... मैना! मैं घर जाऊंगा सरकार ! मेरी जान लेने से क्या मिलेगा ?...आप धनी हैं... आप पर बहुत लोग जान बिछायेंगे... मैं गरीब परदेसी हूँ, मुझे माफ करें।' हाँफ-हाँफ कर कह रहा था कुंवर- 'मुझे बाहर ले चलो।'

'डाक्टर साहब ने मना किया है हजूर !'

'भाई, मैं हजूर नहीं, गरीब परदेसी हूँ मुझे बाहर पहुँचा दो, भगवान भला करेगा तुम्हारा...' गिड़गिड़ा कर अचल ने वारिस का पैर पकड़ छिया ।

१५९

"ले चलो वारिस ' कविता ने शान्त स्वर में कहा ।

अचल को लेकर वारिस और कविता बाहर आये । अचल मैना के स्मारक के आगे बैठ गया। उसे राहत मिली। उसकी विह्वल पुतलियाँ स्मारक को देखते-देखते थक गई तो सर पटकने लगा । दौड़कर वारिस ने पकड़ लिया कुंवर को। अचल के सर पर नया घाव हो गया। खून देखकर घबड़ा उठा वारिस ।

उसके मुख से निकला- 'या खुदा । क्या गजब करता है तू!'

भीतर लाकर पलङ्ग पर लिटाया गया कुवर को। डाक्टर आया तो बेहोश अचल होश में आ आया। कविता आंखों में उजड़ा संसार लिए खड़ी थी। रानी साहिबा बदहवास थीं ।

अचल होश में थाया तो उसकी आँखें खुलने उगी । धीरे धोरे पलकों के बीच की दूरी बढ़ने लगी। कविता ने देखा -अचल की आंखों में उद्‌भ्रांत हृदय की छाया थी। उसका दिल घड़का, लेकिन हिमालय की दृढ़ता लिए मौन ही रही।

मैना !' अचल ने इधर-उधर देखकर पुकारा ।

मगर कौन जवाब दे। कविता ही बोली- 'कहिए !'

अचल ने गौर से कविता की ओर विहारा। बोला- 'आप, आप मैना नहीं है हजुर । इस जन्म में आप नहीं हो सकतीं... मुझे मेरी मैना दीजिए, गरीब को लूटकर क्या मिलेगा आपको?'

कविता ने कलेजा थाम लिया सुनकर। उसकी आँखों की राह दिल के टुकड़े मचलने के लिए तैयार थे, किन्तु कविता रोई नहीं। बेवफाओं के लिए आँसु बहाना कहाँ तक ठीक है।

अचळ कहता रहा - 'मुझे मत सत्तायें सरकार ! मैना मर जायगी मेरे बिना... सुना आपने? पुकार रही है वह... अभी आया मैवा ! मुझे जाने दीजिए हजुर !' उठकर खड़ा होने लगा। वह ।
डाक्टर दास और वारिस ने उसे पकड़ लिया । छटपटाकर रह गया बेबस परदेसी !

वारिस अचल की अब तक की हालत देख कर पागल हो उठा। वह बोला- 'या खुवा . कैसा इन्साफ किया तूने !.... मेरे बालिक ! जिन्दगी नहीं दे

सकता तो मौत भी मत दे ।'

१६०

'अब क्या होगा डाक्टर साहब !' रानी साहिबा की आवाज नहीं मालूम पड़ती थो, लग रहा था जैसे किसी मुर्दे के मुख से निकल रहा हो वह स्वर ।

'कुवर साहब के दिमाग पर जहर चढ़ गया है। याददाश्त खो बैठे हैं। इनके मन के खिलाफ कुछ मत कीजिए।' बोले डाक्टर ।

सभी बेचैन हो उठे। किन्तु कुवर परदेसी वैसा ही रहा । एक बार अचल पागल होकर लाया था तो मैना ने ठीक कर किया था उसे । आज पागल हो गया है तो कोई तिनके का सहारा भी नहीं।

कविता के जीवन का आलोक लुप्त होता जा रहा था। कितनी विवश हो उठी थी वह। कुवर के पास जाती है तो वह हजुर सरकार, कहकर मैना की भीख मांगने लगता है।

****

आज अचल को सेदहाँ ले जाने की तैयारी हो गई ! मोटर साफ हो जाय बस । कविता अचल को समझा रही है। पास में ललित भी है। नासमाझ ललित नहीं समझ पा रहा है कि आखिर क्यों उसके पिताजी को मां इतमा समझा रही है ? क्यों उसके पिता उसकी माँ का पैर पकड़ने को तैयार हो रहे हैं? चकिता श्चर्य मुद्रा धारण किए देख रहा था वह ।

"हजूर आपके पैर पड़ता हूँ मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता.... मुझे जाने दीजिए मैना के पास... आप बड़ी जिद्दी हैं सरकार... कुंवरानी साहिबा ! कहीं ऐसा न हो कि जो इज्जत अमीरों के लिए इस गरीब के दिल में है , खो जाय....'

'सरकार !... मोटर तैयार हो गई.... कुवर साहब को ले चलिए ?' वारिस ने आकर कहा ।

'चलिए मेरे साथ ।' कविता ने कहा ।

सुनकर विभोर हो उठा कुवर । खुशी से नाच ष्ठा उसका मन । बोला- 'आप तकलीफ न करें हजूर। मैं चला जाऊंगा मैना को खोजकर फिर मिलूंगा आपसे...'

'चलिए; मैना को मैंने खोज लिया है... उसी के पास तो ले चल रही हूँ।' कलेजे पर पत्थर रखकर बोली कविता ।

अचल घूम पड़ा चलने के लिए, तभी फाटक से शोर-गुल सुनाई पड़ा 'परदेसी ।' कोई तेज आवाज में चिल्लाया ।

लोगों ने देखा - एक भयानक संपेरा पागल-सा खड़ा था फाटक पर । बड़ी-बड़ी लाल-लाल आँखों से लपटें निकल रही थीं। वह अचल को घूर रहा था ।

'हा-हा-हा... !... पहचान लिया तूने... मैं... आ... गया... तेरा...ग... गला...?' लड़खड़ाती आवाज थी टिकोरा की ।

अचल के पाप पहुंचते-पहुँचते छोटी पहाड़ी-सा भयानक संपेरा गिर पड़ा जमीन पर। परदेसी का गला पकड़ने के लिए उसके हाथ छटपटाते रहे। मणिधर साँप का जहर उसके भीतर मौत की जलन पैदा कर चुका था। उसकी चलती साँस बन्द होना चाहती थी ।

परदेसी बाबू! आज... तुझे दुनि... या...से.. उठा.... ने.... आयाया म मगर अफसोस !... टिकोरा... को...तू... ने... फिर... हरा... दिया आज हमेशा... के... लिए...' कहकर उसने अपनी साँस संभाली, फिर कहता गया-'टिकोरा ने दुश्मन... को माफ... करना नहीं... सीखा... मरकर.. मी तेरी... जान लूँगा -मेरी रूह.. तु... झे तड़पा... कर.... मार... डालेगी... समझे... रहना मैं... टिकोरा ... हूँ मैना मै...ना. ,

हवा का एक तेज झोंका आया और उसका सर जमीन पर लुढ़क गया । मुँह से झाग बह चली ।

'मैना ।' चीखकर अचल दौड़ पड़ा बाहर की ओर। टिकोरा को कुचलता हुआ। वारिस ने लपक कर कुवर को पकड़ लिया। उत्तेजित अचल ने वारिस के हाथ में दाँत गड़ा दिए ।

चीख पड़ा वारिस मगर छोड़ा नहीं उसने ।

'आओ परदेसी बाबू !.... मैना से मिला दूँ तुम्हें !' बोला वारिस और खींचते हुए मोटर पर जा बिठाया विक्षिप्त कुबर को। मोटर भागी जा रही थी। अचल विहवल नजरों से इधर-

उधर देखता चल रहा था। मोटर सुनसान शहर से दूर सड़क पर दौड़ रही थी। शहर की आबादी पीछे छूट चुकी थी । अब धूल से भरी देहाती सड़क का सफर आरम्भ हुवा ।

'शंकर, रोक दो मोटर!... देखो, सड़क पर सो रहा है कोई... खुदा कसम ! जान की कुछ भी परवाह नहीं है सोने वाले को ---चीख पड़ा वारिस !

शङ्कर ने हार्न दिया। मगर उठा नहीं सोने वाला । मोटर रुक गई। बारिस और चन्चल खींझकर चल पड़े सोये आदमी की ओर । सोये आदमी के नजदीक गया तो चौंक कर दो कदम पीछे हटा वारिस - 'या खुदा क्या गजब करना चाहता है तू ! -- क्या देख रही हैं वारिप्त की आँखें !' उसके मुँह से निकला 'देखिए हजुर ! वही है नऽ.... बिल्कुल वही है...'

सोये आदमी को देखकर चन्चल भी अचम्भित हो उठा । बोला- 'इसे उठाओ वारिस !'

वारिस ने सोये आदमी को उठा लिया। सोनेवाला हिला तक नहीं । कोई एतराज भी नहीं किया उसने। उसे लेकर वारिस सोटर के समीप आया। कविता ने देखा उस अजीब आदमी को तो चौंक पड़ी । और कुवर ! जब उसने देखा तो वह भी चौंक पड़ा। इतनी तेजी से उछला वह कि कविता सँभाल भी न सकी। दूसरे ही क्षण मोटर के बाहर था वह। तेजी से वारिस के हाथों से उस आदमी को छीन लिया उसने ।

'मैना !....' परदेसी उसे चूमने लगा ।

मैना ही थी वह । रास्ते में लाते समय पागल टिकोरा को यह भी पता नहीं लगा था कि उसकी पकड़ से मैना कब छूट गई। कुवर मैना को चूमता जा रहा था।

थोड़ी देर बाद आश्वस्त हुआ तो बोला- 'हजुर । आपका प्राण-लाख शुक्रिया !... मुझे मैना मिल गई आपको बहुत तकलीफ उठानी पड़ी मेरी वजह से। गरीब परदेसी आपका अहसान भूलेगा नहीं.... मैं यहाँ से बड़ी दूर चला जाऊँगा कि आप फिर मुझे भूल से पकड़ न सकें... मेरी मैना मेरे साथ है

सरकार !' कहता हुया पागल परदेसी मैना को अपनी गोद में छिए लड़खड़ाता भाग चला। कविता देखती रह गई ।

चंचल, 'भैया-भैया !!' चीखकर दौड़ा पकड़ने ।

कुवरानी सजग हो उठी। वह भी कहती हुई दौड़ी---'वारिस संभालो उनको... देखो, गिर पड़े... उनका दिमाग ठीक नहीं - जल्दी से चलो सेदहाँ... मैना को भी... हे भगवान ! मुझ अभागिन पर दया कर उन्हें और मैना को मेरी जिन्दगी दे... मैं उनकी मौत लेकर ही खुख हो जाऊँगी

लेकिन वारिस के पहुंचते के पहले, लड़खड़ा कर कमजोर परदेसी मैना को लिए-दिए कड्करीली सड़क पर गिर पड़ा। बेहोश प्रेमियों को मोटर में लादा गया। मोटर भाग चली सेदहाँ की ओर, न जाने कितने अधूरे अरमानों की धूल उड़ाती हुई ।

****

दौड़ती-हाँफती मोटर लाख-लाख अरमान लादे किसी तरह सेदहाँ पहुँची। बड़ी उम्मीद, बहुत उत्सुकता लिए सभी खेळावन बाबा के चौरे पर आये। कुवर के आने की खबर लहर की तरह गाँव में फैल गई। ठाकुर ध्रुवसिह भी आये। कुबर को कार से बाहर निकाला गया और साथ-साथ मैना को भी ।

दोनों प्रेमी बेहोश थे। चेहरे पर अजीब तरह का दर्द बिखरा था । बन्द पलकें मूक भाषा में कुछ कह रही थीं। किन्तु कौन सुनता था उनका सौन सन्देश ?

कविता का दिल अचल की स्थिरता देखकर धड़का । होंठ फड़के किन्तु बोली नहीं कुछ। कुँवर और मैना को चबूतरे पर रखा गया । दो बुजुर्ग उपचार के लिए ऊपर आये । भीड़ साँस रोककर फैसला सुनने के लिए आतुर-विकल हो उठी ।

तभी-भीड़ चीरता हुया बहां कोई आया । आगन्तुक चीख पड़ा- 'परदेसी... मैना !'

लोगों ने देखा - कोई जवान सँपेरा था। किन्तु टिकोरा की तरह खूंख्वार नहीं। वह मैना और परदेसी के पास जाने लगा तो वारिस ने पकड़ कर पीछे खींच लिया ।

गिड़गिड़ाने लया वह 'मैना हमारे उस्ताद की बेटी है सरकार !... और वह परदेसी ?... मुझे मिल तो लेने दो जरा...'

'अभी ठहरो भाई !' चंचल ने कहा ।

दोनों बुजुर्ग कुवर और मैना का परीक्षण कर रहे थे। कुंवर और मैना की आँखें भीतर धस गई थीं! नाड़ी पकड़ी तो गम्भीर हो उठे वे । दोनों उतर आये चबूतरे पर वे । बोले- 'हम जिन्दगी को जिन्दगी दे सकते हैं सरकार !.... मौत को जिन्दगी नहीं दे सकते

कविता ने सुना । उसके ऊपर हिमालय भहरा पड़ा, वह स्थिर रही। पैरों के नीचे की जमीन हिली, मगर कांपी नहीं वह । असमान फटा फिर भी निश्छल ही रही। उसके चेहरे की गम्भीरता बढ़ चली। धूल भरे चेहरे की उदासी गाड़ी हो गई और अचल आंखों में धूल झोंककर भाग गया ।

वारिस, चंचल वगैरह बदहवास हो उठे ।

'चलो चन्चल !...' कहते-कहते कविता के गले में आँसू अटक गये ।

चञ्चल ने अपनी भाभी को देखा - वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। कविता की उस गम्भीरता के पीछे कैसा तूफान उठ रहा था- यह बह जानता था। मोटर पर लाशें रख दी गयीं । पास खड़ा संपेरा चीखकर कविता के पैरों से लिपट गया ।

'सरकार ! मैना हमारे उस्ताद की बेटी है... इसे मुझे दे वीजिए... इसकी जरा भी खिदमत कर सका तो उस्ताद की रूह मुझे आशीर्वाद देगी.'

उसने देखा जवान संपेरा रो रहा था।

निराश कविता ने उसे निराश नहीं किया । इन्सान मरने के बाद निर्मोही हो सकता है, किन्तु जीते-जी नहीं ।

बह संपेरा था छबीले। उसने मैना को गोद में उठा लिया । कविता ने आदर के साथ मैना के पैर छुए। उसके अरमान पूरे होकर भी अधूरे रह गये ।

मोटर बढ़ चली अपनी धीमी चाल से। सबकी चाल तो अचल लेकर सो गया था, महानिद्रा की गोद में।

मोटर पर सवार थे सभी । वारिस परदेसी कुवर को सँभाले था । कुँवर का सर कविता की जांघों पर था। चन्चल अपनी विक्षिप्त भाभी को सान्त्वना दे रहा था और भरी-भरी आँखों से देख रहा था, अपने मृत भाई की ओर... और कबिता !

उसके चेहरे पर मौत की-सी खामोशी छाई थी। नारी की सहन शक्ति की सीमा थी। दिल में वेदना का सागर लहराता जा रहा था मगर आँखों में आंसू का एक कतरा भी नहीं... आह !

उस निर्जन प्रान्त की धरती गा रही थी और आसमान सुन रहा था, यह दर्द भरा एकान्त संगीत-

झीनी चुर्ताख्या कऽ भीजेला अँचरा,
आंसू से बहे राम नैना कऽ कजरा ।
दिल कऽ दरदिया नहीं कोई जाने;

छैला डाले गलबहियाँ...
रे बेदरदी सइयाँ !

शाम हो गई, सूरज डूब गया। पश्चिम से घने अंधेरे का भयानक तूफान उठने लगा। मोटर दूर निकल चुकी थी, किन्तु घरती जैसे अब भी सिसक-सिसक कर गा रही थी। कोई सुने या न सुने, लेकिन उदास आसमान में व्यथा का विष अब भी घुल रहा था।

नीचे उठत रे लपट अगिन की
ऊपर बादर की छड्याँ...
रे बेदस्दी सइयाँ !

उधर । छबीले मैना की लाश संभाले छोटी पहाड़ी की ओर बढ़ता जा रहा था ।

मौत जिन्दगी का सहारा लिए थी और जिन्दगी मौत का । मञ्जिल पर पहुँचने के बाद भी सफर जारी था । सफर !

उफ़!

***** समाप्त *****

sjeet

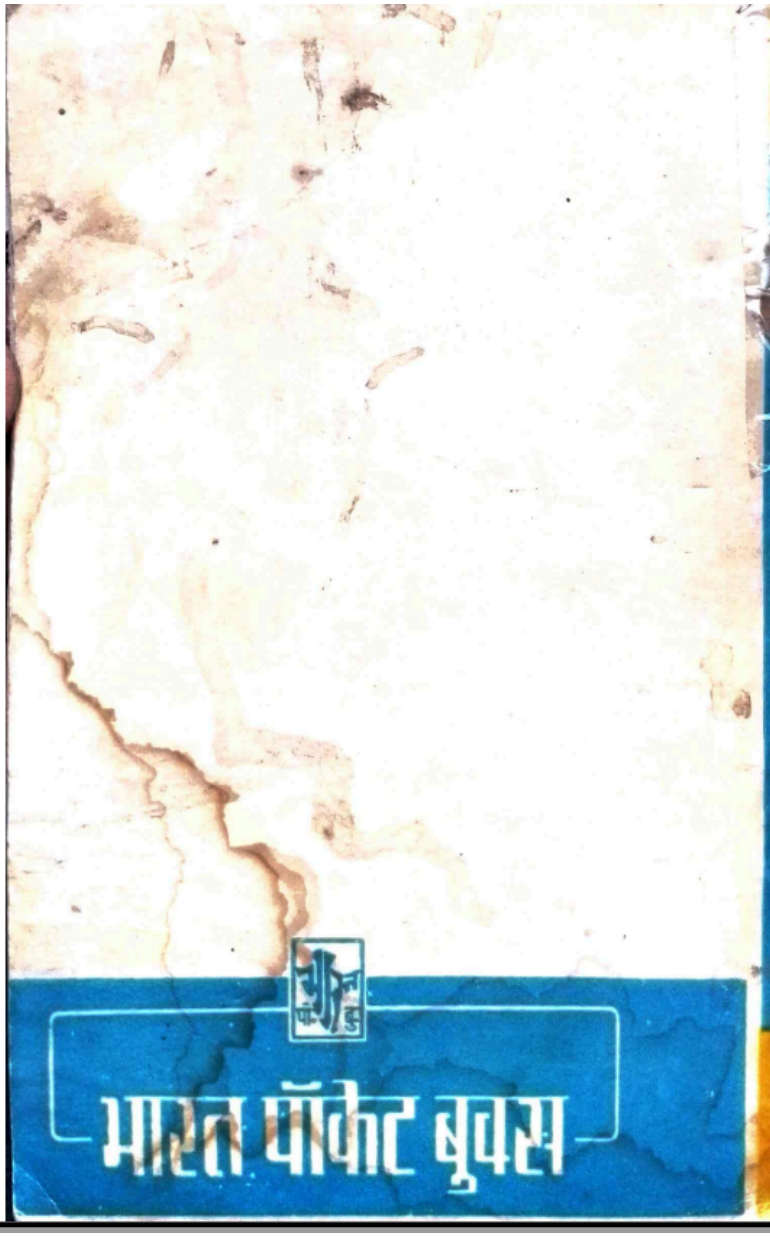
भारत पॉकेट बुक्स